30.00

मरयम

रसूल स० की माँ

इतनी बड़ी नेमत

बाप-बेटा

शादी और फ़ैमिली

सर का दर्द

औरतों का सोशल स्टेटस

हमारे जिस्म के अंदर अल्लाह की निशानियाँ

बच्चा ना समझ क्यों पैदा होता है?

मेरी माँ

आज़ादी

फ़रवरी 2011

30.00
मरयम
परवरिश स्पेशल
अगर आपको 'मरयम' पसंद है तो....
इसे अपने रिश्तेदारों, साथियों और दोस्तों के बीच फैलाने में हमारी मदद कीजिए!
SUBSCRIPTION CHARGES WITHIN INDIA
1 year 12 issues 320/-
2 years 24 issues 600/-
3 years 36 issues 850/-
CONTACT NO.
+91-522-4009558
+91 9892 39 3414, 9936 65 3509
maryammonthly@gmail.com
LUCKNOW-INDIA

जार्ज बरनाड शाहः

मुहम्मद (स.) को इन्सानियत को निजात देने वाला कहना चाहिए। मुझे यक़ीन है कि अगर कोई उनके जैसा इंसान आज के इस मार्डन समाज में हुकूमत करता होता तो दुनिया की मुश्किलों और मसलों को हल करने के लिए सुलोह, दोस्ती और बातचीत को आगे लेकर आता। आप इस ज़मीन पर क़दम रखने वाली सबसे बड़ी शख़्सियत गुज़रे हैं। आपने दीन की तरफ़ दावत दी, एक बहुत बड़े कल्चर और तहज़ीब की बुनियाद डाली, एक पूरी क़ौम को सर उठाके जीने का सलीक़ा सिखाया, लोगों में अच्छे कैरेक्टर और अख़लाक़ के बीज बोए और साथ ही साथ दुनिया में इल्म की रोशनी हर तरफ़ फैलाई। आपने एक बहुत मज़बूत और ज़बरदस्त समाज बनाया था ताकि आपकी बताई हुई बातों को लोगों के बीच पहुंचाया जा सके और इस तरह आपने इंसान की सोच और जिंदगी जीने के तरीक़े को हमेशा-हमेशा के लिए पूरी तरह बदल दिया। आपने सन् 570 ई0 में अरब में आंखें खोली थीं। दीने हक़ की तरफ़ अपनी रिसालत की शुरूआत 40 साल के बाद की थी और 63वें साल में इस दुनिया को ख़ुदा हाफ़िज़ कह दिया था। इस 23 साल के आपकी रिसालत के इस छोटे से पीरियड में आपने ख़ुदा की इबादत की तरफ़ लोगों को बुलाया, समाज को जंगों और क़बीलों के आपसी झगड़ों से बचाने के लिए ख़ूब-ख़ूब कोशिशें कीं जिसमें कामयाब भी हुए और लोगों को साथ-साथ और मिल-जुल कर रहने पर तैयार किया। इन 23 सालों में लोगों को शराब-कबाब की ज़िंदगी से निकाल कर एक अच्छी ज़िंदगी की तरफ़, लाक़ानूनियत से निकाल कर एक सिस्टम की तरफ़ और बर्बादी से बचा कर इंसानियत के सबसे उंचे मुक़ाम पर बिठा दिया। इंसानी हिस्टरी ने रसूल से पहले या उनके बाद किसी भी आदमी या किसी भी जगह इतना बड़ा बदलाव नहीं देखा है...

February
2011

Monthly Magazine

मरयम

MARYAM

A Socio-Cultural & Religious Monthly Magazine

Chief Editor
M. Hasan Naqvi

Editorial Board
M. Fayyaz Baqir
Akhtar Abbas Jaun
Qamar Mehdi
Ali Zafar Zaidi

Managing Editor
Abbas Asghar Shabrez

Executive Editor
Fasahat Husain

Assist. Exec. Editor
M. Aqeel Zaidi

Contributors
Imtiyaz Abbas Rizwan
Abid Raza Noashad
Azmi Rizvi
Fatima

Graphic Designer
Siraj Abidi
9839099435

Typist
S. Sufyan Ahmad

इस महीने आप पढ़ेंगी...

मेरी माँ	40
शादी और फ़ैमिली	28
रसूल की माँः जनाबे आमिना अ०	8
धाखा ही धोखा	22
इतनी बड़ी नेमत	41
बच्चा नासमझ क्यों पैदा होता है?	10
शाबाश! ऐलिया	19
माँ की ज़िम्मेदारियाँ	37
आज़ादी	5
औरतों का सोशल स्टेटस	24
Genes का असर	39
एजुकेटेड तबक़े की अहमियत	14
दुआ, उम्मीद, मंज़िल	36
बाप-बेटा	30
सर का दर्द	16
अल्लाह की मख़लूक़	13
हमारे जिस्म के अंदर अल्लाह की निशानियाँ	20
औरत	34

मेहरबान ख़ुदा के नाम से

रबीउल अव्वल वह महीना है जिसमें हमारे आख़िरी नबी हज़रत मुहम्मदे मुस्तफ़ा अ० और आपके फ़रज़न्द इमाम जाफ़र सादिक़ अ० की मुबारक विलादत है, वह नबी जो इस दुनिया में रहमत बनाकर भेजे गए थे, जिनके आने के बाद इस्लामी शरीअत मुकम्मल हो गई थी। दुनिया को एक ख़ुदा के सामने सर झुकाने का सलीक़ा आ गया था, बेसहारों को सहारा मिल गया था, दर्दमंदों को दर्द बांटने वाला मिल गया था, मज़लूमों को उनका हमदर्द मिल गया था, दम तोड़ती हुई इंसानियत को मसीहा मिल गया था, मर्दों की चक्की में पिसी हुई औरत को आज़ादी और उसके हक़ मिल गए थे....जिस वक़्त आप पैदा हुए सारी काएनात आपके नूर से मुनव्वर हो गई थी...और काएनात का ज़र्रा-ज़र्रा कह रहा था 'ला इला-ह इल लल्लाह'...

रसूल अ० इस दुनिया में आए और इस तरह आए कि हमारे लिए एक उम्मीद और आज़ादी का पैग़ाम भी लेकर आए...ऐसी आज़ादी जिसमें अगर कोई मालिक है तो बस ख़ुदा...उसके अलावा सब बन्दे हैं, सब बराबर हैं, न कोई आक़ा-न कोई ग़ुलाम। यही तो अल्लामा इक़बाल ने कहा थाः

एक ही सफ़ में खड़े हो गए महमूदो अयाज़
न कोई बन्दा रहा, न कोई बन्दा नवाज़

हम इस मुबारक और मुक़द्दस दिन के मौक़ पर आप सब को दिली मुबारकबाद पेश करते हैं। ख़ुदा से दुआ है कि वह हमें रसूल अ० और आले रसूल अ० के बताए रास्ते पर चलने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए...

'मरयम' में छपे सभी लेखों पर संपादक की रज़ामंदी हो, यह ज़रूरी नही है।
'मरयम' में छपे किसी भी लेख पर आपत्ति होने पर उसके खिलाफ़ कारवाई सिर्फ़ लखनऊ कोर्ट में होगी और 'मरयम' में छपे लेख और तस्वीरें 'मरयम' की प्रॉपर्टी हैं।
इसका कोई भी लेख, लेख का अंश या तस्वीरें छापने से पहले 'मरयम' से लिखित इजाज़त लेना ज़रूरी है। 'मरयम' में छपे किसी भी कंटेंट के बारे में पूछताछ या किसी भी तरह की कारवाई प्रकाशन तिथी से 3 महीने के अंदर की जा सकती है। उसके बाद किसी भी तरह की पूछताछ और कारवाई पर हम जवाब देने के लिए मजबूर नहीं हैं।
संपादक 'मरयम' के लिए आने वाले कंटेंट्स मे ज़रुरत के हिसाब से तबदीली कर सकता है।

Printer & publisher Nazar Abbas Rizvi printed at Imagine Grafix, 4-Valmiki Marg,Lalbagh, Lucknow and published from 234/22 Thawai Tola, Victoria Street, Chowk, Lucknow 226003 UP-India

Contact No.: +91-522-4009558, 9956620017, 9936653509
email: maryammonthly@gmail.com

आज़ादी

■ शहीद मुर्तज़ा मुतह्हरी

जानदारों की परवरिश और उनके फलने-फूलने के लिए तीन चीज़ें ज़रूरी हैं: तरबियत, हिफ़ाज़त और आज़ादी।

तरबियत से हमारा मतलब वह तमाम फ़ैक्टर हैं जिनकी एक जानदार को ज़िंदा रहने और आगे बढ़ने के लिए ज़रूरत होती है, जैसे हैवानों और दूसरी चीज़ों के बढ़ने के लिए मिट्टी, पानी, हवा और खाना वग़ैरा।

हिफ़ाज़त से मुराद उन चीज़ों की हिफ़ाज़त है जो उसके कंट्रोल में हैं ताकि कोई बाहरी ताक़त वह चीज़ उस से छीन न ले जैसे इंसान को ज़िंदगी मिली है तो कोई उस से छीन न ले, सेहत को नुक़सान न पहुँचा दे, दौलत न हथिया ले वग़ैरा।

हर जानदार के लिए तीसरी ज़रूरी चीज़ आज़ादी है यानी उसकी फलने-फूलने और तरक़्क़ी के रास्ते में कोई रुकावट खड़ी न हो। एक पौधे को पेड़ बनाने के लिए खुली हवा ज़रूरी है। अगर उसे एक छत के नीचे बोया जाए तो उसके बढ़ने की उम्मीद बाक़ी नहीं रहेगी।

इसलिए आज़ाद इंसान वह होते हैं जो अपनी तरक़्क़ी और आगे बढ़ने में आने वाली रुकावटों का मुक़ाबला करते हैं, उनके सामने घुटने नहीं टेकते।

आज़ादी की क़िस्में

इंसान एक ख़ास तरह का जानदार है। वह एक समाजी ज़िंदगी गुज़ारता है और अपनी ज़ाती ज़िंदगी में भी एक डेवेलप्ड मख़लूक़ है। इसलिए इंसान को पेड़-पौधों और जानवरों से बढ़कर एक और आज़ादी की ज़रूरत है, जिसकी हम दो क़िस्में बयान करते हैं।

(1) समाजी आज़ादी

इंसान को समाज में दूसरे लोगों की तरफ़ से आज़ादी हासिल हो ताकि दूसरे उसके आगे बढ़ने और तरक़्क़ी के रास्ते में रुकावट न बनें, उसके कामों में परेशानियाँ न खड़ी करें, दूसरे उसके तुफ़ैली बनकर उसके ख़ून से अपनी ज़िंदगी को रंगीन न करें, उसे अपना ग़ुलाम न बना डालें। यानी उसकी फ़िक्री और जिस्मानी ताक़तों को सिर्फ़ अपने फ़ाएदे के लिए इस्तेमाल न करें।

इंसानी हिस्ट्री में इंसानों की एक मुश्किल यही रही है कि कभी किसी एक आदमी ने किसी दूसरे आदमी का और कभी एक क़ौम ने दूसरी क़ौम का गला घूंटा है या कम से कम अपना रास्ता साफ़ रखने के लिए दूसरे के रास्ते में कांटे बिछा दिए हैं। मान लीजिए, ज़मीन का कोई टुकड़ा दो लोगों की मिलकियत हो। फिर उनमें से जो ताक़तवर हो वह अपने हिस्से को बढ़ाने के लिए दूसरे की ज़मीन पर क़ब्ज़ा कर ले और उसे निकाल बाहर करे या ज़मीन समेत दूसरे को अपना ग़ुलाम बना ले।

क़ुरआन के मुताबिक़ नबियों का एक मक़सद ये भी था कि इंसानों को समाजी आज़ादी का तोहफ़ा दें यानी इंसानों को एक दूसरे की क़ैद, बंदगी और ग़ुलामी से निजात दें। आज़ादी का नारा लगाने वाले किसी फ़लसफ़ी ने कभी भी ऐसी जोशीली बात नहीं कही है जैसी क़ुरआने करीम ने कही है, **"आप कह दीजिए कि ऐ किताब वालो! आओ एक इंसाफ़ भरे कलमे पर इत्तेफ़ाक़ कर लें कि ख़ुदा के सिवा किसी की इबादत न करेंगे, किसी को उसका शरीक न बनाएंगे, आपस में एक दूसरे को ख़ुदा का दर्जा न देंगे।"**

क़ुरआन सभी आसमानी मज़हब वालों को एक प्लेटफ़ार्म पर आने की दावत देता है। इस प्लेटफ़ार्म के बारे में सिर्फ़ दो बातें कही गई हैं: एक 'ख़ुदा के सिवा किसी और की इबादत न करो' और दूसरी बात ये कि 'हम में से कोई भी दूसरे को न अपना ग़ुलाम समझे और न आक़ा। यानी आक़ाई और ग़ुलामी का सिस्टम ख़त्म हो गया है और कोई भी दूसरे को अपना ग़ुलाम नहीं बना सकता।

आज ह्युमन राइट्स के चार्टर के मुक़द्दमे में यही बात सामने आती है कि दुनिया में होने वाली सारी जंगों की असल वजह यही है कि लोग एक दूसरे की आज़ादी का ख़्याल नहीं रखते।

(2) रूहानी आज़ादी

इंसान अलग-अलग तरह की हज़ारों ताक़तों और फ़ितरी ख़ाहिशों से मिलकर बना है। इंसान में सेक्चुअल डिज़ायर्स, ग़ुस्सा, लालच और हद से ज़्यादा माल-दौलत की ख़्वाहिश भी पाई जाती है और इसके साथ-साथ उसके पास अक़्ल, नेचर और ज़मीर भी होता है।

हो सकता है कि इंसान रूहानी और बातिनी लिहाज़ से आज़ाद हो और ये भी हो सकता है कि एक ग़ुलाम हो यानी हो सकता है कि इंसान अपनी हवस या शहवत वग़ैरा का ग़ुलाम हो और हो सकता है कि वह इन सब चीज़ों से आज़ाद हो।

हो सकता है कि एक इंसान जिस तरह समाजी एतेबार से आज़ाद होता है, किसी ज़िल्लत के सामने सर नहीं झुकाता, समाज में अपनी आज़ादी की हिफ़ाज़त करता है, इसी तरह अख़लाक़ी और रूहानी एतेबार से भी अपनी आज़ादी की हिफ़ाजत करता हो यानी अपने ज़मीर और अक़्ल को आज़ाद रखता हो। ये आज़ादी वही चीज़ है जिसे दीन की ज़बान में 'तज़किया-ए-नफ़्स' और 'तक़्वा' कहा गया है।

तक़्वे के बग़ैर इंसान सीधे रास्ते से भटक जाता है। जिस इंसान के पास तक़्वा न हो, उसके पास आख़िरत के लिए कोई चीज़ नहीं होती। तक़्वे के बग़ैर इंसान आज़ाद नहीं होता। इंसान को ख़ुद अपने वुजूद और अपनी रूह की तरफ़ से आज़ाद होना चाहिए ताकि वह दूसरों को आज़ादी दे सके।

आज़ादी और ग़ुलामी की एक और क़िस्म भी है जिसका ताल्लुक़ माल और दौलत से है। इस बारे में हज़रत अली[अ] फ़रमाते हैं, "दुनिया इंसान के लिए रास्ता है, ठहरने की जगह नहीं है। दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं: कुछ अपने आपको बेच देते हैं और ख़ुद को ग़ुलाम बना डालते हैं, जबकि कुछ अपने आपको ख़रीद लेते हैं और ख़ुद को आज़ाद कर डालते हैं।"

इसलिए इंसान चाहे तो दुनिया की दौलत का ग़ुलाम बन जाए और चाहे तो उसकी क़ैद से आज़ाद ज़िंदगी बसर करे।

सवाल ये पैदा होता है कि क्या दुनिया के माल व दौलत में इतनी ताक़त है कि वह इंसान को अपना ग़ुलाम बना ले? हालांकि ये चीज़ें बे-रूह और मुर्दा होती हैं, तो क्या उनमें किसी ज़िंदा हस्ती को ग़ुलाम बनाने की ताक़त है। हरगिज़ नहीं!

हक़ीक़त में इंसान कभी भी माल और दौलत का ग़ुलाम नहीं होता बल्कि वह अपनी अंदरूनी ख़ूबियों का ग़ुलाम होता है, अपनी हैवानियत का बंदा होता है यानी वह ख़ुद अपने हाथों क़ैद होता है न कि माल और दौलत के हाथों। क्योंकि ये चीज़ें इंसान को कंट्रोल में नहीं ले सकतीं।

इंसान के अपने अंदर मौजूद लालच व हवस, ग़ुस्से और नफ़्स की चाहत जैसी ताक़तों ने उसे अपना ग़ुलाम बना लिया है। क़ुरआन कहता है, **"क्या तुम ने उस शख़्स को देखा है जिसने अपनी दिली चाहतों को ही अपना माबूद बनाया हुआ है।"**

यहीं से ये बात भी साबित हो जाती है कि माल व दौलत ख़ुद बुरी चीज़ नहीं है बल्कि इंसान के अंदर मौजूद लालच और दिली चाहतें बुरी चीज़ हैं

जिनकी वजह से इंसान माल और दौलत का ग़ुलाम बन जाता है। अगर इंसान अपने आपको दिली चाहतों और ख़्वाहिशों की क़ैद से आज़ाद कर ले तो ये माल और दौलत उसके ग़ुलाम बन जाते हैं।

यहीं से इंसान अपने इस मुक़ाम को पहचान लेता है जिसके बारे में क़ुरआन फ़रमाता है, "वह ख़ुदा वह है जिसने ज़मीन की सारी चीज़ों को तुम्हारे लिए पैदा किया है।"

इंसान के दो दर्जे हैं: एक हैवानी दर्जा और दूसरा इंसानी दर्जा। नबी, रूहानी आज़ादी की हिफ़ाज़त के लिए आए हैं ताकि इंसान की इंसानियत को दिली चाहतों का ग़ुलाम न होने दें।

जब इंसान को लगे कि वह अपनी दिली चाहतों पर भारी है तो उसे ख़ुद को आज़ाद समझना चाहिए लेकिन अगर कभी हराम खाने का दिल चाहे तो उस से परहेज़ नहीं करता, नाजाएज़ आमदनी सामने आए तो ख़ुद पर क़ाबू नहीं रख पाता, मर्द को एहसास हो कि वह किसी नामहरम औरत को देखकर उसे घूरने लगता है और औरत को अपनी ख़ूबसूरती और जिस्मानी नुमाइश करने में मज़ा आता हो और बेपर्दगी, ग़ीबत और दूसरों में बुराईयां निकालती रहती हो तो जान लेना चाहिए वह कि अभी तक ग़ुलाम है, आज़ाद नहीं।

आज़ादी वाले भी दो ग्रुप हैं: एक ग़ुलाम बनाने वाला और दूसरा अज़ादी चाहने वाला। सवाल ये है कि रूहानी आज़ादी में इंसान किस से आज़ादी चाहता है? जवाब ये है कि रूहानी आज़ादी जो कि समाजी आज़ादी से अलग है, इंसान की ख़ुद अपने आप से आज़ादी का नाम है।

जानवरों में न रूहानी ग़ुलामी वाली कोई बात पाई जाती है और न रूहानी आज़ादी की। ये बात सिर्फ़ इंसान ही के लिए कही जा सकती है कि वह ख़ुद अपना ग़ुलाम भी बन सकता है और अपने आप से आज़ाद भी हो सकता है क्योंकि इंसान दो चीज़ों से मिल कर बना है जिसको सभी दीन, फ़िलॉस्फ़र व साइकॉलोजी एक्सपर्ट्स भी मानते हैं।

यूँ तो इंसान मिट्टी से बना है लेकिन उसमें 'ख़ुदा की रूह' भी मौजूद है। ख़ुदा की रूह क्या चीज़ है? उसे जानना हमारे लिए ज़रूरी नहीं है लेकिन सरसरी तौर पर ये ज़रूर साबित हो जाता है कि इस मुठ्ठी भर मिट्टी में मिट्टी के अलावा भी कोई चीज़ पाई जाती है।

मशहूर हदीस के मुताबिक़ ख़ुदा ने फ़रिश्तों को पैदा किया और उनके अंदर सिर्फ़ अक़्ल रखी, हैवानों को पैदा किया और उनके अंदर सिर्फ़ ख़्वाहिशें और सेक्चुअल डिज़ायर्स रखीं, इंसानों को पैदा किया और उसके अंदर अक़्ल भी रखी और ख़्वाहिशें और सेक्चुअल डिज़ायर्स भी।

आम ज़बान में हम कह सकते हैं कि हमें अपनी ज़िंदगी में अच्छी ख़ूराक, आलीशान से आलीशान लिबास, सजे-बने मकान की ज़रूरत होती है। शौहर औरत बच्चों की भी ज़रूरत होती है। हम ज़िंदगी में ज़्यादा से ज़्यादा आसानियाँ चाहते हैं लेकिन कभी ऐसा भी होता है कि किसी मक़ाम पर अगर हम अपनी इज़्ज़त और आबरू की हिफ़ाज़त करना चाहें तो हमें फ़ाक़ाकशी को क़ुबूल करना होगा, रूखी-सूखी खाकर मोटा-झूटा पहनकर गुज़ारा करना होगा। हाँ, अगर अपनी इज़्ज़त से आँखें मूंद लें, ग़ुलामी को क़ुबूल कर लें तो तमाम दुनियावी नेमतें हमारे क़दमों में ढेर हो सकती हैं।

ऐसे मौक़ों पर अक्सर लोग किसी भी सूरत में ज़िल्लत और रुसवाई को क़ुबूल करने पर तैयार नहीं होते, चाहे इसके बदले उन्हें सोने-चाँदी ही में क्यों ने तौल दिया जाए। वैसे जो लोग ज़िल्लत को क़ुबूल कर लेते हैं वह भी अपने ज़मीर की गहराईयों में शर्मिंदगी का एहसास करते हैं।

अब सवाल ये पैदा होता है कि क्या ये मुमकिन है कि इंसान समाजी आज़ादी का मालिक हो लेकिन रूहानी तौर पर आज़ाद न हो? यानी इंसान ख़ुद तो अपनी सेक्चुअल डिज़ायर्स, ग़ुस्सा, हवस वग़ैरा का ग़ुलाम हो लेकिन इसके बावजूद दूसरों की आज़ादी का एहतेराम करता हो?

आज के ज़माने में इसका जवाब हाँ में दिया जाता है और आज के इंसानी समाज का एक पैराडॉक्स भी यही है, जबकि हक़ीक़त में ऐसा नहीं हो सकता।

पराने ज़मानों का इंसान अपने ज़ाती नेचर के तहत हर चीज़ में सिर्फ़ अपना फ़ाएदा देखता था और अपना फ़ायदा हासिल करने के लिए हर ज़रिए को इस्तेमाल करना चाहता था। वह इंसान को भी लकड़ी, पत्थर, लोहे, गाए और भैंसों वग़ैरा की तरह अपने फ़ाएदे के लिए इस्तेमाल करना चाहता था।

बस जो वजह इंसान को समाजी आज़ादी ख़त्म करने पर उभार रही थी वह इसमें पाई जाने वाली सिर्फ़ अपने फ़ाएदे वाली सोच थी और कुछ नहीं यानी क्योंकि उसके पास रूहानी आज़ादी नहीं थी इसलिए उसने दूसरों की समाजी आज़ादी में रुकावटें डाल रखी थीं।

फ़ाएदे वाली ये बात आज के इंसान में भी पाई जाती है? जी हाँ! इस लिहाज़ से पिछले ज़माने और आज के ज़माने के इंसान में कोई फ़र्क़ नहीं है। इल्म और क़ानूनों की तबदीली उसकी दुनियावी ख़्वाहिशों और हवस का रास्ता नहीं रोक सकी है। सिर्फ़ इतना हुआ है कि मामले की ज़ाहिरी शक्ल व सूरत बदल गई है और उस पर एक ख़ूबसूरत नक़ाब डाल दी गई है लेकिन असल मसला जूँ का तूँ है। पुराने ज़माने का इंसान बेबाक और निडर हुआ करता था, वह मुनाफ़िक़ नहीं था। फ़िरऔन ने अपने ज़ुल्म पर कोई पर्दा नहीं डाला था लेकिन आज का इंसान आज़ाद दुनिया, अम्नो अमान और आज़ादी के बचाव के नाम पर आज़ादियों और राइट्स को ख़त्म कर देता है और उन्हें अपना ग़ुलाम बनाता है क्योंकि उसकी रूह आज़ाद नहीं है, वह तक़्वे का मानने वाला नहीं है और रूहानी आज़ादी से आँखें मूंदे हुए है।

हज़रत अली[अ०] तक़्वे के बारे में सुनहरे लफ़्ज़ों में लिखे जाने वाले जुमले में फ़रमाते हैं, "बेशक अल्लाह का ख़ौफ़ (तक़्वा) हिदायत की चाबी और आख़िरत की दौलत है, हर ग़ुलामी से आज़ादी और हर तबाही से निजात का रास्ता है।"

रसूले अकरम स० की माँ

हज़रत आमिना बिन्ते वहब

जनाबे वहब एक दिन अपनी बीवी के पास गए और बोले, "आज अब्दुल मुत्तलिब के बेटे अब्दुल्लाह ने ऐसा कारनामा अंजाम दिया है कि मैं बस देखता रह गया। हुआ ये कि यहूदियों के एक गिरोह ने धोके से उन पर हमला कर दिया था। वह उन्हें क़त्ल करना चाहते थे लेकिन अब्दुल्लाह ने उनके बुज़दिलना हमले का अकेले जवाब दिया और उनमें से कई आदमियों को हलाक कर दिया। ऐसा हसीन और कमाल वाला जवान मैंने कभी नहीं देखा। तुम ऐसा करो कि अपने वालिद के पास जाओ और अब्दुल्लाह से अपनी बेटी आमिना की शादी का पैग़ाम दो, हो सकता है कि इस जवान की वजह से हमारे ख़ानदान की इज़्ज़त बढ़ जाए।"

जनाबे वहब की बीवी तो सोच भी नहीं सकती थीं कि उन्हें अब्दुल्लाह जैसा दामाद मिल जाएगा। उन्होंने कहा, "अब्दुल्लाह से तो मक्के के शरीफ़ और रईस अपनी लड़की का रिश्ता करने पर फ़ख़्र महसूस करते हैं और अभी तक अब्दुल मुत्तलिब ने किसी का रिश्ता क़ुबूल नहीं किया है, यहाँ तक कि इराक़ और शाम के बादशाहों और बड़े-बड़े लोगों ने भी इस बारे में पैग़ाम भेजे हैं, मगर सबको मायूस होना पड़ा है। क्या इसके बावजूद अब्दुल्लाह हम जैसे ग़रीबों की लड़की से शादी कर सकते हैं? क्या वह हमें इतनी इज़्ज़त देंगे?"

"फिर भी तुम्हें नाउम्मीद नहीं होना चाहिए क्योंकि मैंने अब्दुल्लाह के घर वालों को उन पर यहूदियों के हमला करने की ख़बर दी है इसलिए उनकी नज़रों में मेरी इज़्ज़त है। मैं समझता हूँ कि वह मेरे इस मुख़लिसाना काम की वजह से हमारी बात को ठुकराएंगे नहीं।" जनाबे वहब ने कहा।

वहब की बीवी, नए कपड़े पहन कर मायूसी और उम्मीद की मिलीजुली हालत के साथ जनाबे अब्दुल मुत्तलिब के घर गईं।

आप उस वक़्त अपने बेटों से यहूदियों के हमले के सिलसिले ही में बातचीत कर रहे थे। वहब की बीवी ने अब्दुल मुत्तलिब और उनके बेटों के हक़ में दुआ की। जवाब में अब्दुल मुत्तलिब ने भी उन्हें दुआ दी और मेहरबानी से बोले, "आज तुम्हारे शौहर ने बड़ा एहसान किया है। हम कभी इसका बदला नहीं दे सकेंगे। उनके हम दिल से शुक्रगुज़ार हैं।"

हज़रत अब्दुल मुत्तलिब की बातचीत के इस अंदाज़ से वहब की बीवी को कुछ यक़ीन हुआ कि अब्दुल मुत्तलिब उनकी पेशकश पर ग़ौर करेंगे। जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने आगे कहा, "हमारी तरफ़ से अपने शौहर से बहुत-बहुत सलाम कहना और कहना कि अगर हमारे लायक़ कोई काम हो तो ज़रूर बताएं, इंशाअल्लाह हम करेंगे।"

वहब की बीवी ने मौक़े को ग़नीमत समझा

> *"आपका नसीब जाग गया, आसमान वालों के बीच आपको जगह मिल गई, अब्दुल मुत्तलिब ने आपकी लड़की को पसंद कर लिया है लेकिन अभी इत्मिनान की सांसें नहीं ली जा सकती क्योंकि अब्दुल्लाह की माँ लड़की को क़रीब से देखने के लिए आ रही हैं। ख़ुदा न करे अगर उन्हें हमारी लड़की पसंद न आई तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।"*

और अब्दुल मुत्तलिब से असल बात बयान की और बोलीं, "मैं चाहती हूँ कि आप हमें ख़ुश कर दें, मुझे मालूम है कि इराक़ और दूसरी जगहों से रईसों की लड़कियाँ अब्दुल्लाह के निकाह में आने को अपने लिए फ़ख़्र समझती हैं लेकिन सच्चे दिल के साथ हमारी दरख़ास्त ये है कि अब्दुल्लाह का निकाह हमारी बेटी से कर लीजिए, इसीलिए मैं आपके पास आई हूँ। अब्दुल्लाह की शख़सियत हमें बहुत ज़्यादा पसंद है, हम जानते हैं कि माल-दौलत के लिहाज़ से हम दूसरों की बराबरी नहीं कर सकेंगे लेकिन उम्मीद है कि अब्दुल्लाह हमारे इस तोहफ़े को रद्द नहीं करेंगे।"

वहब की बीवी की बातें सुनकर जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने अब्दुल्लाह के चेहरे पर नज़र की क्योंकि जब भी बड़े लोगों की लड़कियों से रिश्ते की बात चलती थी तो अब्दुल्लाह के चेहरे पर नापसंदी के आसार नज़र आते थे लेकिन आज ऐसा नहीं था और वह ख़ुश दिख रहे थे।

जनाबे अब्दुल मुत्तलिब ने अपने बेटे अब्दुल्लाह से पूछा, "तुम्हारा क्या ख़याल है? ख़ुदा की क़सम! तुम्हारे लिए मक्के की लड़कियों में इससे ज़्यादा पाकदामन लड़की कोई नहीं। तक़वे वाले जवानों के लिए ऐसी ही लड़किया ठीक होती हैं।"

जनाबे अब्दुल्लाह ख़ामोश रहे। जनाबे अब्दुल मुत्तलिब उनकी ख़ामोशी समझ गए कि वह इस रिश्ते से ख़ुश हैं इसलिए उन्होंने वहब की बीवी से कहा, "मुझे यह रिश्ता क़ुबूल है। मैं तुम्हारी लड़की का रिश्ता अपने बेटे के लिए क़ुबूल करता हूँ।"

उस वक़्त जनाबे अब्दुल मुत्तलिब की बीवी और जनाबे अब्दुल्लाह की माँ जनाबे फ़ातिमा ने वहब की बीवी से कहा, "मैं भी तुम्हारे घर आकर क़रीब से आमिना को देखूँगी, अगर लड़की लायक़ होगी तो मैं साथ दूँगी।"

ये बात तक़रीबन तय हो गई थी कि अब्दुल्लाह की शादी आमिना से ही होगी। लड़की वाले ख़ासकर उसके माँ-बाप अब्दुल्लाह जैसे नेक दामाद के मिल जाने से बहुत ख़ुश थे जैसे कोई ग़ैब का जानने वाला आमिना की माँ से कह रहा था, "मुबारक हो! मुहम्मद मुस्तफ़ा स० की पैदाईश में ज़्यादा देर नहीं है।"

वहब की बीवी वापस आईं तो वहब ने उनसे पूछा, "क्या हुआ?"

"आपका नसीब जाग गया, आसमान वालों के बीच आपको जगह मिल गई, अब्दुल मुत्तलिब ने आपकी लड़की को पसंद कर लिया है लेकिन अभी इत्मिनान की सांसें नहीं ली जा सकती क्योंकि अब्दुल्लाह की माँ लड़की को क़रीब से देखने के

लिए आ रही हैं। ख़ुदा न करे! उन्हें हमारी लड़की पसंद न आई तो सारी मेहनत बेकार हो जाएगी।''

वहब ने बीवी से कहा, ''बेटी को नए कपड़े पहनाओ और ज़ेवर वग़ैरा से सजा दो! क्योंकि लड़कियों में इतनी कशिश होनी चाहिए कि जिस से वह पसंदीदा बन जाएं।''

आमिना की माँ ने बेटी को सजाया, जिस से उसकी ख़ूबसूरती दुगनी हो गई और उन्होंने ताकीद की कि मक्के के सरदार की बीवी, फ़ातिमा के सामने अदब और एहतेराम का ख़ास ख़याल रखना, हो सकता है फ़ातिमा भी इस रिश्ते को पसंद कर लें और तुम्हारी क़िस्मत जाग जाए।

इसी बीच में फ़ातिमा घर में दाख़िल हुईं। जनाबे आमिना अदब व एहतेराम के साथ उनकी ताज़ीम के लिए खड़ी हो गईं। फ़ातिमा अपनी होने वाली बहू की ख़ूबसूरती पर फ़िदा हो गईं और आमिना की माँ से बोलीं, ''मैं नहीं जानती थी कि तुम्हारे बेटी इतनी ख़ूबसूरत और शराफ़त वाली है, पहले मैंने बार-बार आमिना को देखा था लेकिन उसकी ख़ूबसूरती और शराफ़त की तरफ़ ध्यान नहीं दे सकी थी।''

''ये भी आपके ख़ानदान की बरकत से है।'' वहब की बीवी ने ख़ुश होते हुए कहा।

फ़ातिमा ने आमिना से कुछ बातें कीं तो आमिना को ऐसी शरीफ़ और मिलंसार लड़की पाया कि मक्के की औरतों और लड़कियों में जिसकी मिसाल नहीं थी।

फ़ातिमा बहुत ख़ुश थीं। अपने शौहर और अपने बेटे के पास गईं और अब्दुल्लाह से कहा, ''बेटा! आमिना जैसी लड़की सारे अरब में नहीं है मैंने उसे पसंद कर लिया है, वह तुम्हारी बीवी होने के लायक़ है और तुम्हारे बच्चे के लिए बेहतरीन माँ साबित होगी।''

मेहर के बारे में जो बातचीत हुई वह ये थी:

लड़की के बाप ने जनाबे अब्दुल मुत्तलिब से कहा, ''मेरी बेटी आपके बेटे के लिए एक हदिया है, मुझे मेहर की रक़म की ज़रूरत नहीं है।''

''ख़ुदा आप सबको बेहतरीन बदला दे! इससे नहीं बचा जा सकता है क्योंकि लड़की का मेहर होना चाहिए और हमारे रिश्तेदारों में से कुछ को गवाह भी होना चाहिए।'' मक्के के सरदार ने जवाब दिया।

अब्दुल मुत्तलिब लड़की को कुछ देना चाहते थे कि एक शोर सा मचा। वहब ने बेख़ुदी की हालत में तलवार उठा ली, दूसरे लोग भी उठ खड़े हुए। क़िस्सा ये था कि यहूदी हमला करके अब्दुल्लाह को क़त्ल करना चाहते थे, वह वहब ही के घर में मौजूद थे उन्होंने सोचा कि मौक़े से फ़ायदा उठाकर इस महफ़िल के शरीफ़ लोगों को लाठियों और पत्थरों से मार डालेंगे।

बड़ा ख़तरनाक माहौल बन गया था, यहूदी अंधेरे से उन्हें देख रहे थे और ये रौशनी होने की वजह से उन्हें नहीं देख पा रहे थे, उन्होंने पत्थरों से अपने हमले की शुरुआत कर दी लेकिन अब्दुल मुत्तलिब और आपके साथियों ने बहादुरी से काम लिया और उनके हमले को नाकाम कर दिया।

यहूदियों पर क़ाबू पाने के बाद जब वह वहब के घर से वापस आने लगे तो उन्होंने वहब से कहा, ''कल रिश्तेदारों को बुलाकर निकाह कर लेंगे।''

अगले दिन सुबह के वक़्त अब्दुल मुत्तलिब ने अपने रिश्तेदारों को बुलाया, सब ने अच्छे कपड़े पहने, जिससे एक शानदार महफ़िल का सा समाँ लगने लगा, अब्दुल मुत्तलिब महफ़िल में आए। सब ताज़ीम के लिए खड़े हो गए, इसके बाद अब्दुल मुत्तलिब ने खड़े होकर ख़ुतबा पढ़ा, ''ख़ुदा की नेमतों पर हम उसकी तारीफ़ करते हैं कि उसने हमें अपने घर काबे का पड़ोसी बनाया और अपने हरम में ठहरने की जगह दी। लोगों के दिलों में हमारी इज़्ज़त पैदा की, हमें आफ़तों और ख़तरों से बचाया, हमें निकाह करने का हुक्म दिया और हराम से दूर रखा। लोगो! मेरा बेटा अब्दुल्लाह तय मेहर पर आमिना से निकाह करना चाहता है, क्या तुम सब भी इस रिश्ते से राज़ी हो?''

सब ने कहा, ''हम राज़ी हैं।''

अब्दुल मुत्तलिब ने वहाँ बैठे लोगों को गवाह बनाया। इस शानदार जश्न में सब ने ख़ुशी मनाई। बाद में अब्दुल मुत्तलिब ने सबको शादी का वलीमा दिया, जिसका सिलसिला चार दिनों तक चलता रहा। वलीमे में सिर्फ़ मक्के वालों ने ही शिरकत नहीं की बल्कि मक्के के आस-पास के लोगों ने भी यहाँ आकर खाना खाया।

जनाबे आमिना अपने शौहर के घर चली गईं। कुछ दिनों के बाद ख़ुदा ने उन्हें एक ऐसे बेटे की ख़ुशी दी जो इंसानों को कमाल और नेकी की तरफ़ दावत देने वाला था। अल्लाह चाहता था कि आदम की पैदाईश से पहले आमिना के नए पैदा होने वाले बच्चे का नाम आसमानों पर मुहम्मद ﷺ और जन्नत में अबुलक़ासिम हो। लौहे महफ़ूज़ में लिखा था कि इस बच्चे के दुनिया में आने से पहले ही इसके बाप का साया सर से उठ जाएगा और इसका बचपना यतीम बच्चों जैसा गुज़रेगा।

शौहर के बाद हज़रत आमिना भी लम्बे ज़माने तक ज़िंदा न रहीं और बहुत जल्दी इस दुनिया से चल बसीं। इस तरह अब्दुल्लाह व आमिना की सारी ज़िम्मेदारी अब्दुल मुत्तलिब पर आ गई जिसे आप ने बहुत अच्छी तरह पूरा किया।

बीवी का एहतेराम

अल्लामा तबातबाई हमारे एक बहुत मशहूर आलिमे दीन हैं जो क़ुरआन व हदीस के एक्सपर्ट होने के अलावा फ़िलास्फ़र भी थे। क़ुरआन पर उनकी तफ़सीर उलमा और इस्लामी स्कालरों के बीच बहुत मशहूर है। जिसके बारे में शहीद मुतह्हरी जैसे आलिमे दीन ने कहा है कि सौ साल बाद लोग इस तफ़सीर की अहमियत को समझेंगे।

अल्लाम तबातबाई अपनी बीवी का बहुत एहतेराम, उनसे बहुत मुहब्बत और उनकी बहुत तारीफ़ करते थे।

अल्लामा की औलाद का इस बारे में कहना है, ''हमने कभी इन दोनों को किसी बात पर तेज़ बोलते नहीं देखा।''

अल्लामा ने अपने घर को चलाने और बच्चों की पढ़ाई वग़ैरा सब कुछ उनके ज़िम्मे कर दिया था जिसे वह बहुत अच्छी तरह से करती थीं। जिसके बारे में ख़ुद उनका कहना है, ''घर चलाने की सारी ज़िम्मेदारी, ख़र्चा संभालना और हिसाब किताब रखना और दूसरे सारे काम करना मेरी बीवी के ज़िम्मे था। पूरी ज़िंदगी में कभी भी ऐसा नहीं हुआ कि उन्होंने कोई काम किया हो और मैंने अपने दिल में कहा हो कि काश यह काम न किया होता या कोई काम न किया हो और मैंने सोचा हो कि काश यह काम कर दिया होता। हमने नजफ़ में तालीम के ज़माने में बहुत मुश्किलों का सामाना किया लेकिन इन सारे हालात का उन्होंने बहुत अच्छी तरह सामना किया।''

जब वह बीमार हो गई तो अल्लामा अपने सारे काम छोड़ कर सिर्फ़ उनकी देखभाल में लग गए थे और सारे काम ख़ुद करते थे।

उनकी मौत से अल्लामा को बहुत ज़्यादा सदमा पहुंचा था और वह बहुत ग़मगीन रहने लगे थे। आप एक ख़त में लिखते हैं, ''उनके जाने से मेरी ज़िंदगी और सारी ख़ुशियां ख़त्म हो चुकी हैं।''

आप अपनी बीवी के इंतेक़ाल के बाद तीन चार साल तक हर रोज़ उनकी क़ब्र पर जाते थे और उसके बाद भी अपने बुढ़ापे और कमज़ोरी के बावजूद हफ़्ते में दो दिन ज़रूर जाते थे और मरते दम तक आपने यह सिलसिला जारी रखा। आप कहते थे कि इंसान को दूसरों की क़द्र करना चाहिए जो लोगों की क़द्र नहीं कर सकता और उनका शुक्रिया नहीं अदा कर सकता, वह ख़ुदा का भी शुक्र नहीं कर सकता।

हिक्मत के बातें

बच्चा नासमझ क्यों पैदा होता है

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की नज़र में

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की विलादत पर ख़ास पेशकश

नासमझ और मासूम बच्चा

नन्हे-मुन्ने नए पैदा होने वाले बच्चे किसे अच्छे नहीं लगते। इन मासूम बच्चों को देखकर बस यही जी चाहता है कि उन्हें गोद में ले लें, प्यार करें और उन्हें हंसाने की कोशिश करें। नया पैदा होने वाला या कुछ महीने का बच्चे किसी का भी हो, हर एक उसे प्यार करता है। इस प्यार की वजह क्या है? माएं क्यों अपने बच्चे के कामों को ख़ुशी-ख़ुशी करती हैं? बाप क्यों अपने बच्चे को गोद में लेने को बेताब रहता है? दूसरे रिश्तेदार, अपने-ग़ैर यहाँ तक कि अजनबी लोग तक क्यों इन छोटे बच्चों को अपनी तरफ ध्यान दिलाकर उन्हें खिला कुदाकर ख़ुशी महसूस करते हैं।

नए पैदा होने वाले और छोटे बच्चों के लिए दुनिया भर का प्यार क्यों टूट पड़ता है? इसकी वजह यक़ीनी तौर पर बच्चों की मासूमियत, भोलेपन और उम्र के उस हिस्से में बड़ों जैसी अक़्ल और समझ का न होना है। नए पैदा होने वाले बच्चे अगर पैदा होते ही बातें करने लगते तो शायद उन्हें सिर्फ़ माँ ही प्यार करती बल्कि बचपन में ऐसे पक्के बच्चों की देखभाल और कामों में वह भी इतनी दिलचस्पी और ख़ुशी न महसूस करती।

ये कुदरत के अनोखे इंतेज़ाम हैं कि गोश्त का एक लोथड़ा दुनिया में आता है तो वह सारे घर की आँख का तारा बन जाता है। वह बग़ैर बोले हुक्म चलाता है और हुक्म चलाए बग़ैर अपनी बात मनवाता है।

अब ज़रा देर को सोचिए कि नए पैदा होने वाले बच्चे अगर अपनी ज़िंदगी के पहले ही दिन से बड़ों की तरह समझदार होते तो क्या होता और ये कि पैदाइश के एक ख़ास ज़माने तक बच्चों की मासूमियत, भोलेपन और कम अक़्ली में ख़ुदा की क्या-क्या हिक्मतें छुपी हुई हैं।

शायद आप के पास सोचने का भी वक़्त न हो और हो भी तो आप इस सवाल पर शायद इतनी बारीकी से ग़ौर न कर सकें। इसलिए हम इस सब्जेक्ट पर इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के इरशादों से फ़ाएदा उठा सकते हैं।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] सत्तरह रबीउल अव्वल 83 हि० में पैदा हुए और 25 शव्वाल 148 हि० को अपने ख़ुदा के पास वापस लौट गए। आप[अ०] की ज़िंदगी का ज़्यादा हिस्सा इस्लामी उलूम और फ़नों को फैलाने में लगा। आपके दौर में बनी उमैय्या की हुकूमत ख़त्म हो रही थी और एक नई ताक़त बनी अब्बास के नाम से उभर रही थी। दोनों ताक़तों की आपस की कशमकश की वजह से इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] को ये मौक़ा मिल गया कि आप मदीने में सुकून से इस्लामी उलूम को फैला सकें।

आप के दौर में इस्लामी तालीमात नए-नए फ़लसफ़ों से मुक़ाबले में थीं। नए-नए फ़िरक़े बन रहे थे और अपनी राय से तफ़सीर के ज़रिए कुरआन की आयतों के मायने और मतलब को अपने पसंदीदा रंग में रंगा जा रहा था। उसी ज़माने का क़िस्सा है कि एक शख़्स जिसका नाम इब्ने अबिल औजा था एक दिन मस्जिदे नबवी में अपने साथियों के साथ बैठा था। ये सब लोग अल्लाह के वुजूद को नहीं मानते थे। उनका ख़याल था कि ये

सारी काएनात बिना किसी पैदा करने वाले के पैदा हो गई है। मस्जिदे नबवी में कुछ दूरी पर इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के एक शार्गिद मुफ़ज़्ज़ल बिन अम्र भी मौजूद थे। दहरियों का ये ग्रुप रसूले इस्लाम के लाए हुए दीन की कामयाबियों के बारे में बातचीत कर रहा था कि इसी बीच इब्ने अबिल औजा ने कहा, "मुहम्मद[स०] का ज़िक्र छोड़ो, पहले ये ग़ौर करो कि ख़ुद ख़ुदा है भी या नहीं।"

इब्ने अबिल औजा का जुमला सुनकर मुफ़ज़्ज़ल गुस्से से भर गए। आपने इंतेहाई गुस्से में उस से कहा, "ऐ ख़ुदा के दुश्मन! अल्लाह के दीन को झुठलाते हो जिसने तुम्हें अच्छी सूरत में पैदा किया है?"

इब्ने अबिल औजा ने बड़े सुकून से जवाब दिया कि अगर तुम जाफ़र बिन मुहम्मद के सहाबियों में से हो तो उनका बात करने का अंदाज़ तो बिल्कुल ऐसा नहीं है। उन्होंने हमारी बातें इससे ज़्यादा कड़वी-कड़वी सुनी हैं लेनिक उन्होंने हमारी बातें सुनकर कभी तुम्हारी तरह गुस्सा नहीं किया। न वह कभी झुंझलाहट का शिकार हुए न हमें मारने को दौड़े। इसके उलट वह हमारी बातें पूरे ध्यान के साथ सुनते हैं और अपनी दलीलों से हमें लाजवाब कर देते हैं। वह वाक़ई बहुत नर्म, इज़्ज़त वाले और समझदार इंसान हैं। अगर तुम उनके अस्हाब में से हो तो उन्हीं की तरह हम से बात करो।

ये सुनकर मुफ़ज़्ज़ल ने अपने गुस्से को संभाला और इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] की ख़िदमत में पहुँचे। इमाम ने उनके चेहरे का रंग बदला हुआ देखा तो उनसे इसकी वजह पूछी। मुफ़ज़्ज़ल की ज़बानी उन लोगों की बातें सुनकर इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने मुफ़ज़्ज़ल से कहा, "तुम परेशान न हो। कल सुबह मेरे पास आना, मैं तुम्हें दरिंदों, परिंदों, कीड़े-मकोड़ों, हैवानों, इंसानों, जमादात, नाबातात यानी दुनिया में मौजूद सारी मख़लूक़ात की पैदाईश में छुपी हुई ख़ुदा की ऐसी हिक्मतें बताऊँगा जिनको सुनकर इबरत हासिल करने वाले यक़ीनी तौर पर इबरत हासिल करेंगे, मोमिनों के दिलों को इत्मिनान हासिल होगा और ख़ुदा के दुश्मनों की अक़्ल हैरान व परेशान रह जाएगी।

इमाम की ये बातें सुनकर आपके शार्गिद मुफ़ज़्ज़ल को बड़ी तसल्ली हुई। अगले दिन से वह एक तय वक़्त पर इमाम की ख़िदमत में हाज़िर होने लगे। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] लेक्चर देना शुरु करते और उनके शार्गिद इस लेक्चर को लिखना शुरु कर देते। इस तरह की कुल चार बैठकों में इमाम[अ०] ने जो लेक्चर दिए वह किताबों में महफ़ूज़ हैं।

इन लेक्चर्स के दौरान इमाम[अ०] ने ज़मीन व आसमान, सूरज और चाँद-सितारों की पैदाईश के बारे में बेशुमार हिक्मतें बयान कीं। इस आर्टिकल में हम इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] के लेक्चर का वह हिस्सा पेश कर रहे हैं जो हमारे सब्जेक्टस को टच कर रहा है कि पैदाईश के वक़्त बच्चे के नासमझ होने में ख़ुदा की क्या हिकमतें छुपी हुई हैं!

आईए ये हिक्मतें इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ही की ज़बानी सुनते हैं।

पहली हिक्मत

अगर बच्चा अक़्लमंद और समझदार पैदा होता तो वह इस दुनिया में आकर हैरान और परेशान हो जाता। यहाँ की हर चीज़ उसके लिए अजनबी होती। इसलिए वह हैरत के मारे होशो हवास खो बैठता।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! इसे यूँ समझो कि जैसे कोई शख़्स किसी एक मुल्क से क़ैद होकर दूसरे मुल्क में जाए और उसकी अक़्ल भी ठीक हो तो देखो वह कैसा हैरान और परेशान होता है। वह न तो वहाँ की ज़बान जल्दी सीख सकता है और न वहाँ के कल्चर को क़ुबूल कर सकता है। इसके उलट अगर उसे बचपने ही में जब उसकी समझ काम न करती हो, क़ैद करके किसी ग़ैर मुल्क में पहुँचा दिया जाए तो वह बहुत जल्दी वहाँ की ज़बान, वहाँ के कल्चर और अंदाज़ को सीख लेगा।

इसी तरह अगर बच्चा समझदार होता और अचानक आँख खोलते ही वह इस दुनिया की अजीब-अजीब चीज़ें और अलग-अलग तरह की सूरतें और तरह-तरह के अजाएबात को देखता तो सख़्त ताज्जुब और हैरत में रहता और बहुत ज़माने तक ये बात उसकी अक़्ल में न आती कि वह कहाँ था, कहाँ आ गया और जो कुछ देख रहा है क्या है। ये ख़्वाब है या जागने की हालत में ये चीज़ें दिखाई दे रही हैं।

दूसरी हिक्मत

फिर अगर बच्चा अक़्लमंद और समझदार पैदा होता तो जब ख़ुद को देखता कि कोई उसे गोद में उठाए हुए है, उसको दूध पिलाया जाता है, उसे ज़बरदस्ती कपड़ों में लपेटा जाता है, उसे झूले में लिटाया जाता है तो उसे कितनी झुंझलाहट और ज़िल्लत महसूस होती।

इसके अलावा बच्चे के अक़्लमंद और होशियार होने में माँ-बाप के दिलों को उस से वह मिठास न मिलती और न लोगों के दिलों में उसकी इतनी मुहब्बत होती जो आमतौर पर मासूम और नासमझ बच्चों को खिलाने कुदाने से बड़ों के दिलों में होती है। उनके भोलेपन और मासूमियत ही की वजह से तो घर के बुज़ुर्ग, माँ-बाप या दूसरे रिश्तेदार बच्चों को प्यार करते हैं और इसी वजह से बच्चे उनका ध्यान खींचते हैं।

तीसरी हिकमत

इसलिए बच्चा दुनिया में इस तरह पैदा होता है कि कुछ समझ नहीं पाता। दुनिया से बिल्कुल बेख़बर होता है और तमाम चीज़ों को अपने निहायत कमज़ोर ज़हन और अधूरी अक़्ल से देखता है जिसकी वजह से उसे किसी चीज़ को देखकर हैरानी नहीं होती।

फिर धीरे-धीरे, उसकी अक़्ल और समझ

बढ़ती रहती है ताकि वह बराबर तमाम चीज़ों को पहचानने लगे। उसके ज़हन को आदत हो जाए और फिर वह उस पर बाक़ी रहे और उसे ग़ौर करने की ज़रूरत न पड़े, न उसको हैरत हो। तर्जुबे से बराबर उसकी अक़्ल बढ़ती रहे और फ़रमांबरदारी, भूल-चूक और नाफ़रमानी के एक्शन और रिएक्शन को अच्छी तरह समझ सके।

चौथी हिकमत

ये बच्चा अगर अक़्ल वाला और समझदार पैदा होता और पैदा हाने के वक़्त ही से ख़ुद अपने काम को समझ सकता तो माँ-बाप को औलाद की परवरिश में बिल्कुल मज़ा न आता और वह वजह जिस से माँ-बाप अपनी औलाद के लिए हर वक़्त लगे रहते हैं, ख़त्म हो जाती। ऐसी सूरत में बच्चों पर माँ-बाप की वह मेहरबानी और मुहब्बत बाक़ी नहीं रहती जो उनके छोटे से बच्चों की परवरिश और देखभाल के लिए ज़रूरी है (जैसे तर्जुबा न होने की वजह से कोई जानवर बच्चे को नुक़सान पहुँचा देता या बच्चा ग़लत चीज़ खाकर अपनी हलाकत का सामान कर लेता।) यही नासमझी है जिसकी वजह से वह उनके लिए तकलीफ़ें बर्दाश्त करते हैं।

पांचवीं हिक्मत

ऐसी सूरत में न औलाद को माँ-बाप से मुहब्बत पैदा होती और न माँ-बाप को औलाद से। बच्चे अपनी अक़्ल की वजह से माँ-बाप की देखभाल की ज़रूरत ही महसूस न करते और पैदा होते ही माँ-बाप से अलग हो जाते। फिर तो न कोई शख़्स अपनी माँ को पहचानता, न बाप को और न अपनी माँ, बहन या बाक़ी महरम लोगों से शादी करने से परहेज़ करता क्योंकि वक़्त गुज़रने के साथ उसे मालूम ही न हो पाता कि कौन उसकी माँ है और कौन उसकी बहन है।

छटी हिकमत

ऐसी सूरत में जो कम से कम बुराई है, वह बड़ी ख़राबी और बहुत बुरी बात है और वह ये कि अगर बच्चा माँ के पेट से समझदार पैदा होता तो उस चीज़ को देखता जिसे देखना जाएज़ नहीं है।

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! क्या तुम नहीं देखते कि अल्लाह ने अपनी मख़लूक़ को किस तरह पैदा किया कि उसकी हर मख़लूक़ कितनी अच्छी बनाई गई है और हर छोटी बड़ी चीज़ ग़लती और ख़ता से ख़ाली है।

बच्चा रोता क्यों है?

ऐ मुफ़ज़्ज़ल! ज़रा ग़ौर करो कि बच्चों के रोने में क्या फ़ायदा है। असल में बात ये है कि बच्चों के दिमाग़ में नमी होती है। अगर वह उनके दिमाग़ में रह जाती तो तरह-तरह की मुसीबतें उन पर पड़ती और कई बीमारियाँ उन्हें लग जातीं। जैसे आँखों की रौशनी जाती रहती या और कोई ख़तरनाक बीमारी उन्हें लग जाती। इसलिए रोने से ये बुरे माद्दे उनके दिमाग़ से निकल जाते हैं और उनकी आँखें बची रहती हैं।

बच्चों का मुटापा

एक ज़माना था जब दिल और शुगर की बीमारी जवानी का दौर गुज़रने के बाद शुरू होती थी लेकिन भला हो इस नए ज़माने का और नई-नई और मिलावटी खाने पीने की चीज़ों का कि अब ये बीमारियां बच्चों और नौजवानों को भी नहीं छोड़तीं। ब्रिटिश मेडिकल जर्नल की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि नौजवानों में मुटापा इतनी तेज़ी से बढ़ रहा है कि इसके बारे में सोचा भी नहीं जा सकता। अन्दाज़ा है कि वहाँ एक तिहाई नौजवानों का वज़न मामूल से ज़्यादा है और दस फ़ीसद से ज़्यादा मुटापे की हद में हैं और ये मुटापा, शुगर और दिल की बीमारी की जड़ है। इस सिलसिले में पैरेंट्स भी काफ़ी हद तक क़ुसूरवार हैं। ये किस तरह मुमकिन है कि पैरेंट्स को आज के दौर में सियासत, खेल, मईशत, मज़हब और साइंस यानी हर फ़ील्ड में मूलमात हासिल हों, लेकिन ये न मालूम हो कि उनकी औलाद किस तरह ज़िन्दगी शुरु करे, किस तरह रहे और क्या खाए पिए।

अगर वालदैन अपनी आसानी को सामने रखते हुए और अपनी ज़िम्मेदारियों से मुँह मोड़कर बच्चों को उनकी मनभाती ग़िज़ा खाने दें और घंटों टीवी और कम्प्युटर के सामने बैठा रहने दें तो उसके लिए बच्चों को तो क़ुसूरवार नहीं ठहराया जा सकता।

अन-हेल्थी बल्कि नुक़सानदेह ग़िज़ा और लाइफ़ स्टाइल का ज़िम्मेदार अक्सर वालदैन उन बिज़िनेस हाऊज़ेस को समझते हैं जो इन चीज़ों को ख़ूबसूरत प्रचारों के सहारे बच्चों तक पहुँचाते हैं।

इस में शक नहीं कि अक्सर एडवर्टीज़मेंट न सिर्फ़ ये कि बच्चों पर अपना असर डालते हैं, बल्कि वालदैन से भी उनकी अक़्ल और समझ छीन लेते हैं। इसकी एक वजह ये भी होती है कि अक्सर एडवर्टीज़मेंटस में मशहूर और पॉपुलर नेश्नल और इंटरनेश्नल सिलेब्रेटीज़ के अलावा ऐसे आर्गेनाइज़शंस की मदद भी ली जाती है जो लोगों की नज़र में भरोसेमन्द होते हैं लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि पैरेंटस की कोई ज़िम्मेदारी नहीं रह जाती क्योंकि लोग अब बाज़ार में बिकने वाली खाने की चीज़ों के फ़ाएदे, नुक़सान और सेहत पर उनके असर के बारे में पहले से ज़्यादा जानते हैं। इसके अलावा उन्हें एक्र्सासाइज़ और जिस्मानी एक्टिविटी के फ़ाएदे और टीवी या कम्प्युटर के सामने बैठे रहने के नुक़सानों को भी बहुत अच्छी तरह जानते हैं लेकिन मसला ये है कि न तो हमें ख़ुद अपने ऊपर क़ाबू रहा है और न अपनी औलाद पर। हम अपनी अगली नस्ल के लिए कोई अच्छी मिसाल क़ायम किए बग़ैर उनसे ये उम्मीद कैसे रख सकते हैं कि वह सिर्फ़ हमारे टोक देने से सही रास्ते पर चल पड़ेगी।

ये बात साफ़ कि सेहतमन्द ग़िज़ा और एक्र्सासाइज़ से न सिर्फ़ जिस्मानी सेहत बेहतर होती है, बल्कि उसका दिमाग़ी सेहत पर भी पाज़िटिव असर पड़ता है। मतलब ये है कि ज़ेहन के फलने फूलने के लिए भी मुनासिब एक्र्सासाइज़ और हेल्थी ग़िज़ा की ज़रूरत होती है और बच्चों को ये दोनों चीज़ें देने के सिलसिले में सरकारी और प्राइवेट तालीमी इदारों और वालदैन पर एक जैसी ज़िम्मेदारी आएद होती है।

एक ब्रिटिश न्यूट्रिशियन एक्सपर्ट की राये है कि हमें बच्चों की कमर के साइज़ पर ख़ास ध्यान देना चाहिए, जिस से ये पता चले कि वह जिस्म के ऊपरी हिस्से में कितनी चर्बी जमा कर रहे हैं। जिस्म के ऊपरी हिस्से में जमा चर्बी ही हक़ीक़त में वह चिकनाई है जो आगे चल कर दिल की बीमारियों और शुगर की वजह बनती है। इस एक्सपर्ट ने एक्र्सासाइज़ की अहमियत पर भी ज़ोर दिया है। इसी एक्सपर्ट का ख़याल है कि कुछ बच्चे कम खाते हैं लेकिन फिर भी उनका वज़न कम नहीं होता, इसकी वजह ये है कि बच्चों में जिस्मानी एक्टिविटी या एक्र्सासाइज़ का रिवाज कम होता जा रहा है।

वरज़िश और चलने फिरने में कमी की कई वजह हो सकती हैं। जिनमें टीवी और कम्प्युटर के अलावा ये डर भी है कि बच्चे पैदल स्कूल जाएंगे या पार्क वग़ैरा में खेलेंगे तो हो सकता है कि उन्हें इग़वा कर लिया जाए या उनकी जान को नुक़सान पहुँचे। ये ख़तरा बेबुनियाद नहीं। लेकिन वालदैन को इस मसले का कोई न कोई हल निकालना चाहिए। अगर वह बच्चों की ख़ातिर थोड़ा वक़्त निकाल लें और अपनी निगरानी में उन्हें खेलकूद का मौक़ा दें या उन्हें किसी क्लब का मेम्बर बनवा दें तो सूरते हाल बेहतर हो सकती है।

अल्लाह की मख़लूक़

■ आयतुल्लाह इब्राहीम अमीनी

ख़ुदा से क़रीब होने का ज़रिया सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा, हज, ज़ियारत और दुआ वग़ैरा ही नहीं हैं और न ही मस्जिदों में जाना और जा नमाज़ पर देर तक नमाज़ पढ़ना बल्कि समाजी ज़िम्मेदारियों को पूरा करना, दूसरों पर एहसान करना, ख़ुदा की मख़लूक़ की मदद करना भी एक बेहतरीन इबादत है मगर शर्त यह है कि इस इबादत को क़ुरबत की नियत से यानी ख़ुदा की ख़ुशी के लिए किया जाए। ये एक ऐसी इबादत है जिसके ज़रिए अपनी रूह को पाक और पाकीज़ा बनाया जा सकता है।

इस्लाम की निगाह में ख़ुदा से क़रीब होने का मतलब यह नहीं है कि लोगों से कट कर और किसी एक कोने में बैठकर ज़िंदगी गुज़ार दी जाए बल्कि समाजी ज़िम्मेदारियों को पूरा करते हुए लोगों में रहकर लोगों के साथ एहसान, नेकी, उनकी ज़रूरतों को पूरा करना, उन्हें ख़ुश करना, कमज़ोर लोगों की हिमायत करना, दूसरों के कामों में हिस्सा लेना, उनके दुख-दर्द को दूर करना और ख़ुदा के बंदों की मदद करना, ये सारे काम इस्लाम की नज़र में बहुत बड़ी इबादतें हैं जिनका सवाब हज और उमरे से कई गुना ज़्यादा होता है। रसूल[स०] और इमामों की सैकड़ों हदीसें इस बारे में किताबों में मौजूद हैं। इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "अल्लाह फ़रमाता है कि मेरी मख़लूक़ मेरे अयाल हैं। मुझे सबसे ज़्यादा वह इंसान पसंद है जो मेरी मख़लूक़ पर मेहरबान हो और उसकी ज़रूरतों को पूरा करने में ज़्यादा कोशिश करे।"

रसूल[स०] ने फ़रमाया है, "लोग ख़ुदा के अयाल हैं। अल्लाह को सबसे ज़्यादा वह इंसान पसंद है जो अल्लाह के अहलो अयाल को फ़ाएदा पहुँचाए और उनके दिलों को ख़ुश करे।"

इमाम बाक़िर[अ०] ने फ़रमाया है, "किसी मोमिन का किसी दूसरे मोमिन के सामने मुस्कुराना एक नेकी है। उसकी तकलीफ़ और परेशानी को दूर करना भी एक नेकी है। किसी मोमिन को ख़ुश करना ख़ुदा की सबसे बड़ी इबादत है।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "एक मोमिन की ज़रूरत को पूरा करना अल्लाह को बीस ऐसे हजों से ज़्यादा पसंद है जिसमें एक लाख ख़र्च किया हो।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "रसूल ने फ़रमाया कि जो किसी मोमिन को ख़ुश करे उसने मुझे ख़ुश किया और जिसने रसूल[स०] को ख़ुश किया हो उसने ख़ुदा को ख़ुश किया है और जिसने ख़ुदा को ख़ुश किया हो वह जन्नत में जाएगा।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ही ने फ़रमाया है, "किसी मुसलमान की ज़रूरत को पूरा करने में कोशिश करना ख़ान-ए-काबा के सत्तर तवाफ़ करने से बेहतर है।"

इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है, "ख़ुदा के कुछ बंदे ऐसे हैं जो लोगों की ज़रूरत के वक़्त उनका सहारा बनते हैं। ये ऐसे लोग हैं जो क़यामत में ख़ुदा के अज़ाब से बचे रहेंगे।"

इन हदीसों से यह बात सामने आती है कि एहसान और नेकी करना, ख़ुदा के बंदों की ख़िदमत और लोगों की मुश्किलों को दूर करने की कोशिश करना इस्लाम की नज़र में एक बहुत बड़ी इबादत है। साथ ही अगर इंसान ये कोशिश ख़ुदा को ख़ुश करने और राज़ी करने के लिए करे तो यह रूह को पाक करने, उसकी परवरिश करने और ख़ुदा के क़रीब पहुँचने का ज़रिया भी बनती है।

अफ़सोस की बात यह है कि बहुत से लोग सही इस्लाम को न जानने की वजह से इस बड़ी इस्लामी इबादत पर ध्यान नहीं देते...इबादत और ख़ुदा के क़रीब पहुँचने का ज़रिया सिर्फ़ नमाज़, रोज़ा, दुआ, ज़ियरत और ज़िक्र वग़ैरा को ही समझते हैं। ●

(सोर्सः ख़ुदसाज़ी)

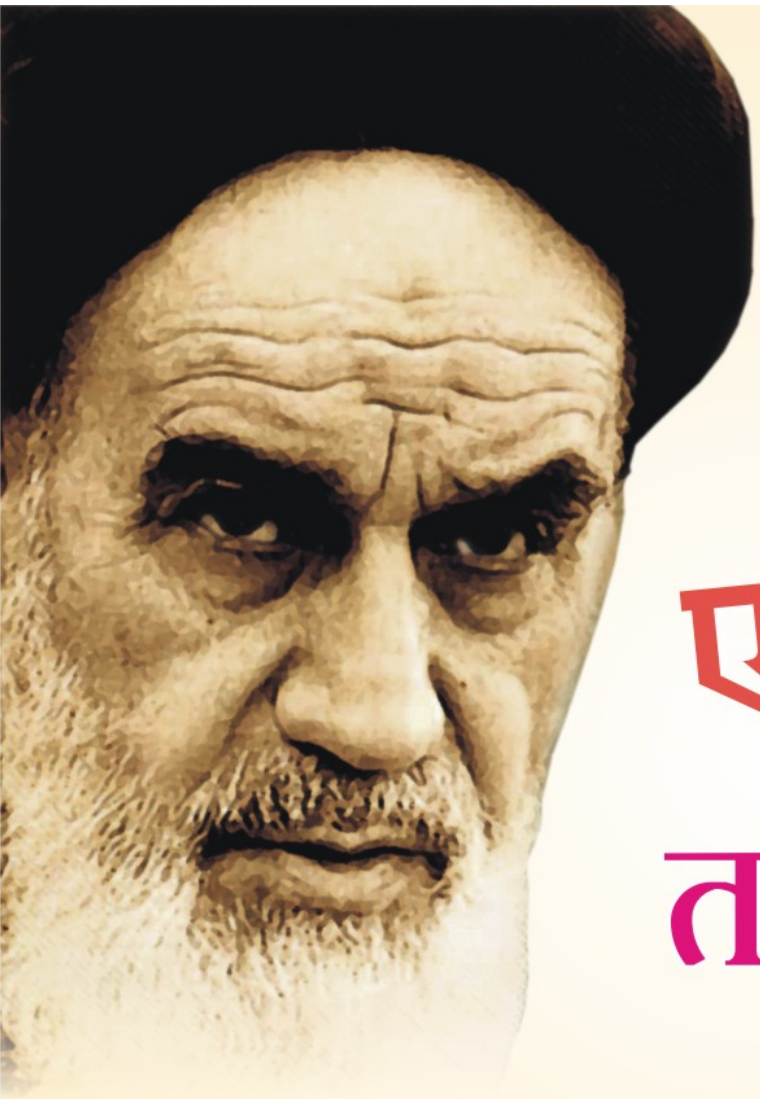

एजुकेटेड तबक़े की अहमियत

■ आरिफ़ अली

हम सब जानते हैं कि एक मुल्क, क़ौम और सोशल सिस्टम की क़िस्मत आम लोगों के बाद एजुकेटेड लोगों के हाथों में होती है। आज के साम्राज का सबसे बड़ा मक़सद समाज के इसी हिस्से के सेंटर्स पर क़ब्ज़ा करना है। आख़िरी दस सालों में हमारे मुल्क ने जितना नुक़्सान उठाया और तकलीफ़ों को बर्दाशत किया है वह इसी हिस्से के ग़द्दारों की बदौलत था। पश्चिमी कल्चर से मुतास्सिर सो-कॉल्ड मार्डन तबक़े ने जो ज़ाहिरी तौर पर यूनिवर्सिटी से निकला था लेकिन हक़ीक़त में उसकी सोच प्राइमेरी और मिडिल स्कूलस में तैयार हुई थी, मुल्क व क़ौम को साम्राजी ताक़तों के इशारों पर चलने पर मजबूर कर दिया था और हमारे मुल्क व दीन की तहज़ीब व कल्चर को बहुत ज़्यादा नुक़्सान पहुंचाया था क्योंकि पश्चिमी और पूरबी ब्लाक से जुड़ने के लिए जो कुछ उन लोगों से हो सकता था उन्होंने किया। चूंकि वह पढ़े-लिखे थे इसलिए उन्होंने पश्चिमी और पूरबी ब्लाक से जुड़ने का बोझ अपने कंधों पर उठाया था और रौशनी लेकर घर आने वाले चोरों की तरह अपने आक़ाओं की जेबें ख़ज़ानों से भर दी थीं।

दुश्मन मुल्कों में स्टुडेंट्स को भेजना दूसरों को अपना आक़ा बनाने जैसा है

यह भी बता देना ज़रूरी समझता हूं कि हमारी यूनिवर्सिटीज़ पश्चिमी दुनिया के मुट्ठी भर चाहने वालों और ख़ुद को दूसरों के हाथों बेच चुके लोगों या कुछ ऐजेन्टों के हाथ में थी जबकि अपने फ़र्ज़ को पहचानने वाले और मुख़्लिस स्कालर्स बहुत कम थे, उनसे पॉवर छीन ली गई थी। दूसरी तरफ़ पश्चिमी कल्चर में डूबे हुए लोगों की मेजॉरिटी नौजवानों को वेस्टर्न लाइफ़-स्टाइल का दीवाना बना रही थी। उनकी खेप की खेप मुल्क से बाहर भेजी जा रही था जबकि साम्राजी हाथ अपना काम दिखा रहा था। जब तक साम्राज की मर्ज़ी होती उस वक़्त तक नौजवानों को वहां रखा जाता, फिर उन्हें ग़ैर इस्लामी और पश्चिमी सोच के साथ मुल्क वापस भेज दिया जाता और यह इस्लामी मुल्कों और उन जैसे दूसरे मुल्कों के लिए इस सदी में होने वाला एक ऐसा हादसा था जिसके नुक़्सानों को कोई भी समझदार आसानी से समझ सकता है।

यूनिवर्सिटीज़ पर पश्चिमी सोच वालों का कंट्रोल

कितने अफ़सोस की बात है कि यूनिवर्सिटीज़ और कालेजों को ऐसे हाथों में दे दिया जाता था और नौजवानों को ऐसे लोगों से तालीम व तरबियत हासिल करनी पड़ती थे जिनमें मज़लूम व महरूम माइनॉरिटीज़ के अलावा बाक़ी सब पश्चिमी या पूरबी कल्चर से मुतास्सिर थे और बाक़ायदा प्लानिंग के साथ यूनिवर्सिटीज़ पर थोपे गए थे। इसलिए हमारे अज़ीज़ व मज़लूम नौजवान मजबूरन उन ताक़तों से जुड़े भेड़ियों के जाल में गिरफ़्तार हो गए जो क़ानून बनाने वाले इदारों, हुकूमत और अदालत की कुर्सियों पर जमे बैठे थे और ज़ालिम पहलवी हुकूमत उन्हीं की उंगलियों

पर नाचती थी।

यूनिवर्सिटी स्टुडेंट्स को वेस्टर्न कल्चर से इम्प्रेस्ड नहीं होना चाहिए

आप को ख़ुद इस बात का इरादा करना चाहिए कि पश्चिम कल्चर की पूजा और उसे अपना रोल-माडल बनाने से बचें। आपको चाहिए कि अपने खोए हुए जौहर की तलाश शुरू कर दें। आज हमारी ज़मीन अपने असल कल्चर को फ़रामोश कर चुकी है। अगर आप आज़ादी चाहते हैं तो जुझारू बनने की ज़रूरत है। समाज के हर तबक़े की बुनियादी सोच यह होनी चाहिए कि वह हर जगह पर ख़ुद मौजूद रहे। किसानों का मक़सद यह होना चाहिए कि अपनी रोज़ी ख़ुद ज़मीन से हासिल करें और उनके कारख़ाने सेल्फ़-डिपेंडेंट हों ताकि हमारा मुल्क इंडस्ट्रियल फ़ील्ड में तरक़्क़ी कर सके। इसी तरह यूनिवर्सिटियों को भी सेल्फ़-इंडिपेंडेंट होना चाहिए ताकि वेस्टर्न कल्चर का असर कम हो सके। हमारे नौजवान, स्कालर्स और प्रोफ़ेसर्स को पश्चिमी दुनिया से नहीं डरना चाहिए और पश्चिमी दुनिया के मुक़ाबले में उठ खड़े होने और उससे न डरने का फैसला कर लेना चाहिए।

साम्राजी मुल्कों में स्टुडेंट्स को भेजने से बचना चाहिए

हमारे ख़ुद के पैदा किए हुए अपने पिछड़ेपन के बाद दूसरे मुल्कों की बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज़ के साथ हमारा जुड़ना एक ऐसी हक़ीक़त है जिससे इंकार नहीं किया जा सकता लेकिन इसका यह मतलब नहीं है कि हम माडर्न साइंस के मैदान में किसी एक ब्लाक से जुड़ जाएं, हमारे मुल्क की यह कोशिश होनी चाहिए कि अपने मुख़्लिस और फ़र्ज़ को पहचानने वाले स्टुडेंट्स को उन मुल्कों में भेजें जहां भारी और बड़ी-बड़ी इंडस्ट्रीज़ मौजूद हों और वह साम्राज के जाल से भी आज़ाद हों। इसलिए साम्राजी ब्लाकों से जुड़े मुल्कों में स्टुडेंट्स को भेजने से बचा करें मगर यह कि इंशाअल्लाह एक दिन ऐसा आ जाए जब यह ताक़तें अपनी ग़ल्ती को मान लें और इंसानियत, इंसान दोस्ती और दूसरों के राइट्स का एहतेराम करने के रास्ते पर चलना शुरू कर दें या इंशाअल्लाह दुनिया के कमज़ार मगर बेदार और अपने फ़र्ज़ को पहचानने वाले लोग उन्हें सबक़ सिखा दें। ऐसे ही एक रोज़ की उम्मीद के साथ...

किराए पर ऊँट

हारून रशीद को यह ख़बर दी गई कि इमाम मूसा काज़िम[अ0] के सहाबी, सफ़वान जम्माल ने सारे ऊँट बेच दिए हैं इसलिए बादशाह को हज का सामान ले जाने के लिए किसी दूसरी चीज़ का इंतेज़ाम करना चाहिए। बादशाह यह सुनकर हैरत में पड़ गया। उसने सोचा कि अचानक ऊँट बेचने की क्या वजह है जबकि हम से यह बात तय हो चुकी है कि हज के सफ़र पर ले जाने का सामान ऊँट पर ले जाया जाएगा। यह कोई मामूली बात नहीं थी। इसलिए सफ़वान को बुलाकर पूछा, "मैंने सुना है कि तुमने सारे ऊँट बेच दिए हैं ?"

"हाँ, ऐ अमीरुलमोमिनीन!"

"क्यों ?"

"मैं बूढ़ा हो गया हूँ और मुझ से काम नहीं हो पाता है। इसलिए बेचने में ही भलाई देखी।"

"सच-सच बताओ कि क्यों बेचे हैं ?"

"यही बात है जो मैंने बताई है।"

"लेकिन मैं जानता हूँ कि तुमने क्यों बेचे हैं ? ज़रूर तुम्हें इमाम मूसा काज़िम[अ0] ने रोका है। मेरे और तुम्हारे बीच सामान उठाने और ले जाने की बात से बाख़बर होकर उन्होंने तुम्हें ऊँट बेचने का हुक्म दिया है, अचानक तुम्हारा इरादा बदलने की वजह यही है।"

फिर हारून तैश में बोला, "सफ़वान! अगर तुमसे पुरानी दोस्ती न होती तो तुम्हारा सर तन से अगल कर देता।"

हारून ने सही अंदाज़ा लगाया था। सफ़वान ख़लीफ़ा के क़रीबी लोगों में माने जाते थे और ख़लीफ़ा से अच्छे ताल्लुक़ात थे लेकिन वह अहलेबैत के मुख़लिस शियों में से भी थे। सफ़वान ने हज के बारे में हारून से वादे के बाद एक दिन इमाम मूसा काज़िम[अ0] से मुलाक़ात की तो इमाम ने कहा, "सफ़वान एक काम के अलावा तुम्हारे सब काम अच्छे हैं।"

"ऐ फ़रज़न्दे रसूल! वह एक काम क्या है ?"

"वह यह कि तुमने अपने ऊँट हारून को किराए पर दिए हैं।"

"ऐ मौला! मैंने ऊँट किसी हराम सफ़र के लिए किराए पर नहीं दिए हैं। हारून ने हज का इरादा किया है। हज के सफ़र के लिए ऊँट किराए पर दिए हैं। इसके अलावा मैं ख़ुद भी साथ नहीं जाऊँगा बल्कि कुछ लोगों के साथ ग़ुलामों को भेज दूँगा।"

"सफ़वान! अच्छा तुमसे एक सवाल करूँ ?"

"फ़रमाइए! ऐ फ़रज़न्दे रसूल।"

"तुम ने ऊँट इसलिए किराए पर दिए हैं ताकि किराया हासिल करो, वह तुम्हारे ऊँट ले जाएगा और तुम भी चाहोगे कि तुम्हारा किराया तुम्हें मिल जाए। क्या ऐसा नहीं है ?"

"हाँ, ऐसा ही है।"

"क्या तुम यह नहीं चाहोगे कि हारून कम से कम इतने दिन ज़िंदा रहे जब तक कि वह तुम्हारा किराया न दे दे ?"

"क्यों नहीं, फ़रज़ंदे रसूल।"

"जो इंसान चाहे किसी भी तरह से ज़ालिमों के बाक़ी रहने को पसंद करता हो वह उन्हीं में से गिना जाएगा। यह तो साफ़ ही है कि जो भी ज़ालिमों में गिना जाएगा वह जहन्नम में जाएगा।"

इसके बाद सफ़वान ने पक्का इरादा कर लिया कि सारे ऊँट बेच देंगे। वैसे वह ख़ुद भी इस बात का अंदाज़ा लगा रहे थे कि हो सकता है कि उन्हें इसके बदले जान की बाज़ी लगाना पड़े।

सर का दर्द

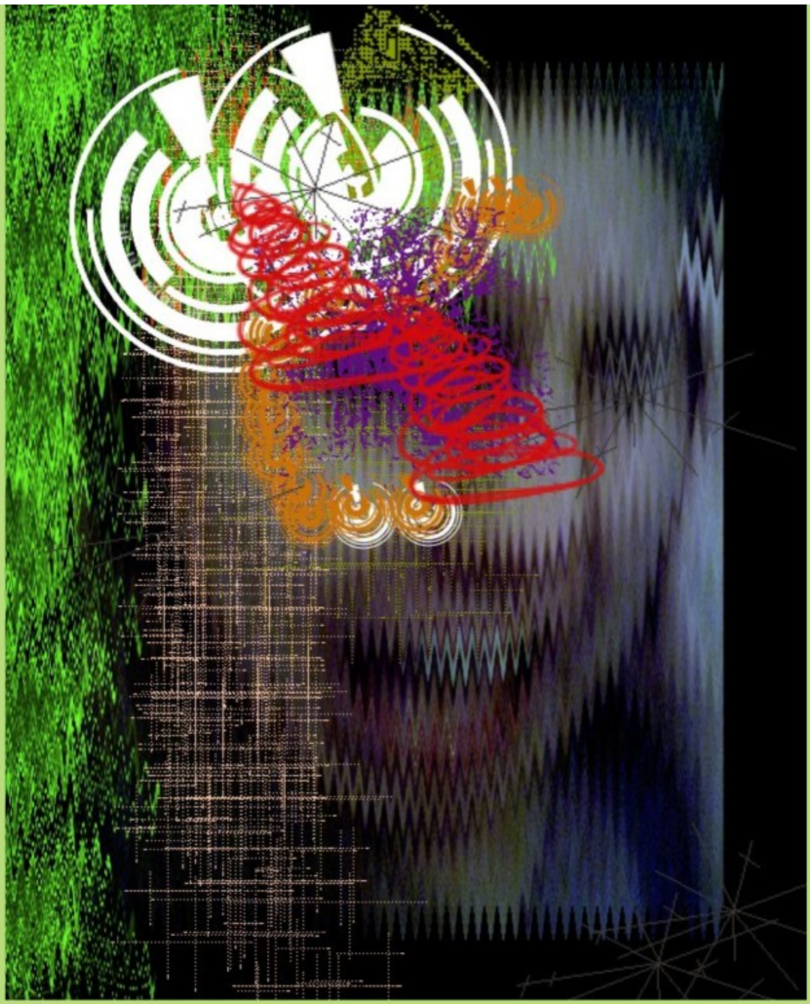

बहुत कम ऐसे खुशनसीब होंगे जिन्हें सर के दर्द की तकलीफ़ न हुई हो, वरना इस तेज़ रफ़्तार दौर में सर का दर्द एक ऐसी तकलीफ़ है जिसे आमतौर पर न तो बीमारी समझा जाता है और न ही इसकी पहचान या बाक़ाएदा इलाज की ज़रूरत समझी जाती है।

सर के दर्द के लिए आम तौर पर दर्द को दूर करने वाली गोलियाँ इस्तेमाल की जाती हैं जिनमे कुछ सूरतों के अलावा फ़ायदा भी होता है। ऐसे लोग जो सर दर्द के मुस्तक़िल मरीज़ हैं और जिनके दर्द ने उनकी ज़िंदगी परेशान कर रखी है वह अपने इलाज के लिए अस्पतालों का रुख़ करते हैं। आमतौर पर कभी कभार होने वाले सर के दर्द के लिए लोगों ने अपने मिज़ाज, आदतें और तर्जुबे की बुनियाद पर इस से छुटकारे के तरीक़े पता लगा लिए हैं। कुछ लोग सर दर्द को दूर करने वाली गोलियों का सहारा लेते हैं, कुछ लोगों का दर्द चाए की एक प्याली दूर कर देती है, कुछ लोग नहा कर या कुछ देर नींद लेकर अपने सर के दर्द को क़ाबू में कर लेते हैं। लेकिन कभी-कभी ऐसा कोई भी फ़ार्मूला काम आने वाला नहीं दिखता और डाक्टरों को दिखाना पड़ता है।

एक्सपर्ट्स की राय में आमतौर से दो तरह के दर्द होते हैं। एक को माइग्रेन और दूसरे को टेंशन कहते हैं। एक्सपर्ट्स ये भी समझते हैं कि टेंशन के दर्द से ज़्यादा सख़्त दर्द माइग्रेन में होता है हालांकि दोनों तरह के दर्दों में, दिमाग़ में होने वाले मेकेनिज़्म में कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता है।

ये मेकेनिज़्म उस वक़्त अपना रिएक्शन दिखाता है जब दिमाग़ के कीमियाई अमल में गड़बड़ी से ज़हनी कनेक्शन टूट जाता है, जिसके नतीजे में ख़ून की रगें मुतास्सिर होकर दर्द पैदा करने लगती हैं। इसके बावजूद माइग्रेन की अलामतें कुछ अलग होती हैं। इसीलिए माइग्रेन पर वह दवाएं असर नहीं करतीं जो टेंशन के दर्द में फ़ाएदा पहुँचाती हैं। सर के दर्द के लिए निशानियों को देखकर सर के दर्द की क़िस्म का अंदाज़ा लगाकर ही इलाज की तरफ़ ध्यान देना चाहिए।

एक अंदाज़े के मुताबिक़ तक़रीबन 70% औरतें माइग्रेन के दर्द का शिकार होती हैं। इसमें वह औरतें शामिल नहीं हैं जिनके सर में आम दर्द होते हैं और उन्हें पता ही नहीं चलता कि उनके दर्द की हालत क्या है। सर के दर्द के लिए आमतौर पर स्प्रिन का इस्तेमाल पूरी दुनिया में आम है। किसी भी तरह के सर के दर्द में स्प्रिन पर ही भरोसा किया जाता है चाहे उस से दर्द में कमी हो या न हो। माहिरों का कहना है कि आमतौर पर माइग्रेन के दर्द की न तो पहचान ही की जाती है और न ही समझा जाता है और इसका इलाज स्प्रिन से करने की कोशिश की जाती है।

हाल ही में माइग्रेन के इलाज के लिए Depokote Devalproex नामी दवा मार्केट में आई है जो ऐसे मरीज़ों को दी जाती है जिन्हें एक महीने में तीन बार से ज़्यादा ये दर्द होता है और इस सख़्त दर्द में किसी आम दवा से फ़ायदा नहीं होता।

बहरहाल इन दवाओं का ख़ुद से इस्तेमाल ख़तरनाक हो सकता है इसलिए उन्हें अपने डाक्टर के मश्वरे से ही इस्तेमाल करना चाहिए। माइग्रेन के पैदा होने से पहले इसकी रोकथाम और इसके पैदा होने के बाद शिद्दत को कम या ख़त्म करने का इलाज दवाओं के इस्तेमाल के अलावा दूसरे ज़रियों से भी कामयाबी से किया जाता रहा है जिसमें एक्युपंक्चर (Acupuncture) सबसे ऊपर है लेकिन इस इलाज में ये बुराई है कि ये हर जगह और हर वक़्त नहीं मिलता। इसलिए इस तरीक़े का इस्तेमाल कम हो रहा है।

माइग्रेन के दर्द को दूर करने के लिए बायो-फ़ीडबैक (Biofeedback) इलाज का तरीक़ा ज़्यादा कामयाब है जिससे माइग्रेन के दर्द की सख़्ती को काफ़ी हद तक कम किया जा सकता है। इस इलाज के तरीक़े में डाक्टर कहते हैं कि मरीज़ का इलाज इस तरह किया जाता है कि मरीज़ अपने आसाब को पुरसुकून रख कर आराम की हालत में अपनी नब्ज़ और जिस्म की हरारत के दर्जे को बराबरी पर लाता है। इस तरह से माइग्रेन का दर्द धीरे-धीरे कम होता चला जाता है।

सर का सख़्त धड़कता हुआ झटकों की सूरत में दर्द जो आमतौर पर सर के एक तरफ़ होता है माइग्रेन की निशानियों में से है। इसकी दूसरी निशानियों में नाक का सेंस्टिव हो जाना, रौशनी व ख़ुश्बू से एलर्जिक हो जाना है जिसमें आमतौर पर उबकाईयाँ और उलटियाँ भी हो सकती हैं।

सर के दूसरी तरह के दर्द जिन्हें टेंशन के दर्द (Tension Headaches) कहा जाता है, में दर्द की

हालत इस तरह की होती है जैसे सर के चारों तरफ़ कसी हुई पट्टी बंधी हो जिसके दबाव और बंदिश से दर्द महसूस हो। ये दर्द हल्के-हल्के शुरु होकर तेज़ और सख़्त हो जाता है जिस से अक्सर गर्दन, चेहरे और कांधों में भी दर्द महसूस होता है। टेंशन के दर्द की वजहों में आसाबी तनाव, ज़हनी दबाव, थकन, झुंझलाहट, बहसबाज़ी, तकरार, कड़वी बातें, मायूसी के अलावा सड़कों पर रहने वाला लम्बा जाम भी इस दर्द की वजह हो सकता है जबकि उठने बैठने की ग़लत आदतें भी इस तरह के दर्द की वजह बन सकती हैं। कुछ लोगों में ये दर्द कभी कभार होता है जबकि कुछ लोग अक्सर देर तक इस दर्द में गिरफ़्तार रहते हैं।

ऐसे दर्द आमतौर पर नीचे दी हुई चीज़ों को दूर करने या दर्द दूर करने वाली दवाओं के इस्तेमाल करने से दूर हो जाते हैं जबकि बायो-फ़ीडबैक के काम करने का तरीक़ा इस तरह के दर्द में एक ही तरह काम आने वाला साबित होता है। इस तरह के दर्द दूर करने के लिए डाक्टरों ने तीन मरहलों वाला एक तरीक़ा बनाया है जिसकी आदत डालने से ऐसे दर्द से निजात मिल सकती है। डाक्टर्स कहते हैं:

1- वह काम जो आप कर रही हैं उसे छोड़ दें। अपनी आँखें बंद करके दस से पन्द्रह बार बहुत गहरी-गहरी सांस लें। इस दौरान अपनी सांस पर ध्यान दें।

2- अपने जिस्म के तमाम हिस्सों को ढीला छोड़ दें और सोचें कि आपके जिस्म के सारे हिस्से गर्म, भारी और आराम देने वाले हो रहे हैं और ये आराम देने वाली हालत आपके पैरों से शुरु होकर आपके सर की तरफ़ जा रही है और फैल रही है।

3- अब आप अपनी किसी पसंदीदा जगह को सोचें जैसे समुन्द्र का किनारा, पहाड़ियाँ, वादियाँ या फिर आपके सोने की जगह। इस मंज़र में अपने आपको बसा लें और गहरी-गहरी सांसें लेती रहें।

डाक्टर कहते हैं कि इस तरीक़े को अगर दिन में दो तीन बार दोहराया जाए तो आपको सर के दर्द से छुटकारा मिल जाएगा। इस तरीक़े को दर्द के बीच में भी इस्तेमाल किया जा सकता है जिसके नतीजे में पन्द्रह से बीस मिनट के अंदर आपको दर्द से छुटकारा मिल जाएगा।

डाक्टरों की राय है कि एक्सर्साइज़ की आदत रखने वाले लोग सर के दर्द की शिकायत से आमतौर पर कम दोचार होते हैं। ऐसे सर दर्दों से बचाव के लिए डाक्टर कहते हैं कि फ़ुरसत के वक़्त जब आप अंधेरे और सन्नाटे वाली जगह पर आराम कर रही हों तो उस वक़्त अपने सर के पीछे आइस बैग रख लें तो भी आप को सुकून का एहसास होगा और आप सर दर्द की शिकायत से बच सकती हैं। दर्द की हालत में कुछ मिनट का आराम भी आपके आसाब को पुरसुकून करके आपको दर्द से छुटकारा दिला सकता है। आराम के ज़रिए थोड़ी सी आराम देने वाली हालत में कुछ देर आँखें बंद करके जिस्म को ढीला छोड़कर भी आप ये फ़ाएदा हासिल कर सकती हैं।

सर के दर्द के एक्सपर्ट्स ने दर्द की पाँच वजहें बताई हैं और जिनका इलाज भी बताया है। हो सकता है कि आपके सर के दर्द की वजहें एक्सपर्ट्स की बताई हुई वजहों के क़रीब-क़रीब हों जिससे आप फ़ायदा उठा सकती हैं।

1-दर्द दूर करने वाली दवाएं (Pain Killer)

निशानियाँ: दवा का असर ख़त्म होने के बाद दर्द लौट आता है।

ये बात शायद समझ में न आए कि दर्द दूर करने वाली दवाएं भी सर के दर्द की वजह बन सकती हैं लेकिन एक्सपर्ट्स इसे सही मानते हैं। इनके ख़याल में दर्द दूर करने वाली दवाएं भी कभी-कभी सर के दर्द की वजह बन जाती हैं। इस सिलसिले में वह ये वजह पेश करते हैं कि दर्द की हालत में जब कोई पेन किलर लेता है तो उसके ख़ून में दवा की सतह बुलंद हो जाती है और वह वक़्ती तौर पर आराम महसूस करता है लेकिन जैसे-जैसे ख़ून में दवा की सतह कम होने लगती है, दर्द लौट आता है।

डाक्टर कहते हैं कि कुछ दवाएं ज़्यादा मिक़दार में लेने से ऐसी हालत होने लगती है। इस तरह के दर्द को पलटकर आने वाला असर (Rebound Effect) कहा जाता है। इस तरह की सूरत में जैसे-जैसे आप दवाएं इस्तेमाल करते हैं वैसे-वैसे जलती आग पर तेल डाल रहे होते हैं।

ऐसे लोगों के लिए डाक्टर बताते हैं कि ऐसे लोग सर दर्द की शिकायत की सूरत में ज़्यादा से ज़्यादा हफ़्ते में दो बार दर्द दूर करने वाली दवा लिया करें और कभी भी दवा की तजवीज़ की हुई ख़ूराक से ज़्यादा न लें। अगर सख़्त दर्द हो जाए तो फ़ौरन डाक्टर से मिलना चाहिए।

2-आराम (Rest and Relaxation)

निशानियाँ: झटके देने वाला दर्द जिसमें उबकाइयाँ आती हैं। दर्द उस वक़्त होता है जब हफ़्ते भर की थकन के बाद आराम किया जाए।

आप यक़ीन करें या न करें लेकिन ये हक़ीक़त है कि जब आप बराबर काम और दबाव के बाद अचानक आराम करती हैं तो आपको लगता है कि आपके सर को शिकंजे में जकड़ लिया गया है जिसके नतीजे में आप बेचैनी के साथ ज़्यादा देर बिस्तर पर रहती हैं, देर तक सोती हैं या फिर आपके रोज़ाना के काम के वक़्त बदल जाते हैं। कुछ लोगों को हफ़्तावार छुट्टी के दिन सख़्त सर के दर्द से वास्ता पड़ता है।

डाक्टरों की राय में बराबर बिज़ी होने के बाद जब आदमी आराम करता है तो अचानक सर का दर्द उसे घेर लेता है और उसका जिस्म टूटने लगता है। ऐसे लोगों के लिए डाक्टर कहते हैं कि उन्हें सोने और जागने के प्रोग्राम के हिसाब से वक़्तों की पाबंदी और अपने ज़हन को दबाव से आज़ाद करने की कोशिश करना चाहिए और खाने पीने के वक़्तों की पाबंदी करनी चाहिए। ऐसे लोगों के लिए ज़रूरी है कि वह किसी न किसी तरह की एक्सर्साइज़ ज़रूर करें। योगा, तेज़-तेज़ चलना, जागिंग वग़ैरा भी उन्हें इस तकलीफ़ से छुटकारा दिल सकते हैं।

3- नाक के गुदूद (Sinus Trouble)

निशानियाँ: सर के ऊपरी हिस्से पर दबाव या नाक के गुदूद की ख़राबी, नाक में ज़्यादा मिक़दार में नमी का जमा होना और कभी-कभी बुख़ार हो जाना।

कभी-कभी नाक के गुदूद में ख़राबी और

सलामुन अलैकुम

सफ़र की 'मरयम' कल पोस्टमैन लेकर आया। महीने के शुरू से ही इसका इंतेज़ार था। काफ़ी इंतेज़ार करना पड़ा। मैगज़ीन इतनी अच्छी है कि दिल चाहता है कि अगला इश्यु फ़ौरन ही मिल जाए। मैंने अपनी एक दोस्त का एड्रेस आपको मेल किया है। प्लीज़! इस एड्रेस पर भी मैगज़ीन जारी कर दीजिए।

ख़ुदा आप सबकी तौफ़ीक़ात में इज़ाफ़ा करे!

बिलक़ीस फ़ातिमा
बैंगलोर

आदाब!

एडीटर साहब!

मरयम की हर चीज़ अच्छी है। बस एक ख़राबी है कि इंतेज़ार बहुत कराती है।

सकीना शाहीन
सीवान, बिहार

सलामुन अलैकुम

आपको मैगज़ीन पसंद आ रही है, पढ़कर बहुत अच्छा लगा। जहां तक मैगज़ीन के देर में आप तक पहुंचने की बात है उसके लिए सिर्फ़ इतना कहना है कि हमारी पूरी कोशिश होती है कि मैगज़ीन वक़्त पर पहुंच जाए। एक बड़ी मुश्किल डाक की भी है जिसकी वजह से भी गैगज़ीन देर से पहुंचती है।

एडीटर, मरयम मैगज़ीन

अस्सलमु अलैकुम

जनाब एडीटर साहब!

मैंने एक आर्टिकिल मरयम के लिए मेल किया है। प्लीज़! अगर मरयम के स्टेंडर्ड का हो तो छाप दीजिएगा।

इरम ज़ेहरा
मुरादाबाद

सलामुन अलैकुम

एडीटर साहब!

'मरयम' नाम के लिहाज़ से अपनी पाकीज़गी से हमारी ज़ेहनी सलाहियत और मज़हबी मालूमात को पाक करती हुई आगे बढ़ रही है। सफ़र के एडीशन में 'दास्ताने करबला' और बच्चे की साइकॉलोजी का काम्बिनेशन बहुत अच्छा लगा। मुझे ख़ुशी है कि 'मरयम' हमारे बीच आ चुकी है।

फ़क़त
अलविया, लखनऊ

एलर्जी की वजह से नाक बंद हो जाने से भी सर का दर्द हो जाता है लेकिन ये दर्द इतना आम नहीं है फिर भी इस तरह का दर्द दस में से एक शख़्स को हो सकता है। उसूली तौर पर ऐसा दर्द माइग्रेन ही होता है। नाक के गुदूद की ख़राबी को अगर सर का दर्द कहा जाए तो भी उन गुदूद का इलाज माहिर डाक्टर ही से कराना ज़रूरी हो जाता है।

4-थकन (Exertion)

कभी दर्द थकावट से भी पैदा हो जाता है जिसमें जिस्मानी थकन, खांसी, काफ़ी देर तक झुकने या कूदने वाला काम, वज़न उठाने, सेक्स के बाद की थकन से ये दर्द अचानक हो सकता है। डाक्टर इसे थकन का माइग्रेन भी कहते हैं।

ऐसे दर्द की असल वजहें तो मालूम नहीं हो सकीं हैं लेकिन ये दर्द अचानक या फिर बराबर बढ़कर सर पर बोझ सा बन जाता है। अगर आपका ऐसे दर्द से बार-बार वास्ता पड़ता है तो आपको अपने डाक्टर से ज़रूर मश्वरा करना चाहिए क्योंकि ये ख़तरनाक भी हो सकता है। अगर ये मालूम हो जाए कि एक्र्सासाइज़ या जिंसी अमल के बाद ये दर्द होता रहता है तो इसके लिए अपने डाक्टर से मश्वरे के बाद नाक में डालने वाले ड्राप्स इस्तेमाल करने चाहिएं।

5-हार्मोंज़ की शिद्दत (Harmonal Surges)

निशानियाँः ये दर्द माइग्रेन ही की तरह हो सकता है लेकिन औरतों में हर महीने पीरियड्स से पहले, बीच में या बाद में हो सकता है या फिर प्रेग्नेन्सी के बीच भी हो सकता है। इस तरह का दर्द बच्चों में चाहे लड़का हो या लड़की, दोनों में हो सकता है लेकिन इक्कीस साल की उम्र के बाद दो तिहाई औरतें ही इस्का शिकार होती हैं। सर दर्द के माहिर इस तरह के दर्द की वजह एलेस्ट्रोजेन (हारमोन) बताते हैं। कुछ औरतों में एलेस्ट्रोजेन के उतार-चढ़ाव से ये दर्द हो जाता है जो अपनी शिद्दत में कम से कम और सख़्त से सख़्त हो सकता है। कुछ औरतों को पीरियड्स से पहले या बाद में होता है। प्रेग्नेन्सी के बीच और पीरियड्स के ख़त्म होने से पहले या बीच में भी ये दर्द होता है। वैसे ये दर्द ज़्यादातर औरतों को पीरियड्स के बीच में ही होता है या उन औरतों को भी होता है जो एंटी प्रेग्नेन्सी टेब्लेट्स या दवाएं इस्तेमाल करती हैं। बदक़िस्मती से एलेस्ट्रोजेन के उतार-चढ़ाव से होने वाले दर्द का कोई ख़ास इलाज नहीं है।

शाबाश! एलिया

एलिया बेल्जियम की रहने वाली हैं। उन्होंने हिजाब के बारे में एक नज़्म तलाश की। फिर उसको बार-बार प्रिन्ट कराया, छोटा-बड़ा किया, अल्फाज़ कांटे-छांटे और फिर इन्हीं अलफ़ाज़ से एक ऐसा ख़ूबसूरत ख़ाका बनाया जो इस्लामी हिजाब में एक लड़की का चेहरा पेश कर रहा था।

एलिया के इस ख़ाके को उनके हाईस्कूल में नुमाइश के तौर पर लगाया गया जिसका बड़ा पॉज़िटिव रिस्पॉन्स सामने आया, स्टूडेन्ट्स की तरफ़ से भी और टीचर्स की तरफ़ से भी। सबने इस ख़ूबसूरत कोशिश की बहुत तारीफ़ की। कुछ लड़कियों पर तो इस ख़ाके और इस नज़्म का इतना असर पड़ा कि उन्होंने भी हिजाब शुरु कर दिया।

इस ख़ाके और नज़्म ने हिजाब के फ़ल्सफ़े को इतने दिलकश अंदाज़ में पेश किया है कि जो भी देखता है वह इसकी तरफ़ खिंच जाता है।

आर्ट, किसी भी मैसेज को पहुँचाने के लिए एक बेहतरीन टूल है।

इस ख़ाके में जो नज़्म लिखी हुई है उसका टाइटेल है: "WHO AM I?" यानी मैं कोन हूँ?

Who Am I?

What do you see
when you look at me
Do you see someone limited, or someone free

All some people can do is just look and stare
Simply because they can't see my hair

Others think I am controlled and uneducated
They think that I am limited and un-liberated

They are so thankful that they are not me
Because they would like to remain 'free'

Well free isn't exactly the word I would've used
Describing women who are cheated on & abused

They think that I do not have opinions or voice
They think that being hooded isn't my choice

They think that the hood makes me look caged
That my husband or dad are totally outraged

All they can do is look at me in fear
And in my eye there is a tear

Not because I have been stared at or made fun of
But because people are ignoring the one up above

Maybe the guys won't think I am a cutie
But at least I am filled with more inner beauty

See I have declined from being a guy's toy
Because I won't let myself be controlled by a boy

Real men are able to appreciate my mind
And aren't busy looking at my behind

Hooded girls are the ones really helping the muslim cause
The role that we play definitely deserves applause

I will be recognized because I am smart and bright
And because some people are inspired by my sight

The smart ones are attracted by my tranquility
In the back of their mind they wish they were me

We have the strength to do what we think is right
Even if it means putting up a life long fight

You see we are not controlled by a mini skirt and tight shirt
We are given only respect, and never treated like dirt

We are the ones that are free and pure
We're free of STD's that have no cure

So when people ask you how you feel about the hood
Just sum it up by saying 'baby its all good'.

-Author Unknown

हमारे जिस्म के अंदर अल्लाह की निशानियां

■ मौहम्मद अली सैय्यद

"हम बहुत जल्दी अपनी निशानियों को तमाम अतराफ़े आलम में और खुद उनके नफ़्स के अंदर दिखलाएंगे ताकि उन पर यह बात साफ़ हो जाए कि वह बरहक़ है।"
(सूरए फ़ुस्सेलत/53)

यूं तो अल्लाह की हर मख़लूक़ उसकी अनोखी, अछूती और अक़्ल को हैरान कर देने वाली मख़लूक़ है लेकिन इंसान को अल्लाह तआला ने अशरफ़ुल मख़लूक़ात कहा और उसे हर मख़लूक़ पर फ़ज़ीलत दी। हज़रत अली[अ०] ने फरमाया है कि इंसान के जिस्म की इस छोटी सी दुनिया में एक बहुत बड़ी कायनात छुपी हुई है। जिस्म की इस इतनी बड़ी कायनात का नज़ारा आज से चौदह सौ साल तो क्या आज से सौ साल पहले भी मुमकिन नही था। अल्लाह की निशानियां जिनके बारे में हम आगे चलकर बात करेंगे और जिनकी तरफ़ अल्लाह तआला ने हमारा डेढ़ हज़ार साल पहले ध्यान दिलाया था, उनके बारे में पश्चिम का मार्डन समाज भी आज से सौ साल पहले तक बेख़बर था। आइए! आज की साइंस की मदद से अल्लाह की उन निशानियों का एक सरसरी सा नज़ारा करते हैं।

दुनिया की मौजूदा आबादी से सत्तरह हज़ार गुना ज़्यादा आबादी

इंसान के जिस्म की शरूआत एक CELL से होती है। यह इतना छोटा होता है कि उसे देखने के लिए ताक़तवर माइक्रोस्कोप की ज़रूरत पड़ती है। एक बालिग़ इंसान ऐसे ही क़रीब-क़रीब 60 ट्रिलियन (60000000000000000) छोटे-छोटे CELLS से मिलकर बनता है यानी दुनिया की मौजूदा आबादी से सत्तरह हज़ार गुना ज़्यादा आबादी खुद हर इंसान के अंदर मौजूद है। जितनी देर में आप पलक झपकते हैं उतनी देर में करोड़ों CELLS अपनी नेचरल ज़िंदगी पूरी करके मर जाते हैं लेकिन इतनी ही देर में करोड़ों नए CELLS पैदा हो जाते हैं।

हर सत्ताईस दिन बाद हमारी खाल बदल जाती है

जैसे Skin के CELLS हर दस घंटे बाद नए पैदा होते हैं और हर सत्ताईस दिन के बाद हमारी खाल पूरी तरह बदल जाती है। इसी तरह खून के RED CELLS एक मिनट में दस लाख से ज़्यादा मर जाते हैं। मगर इस मुद्दत में दूसरे दस लाख पैदा हो जाते हैं। हमारे सारे अंग और पूरा जिस्म इसी 'मखलूक़' यानी CELLS से बना है और यही CELLS पूरे जिस्म को न सिर्फ ज़िन्दा रखते हैं बल्कि उसे हर लम्हे एक नई ज़िन्दगी अता करते रहते हैं। यह सारे छोटे-छाटे वुजूद अपनी-अपनी अलग पहचान रखते हैं और अपनी पेचीदा ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह समझते हैं। यह हमारे जिस्म में अलग-अलग क़िस्मों की शक्ल में रहते हैं और हमारी सेहत और ज़िंदगी को बाक़ी रखने की इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी को पूरा करते रहते हैं। यह CELLS अल्लाह की मखलूक़ हैं जो इंसान को बनाते हैं।

अब से साढ़े तेरह सौ साल पहले हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने एक दहरिए, अबू शाकिर देसानी से अल्लाह के होने पर दलील देते हुए CELLS के बारे में बात की थी। CELLS के बारे में आपने फ़रमाया था, "क्या तुम उस मखलूक़ को जानते हो जिसे अल्लाह ने पैदा करके तुम्हारे जिस्म में काम पर लगा दिया है। उनकी तादाद रेगिस्तान की रेत के ज़र्रों से भी ज़्यादा है। यह मखलूक़ पैदा होती है, अपनी नस्ल बढ़ाती है और मर जाती है और उसकी जगह दूसरी पैदा होती रहती है और उसी की वजह से तुम ज़िन्दा रहते हो।"

साइंसदानों ने CELLS का पता कब लगाया?

CELLS का नज़ारा सबसे पहले एक ब्रिटिश साइंटिस्ट ने आज से तीन सौ साल पहले किया था। इस साइंटिस्ट का नाम रार्बट हुक था। उसकी किताब आज से 327 साल पहले 1665 ई० में छपी थी। CELLS की बाक़ाएदा रिसर्च 1930 ई० में इलेक्ट्रानिक माइक्रास्कोप की ईजाद के बाद ही हो सकी जो किसी चीज़ की दस लाख गुना बड़ी तस्वीर दिखा सकती है।

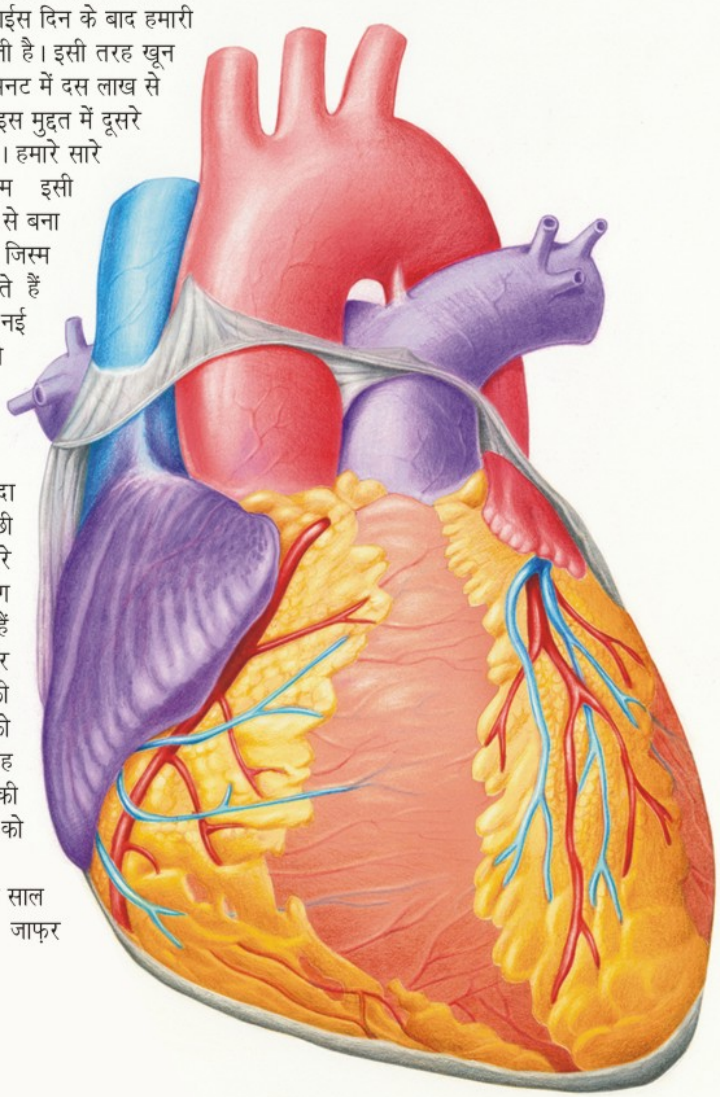

छोटी दुनिया-बड़ी दुनिया

हमारे जिस्म के CELLS में से हर CELL अल्लाह के पेदा करने वाला होने की और अक्लों को हैरान कर देने वाली निशानी है। हर CELL पर उसका DNA हुकूमत करता है और DNA पर रूह हुकूमत करती है। हर CELL में ज़िंदा रहने के लिए ताक़त पैदा करने वाले एक हज़ार पॉवर हाऊस (Mitochondria) हर वक़्त काम करते रहते हैं। CELLS में खामरे (Enzymes) होते हैं। एन्ज़ाइम को आप साइंटिस्टों की एक टीम कह सकते हैं। यह हज़म हो चुके खाने के अलग-अलग हिस्सों को एक पेचीदा कैमिकल अमल से गुज़ार कर उसे आपके जिस्म का हिस्सा बनाते हैं। एक CELL में छः सौ अलग-अलग एन्ज़ाइम काम करते हैं। इसके अलावा हर CELL में पानी पहुंचाने, उसकी निकासी, इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट, सेक्योरिटी, डिफ़ेंस और कम्युनिकेशन के ऐसे 'अल्ट्रा-मार्डन सिस्टम' काम करते हैं जिनके आगे आने वाली सदियों के साइंटिस्टों की अक़्लें भी दाँतों तले उंगली दबाती रह जाएंगी।

हर CELL के नन्हे से वुजूद में एक दुनिया आबाद होती है। हर CELL को ज़िंदा रहने के लिए आक्सीज़न, पानी, प्रोटीन, मिरेल्स, ग्लूकोज़, कार्बोहायड्रेट्स, इमाइनो एसिड्ज़, धातों और बेशुमार दूसरी चीज़ों की अलग-अलग मिक़दार में ज़रूरत होती है। यह सारी चीज़ें जिस्म की दुनिया और CELLS की पहुंच से बहुत दूर होती हैं। इन खरबों CELLS के 'रिज़्क़ का इंतेज़ाम' दुनिया के सबसे तेज़ रफ़्तार सप्लाई सिस्टम से लाखों गुना ज़्यादा तेज़ रफ़्तार सिस्टम के ज़रिए होता है।

रिज़्क़ पहुंचाने के लिए 125 अरब कारिंदे

अपनी इस मखलूक़ को उनके दरवाज़े तक रिज़्क़ पहुंचाने के लिए ख़ुदा ने हैरान कर देने वाले इंतेज़ाम किए हैं। कुदरत के इस सप्लाई सिस्टम में पच्चीस अरब (25000000000) से ज़्यादा कारिंदे शबो रोज़ काम करते हैं। यह कारिंदे ख़ून के RED CELLS हैं। ख़ून के RED CELLS दिल से पम्प होने के बाद सिर्फ डेढ़ मिनट में जिस्म की क़रीब 75 मील लम्बी ख़ून की छोटी बड़ी नालियों से गुज़र कर एक-एक हिस्से और एक-एक CELL को उसकी ख़ूराक पहुंचाते हैं और वापसी के सफ़र में यही RED CELLS जिस्म के हर CELL की इस्तेमाल शुदा ख़ुराक का फ़ुज़ला (कार्बन डाई आक्साइड और दूसरे फ़ालतू कैमिकल्स) अपने साथ समेट कर उन्हें दूसरे हिस्सों जैसे फेफड़े, जिगर, गुर्दे तक पहुंचा देते हैं जहां से यह फ़ालतू कैमिकल्स जिस्म से बाहर निकाल दिए जाते हैं। RED CELLS का यह 75 हज़ार मील लम्बा सफ़र सिर्फ़ 90 सेकेंड में पूरा हो जाता है। रिज़्क़ पहुंचाने का यह सिलसिला इंसान की पैदाईश से भी पहले शुरू हो जाता है और उसकी आखिरी सांस तक जारी रहता है।

75 हज़ार मील लम्बी पाईप लाईन

CELLS को रिज़्क़ पहुंचाने वाली पाईप लाईन (ख़ून की नालियों) की लम्बाई का अंदाज़ा इस तरह किया जा सकता है कि अगर इन तमाम नसों को सीधा करके एक लाईन में रखा जाए तो उनकी लम्बाई इतनी होगी कि पूरी ज़मीन के चारों तरफ़ उन्हें तीन बार घुमाया जा सकता है।

रि-साइकिलिंग सिस्टम

ख़ून के RED CELLS की उम्र एक सौ बीस दिन यानी चार महीने होती है। ख़ून के मुर्दा CELLS जिगर (Liver) में दोबारा इस्तेमाल में लाए जाते हैं। उनके एक हिस्से से सफ़रा (Bile) तैयार किया जाता है जिसे आंतें गिज़ा में मौजूद चिकनाई को क़ाबिले हज़म बनाने के लिए इस्तेमाल करती हैं। बाक़ी मुर्दा CELLS से दोबारा नए RED CELLS पैदा हो जाते हैं।

हमारे जिस्म के अंदर हर लम्हे ज़िंदगी और मौत का खेल जारी रहता है। तीस पैंतीस साल के बाद रोज़ाना दिमाग़ के एक हज़ार CELLS मर जाते हैं। लाखों CELLS सिर्फ़ हाथों को रगड़ने, नहाने और कपड़े पहनने के दौरान जिस्म से अलग हो जाते हैं। लाखों CELLS हर लम्हे अपनी नेचरल उम्र को पहुंच कर ख़त्म हो जाते हैं मगर इंसान अपने जिस्म में जारी ज़िंदगी और मौत के इन वाक़ेआत से बेखबर ही रहता है क्योंकि जितने CELLS मर जाते हैं उतने ही नए CELLS इस बीच में पैदा हो चुके होते हैं (सिवाए दिमाग़ के CELLS के)।

लफ़्ज़ कुन की गूंज

यह कहा जाए तो ग़लत नहीं होगा कि इंसान की पैदाईश अभी रुकी नही है। यह अमल बराबर चल रहा है और ऐसे ही चलता रहेगा। जिस तरह अल्लाह तआला के लफ़्ज़ 'कुन' की गूंज पूरी कायनात में अभी तक फैल रही है इसी तरह यह गूंज हर इंसान के जिस्म की दुनिया में भी एक 'खास वक़्त' तक फैलती रहेगी।

इंसान आम तौर पर अक़्ल व समझ आने के बाद ही अल्लाह की नेअमतों को किसी क़द्र समझ पाता है और उन नेअमतों से तो बेख़बर ही रहता है जो उसके दुनिया में आने से पहले ही उसे मिलना शुरू हो जाती हैं।

धोखा ही धोखा

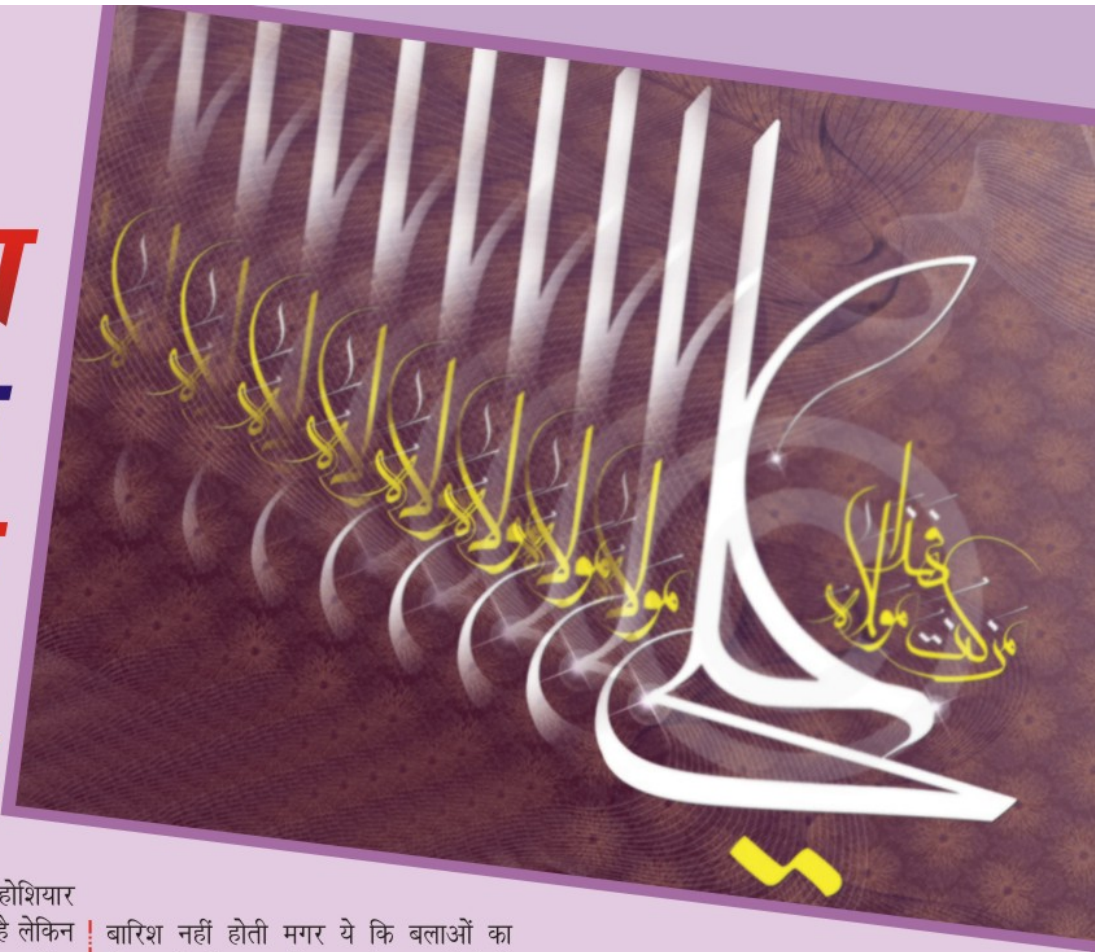

(दुनिया के बारे में हज़रत अली[अ०] का एक अहम ख़ुतबा)

...मैं तुम लोगों को दुनिया से होशियार कर रहा हूँ कि ये शीरीं और शादाब है लेकिन ख़्वाहिशों में घिरी हुई है। अपनी जल्द मिल जाने वाली नेमतों की वजह से महबूब और थोड़ी सी ज़ीनत से ख़ूबसूरत बन जाती है। ये उम्मीदों से सजी हुई और धोके से संवरी हुई है। न इसकी ख़ुशी बाक़ी रहने वाली है और न इसकी मुसीबत से कोई बचने वाला है। ये धोकेबाज़, नुक़सान पहुँचाने वाली, बदल जाने वाली, फ़ना हो जाने वाली, मिट जाने वाली और हलाक[1] हो जाने वाली है। ये लोगों को खा भी जाती है और मिटा भी देती है।

जब अपनी तरफ लगाव रखने वालों और अपने से ख़ुश हो जाने वालों की ख़्वाहिशात की आख़िरी हद को पहुँच जाती है तो बिल्कुल परवरदिगार के इस इरशाद के मुताबिक़ हो जाती है "जैसे आसमान से पानी नाज़िल होकर ज़मीन के नबातात में शामिल हो जाए और फिर इसके बाद वह सब्ज़ा सूख कर ऐसा तिनका हो जाए जिसे हवाएं उड़ा ले जाएं और ख़ुदा हर चीज़ पर क़ुदरत रखने वाला है।" इस दुनिया में कोई शख़्स ख़ुश नहीं होता है मगर ये कि उसे बाद में आँसू बहाना पड़े और कोई उसकी ख़ुशी को आते नहीं देखता मगर ये कि वह मुसीबत में डाल कर पीठ दिखला देती है और कहीं राहत और आराम की हल्की बारिश नहीं होती मगर ये कि बलाओं का दोगड़ा गिरने लगता है। इसकी शान ही ये है कि अगर सुबह को किसी तरफ से बदला लेने के लिए आती है तो शाम होते-होते अन्जान बन जाती है और अगर एक तरफ से शीरीं और ख़ुशगवार नज़र आती है तो दूसरे रुख़ से तल्ख़ और बलाख़ेज़ होती है। कोई इन्सान इसकी ताज़गी से अपनी ख़्वाहिश पूरी नहीं करता मगर ये कि इसके पै दर पै मसाएब की बिना पर परेशानियों का शिकार हो जाता है और कोई शख़्स शाम को अम्नोअमान के परों पर नहीं रहता है मगर ये कि सुबह होते-होते ख़ौफ के बालों पर पर लाद दिया जाता है। ये दुनिया धोकेबाज़ है और इसके अन्दर जो कुछ है सब धोका है। ये फ़ानी है और इसमें जो कुछ है सब फ़ना होने वाला है। इसके किसी ज़ादे राह में कोई ख़ैर नहीं सिवाए तक़वा के। इसमें से जो कम हासिल करता है उसी को राहत ज़्यादा नसीब होती है और जो ज़्यादा के चक्कर में पड़ जाता है उसके हलाक होने के अस्बाब भी ज़्यादा हो जाते हैं और ये बहुत जल्द उससे अलग हो जाती है। कितने इस पर भरोसा करने वाले हैं जिन्हें अचानक मुसीबतों में डाल दिया गया और कितने इस पर इत्मिनान करने वाले हैं जिन्हें हलाक कर दिया गया और कितने हैसियत वाले थे जिन्हें ज़लील बना दिया गया और कितने अकड़ने वाले थे जिन्हें हिक़ारत के साथ पलटा दिया गया। इसकी बादशाही पलटा खाने वाली, इसका ऐश मुकद्दर, इसकी मिठास बेहद नमकीन, इसका मीठा कड़वा, इसकी ग़िज़ा ज़हर भरी और इसके असबाब सब बोसीदा हैं। इसका ज़िन्दा हलाकत में पड़ने वाला हैं और इसका सेहतमन्द बीमारियों की कगार पर है। इसका मुल्क छिन्ने वाला है और इसका इज़्ज़त वाला पछाड़े जाने वाला है। इसका मालदार बदबख़्तियों का शिकार होने वाला है और इसका हमसाया लुटने वाला है। क्या तुम उन्हीं के घरों में नहीं हो जो तुम से पहले लम्बी उम्र, टिकाऊ आसार और दूररस उम्मीदों वाले थे। बेपनाह सामान मुहय्या किया, बड़े-बड़े लश्कर तैयार किए और जी भर कर दुनिया की परस्तिश की और उसे हर चीज़ से आगे रखा लेकिन इसके बाद यूँ रवाना हो गये कि न मंज़िल तक पहुँचाने वाला सामान साथ था और न रास्ता तै कराने वाली सवारी। क्या तुम तक कोई ख़बर पहुँची है कि इस दुनिया ने उनको बचाने के लिए कोई फ़िद्या पेश किया हो या उनकी कोई मदद की हो या उनके साथ अच्छा वक़्त गुज़ारा हो?

हरगिज़ नहीं। बल्कि उन्हें मुसीबतों में गिरफ़्तार कर दिया और आफ़तों से आजिज़ और बेबस बना दिया। पै दर पै ज़हमतों ने उन्हें झिंझोड़ कर रख दिया और उनकी नाक रगड़ दी और उन्हें अपने सुमों से रौंद डाला और फिर ज़माने के हादेसात को भी सहारा दे दिया और तुम ने देख लिया कि ये अपने इताअत गुज़ारों, चाहने वालों और चिपकने वालों के लिए भी ऐसी अन्जान बन गई कि जब उन्होंने यहाँ से हमेशा के लिए कूच किया तो उन्हें सिवाए भूक के कोई ज़ादे राह और क़ब्र की तंगी के कोई मकान नहीं दिया। ज़ुल्मत ही उनकी रौशनी क़रार पाई और शर्मिंदगी ही उनका अंजाम ठहरा। तो क्या तुम इसी दुनिया को इख़्तियार कर रहे हो और इसी पर भरोसा कर रहे हो और इसी की लालच में मुब्तला हो। ये अपने से बदज़नी न रखने वालों और एहतियात न करने वालों के लिए सब से बुरा मकान है।

इसलिए याद रखो और तुम्हें मालूम भी है कि तुम इसे छोड़ने वाले हो और इससे कूच करने वाले हो। उन लोगों से नसीहत हासिल करो जिन्होंने ये दावा किया था कि "हम से ज़्यादा ताक़तवर कौन है" और फिर वह अपनी क़ब्रों की तरफ इस तरह पहुँचाये गए कि उन्हें सवारी भी नसीब न हुई और क़ब्रों में इस तरह उतार दिया गया कि उन्हें मेहमान भी नहीं कहा गया। पत्थरों से उनकी क़ब्रें चुन दी गयीं और मिट्टी से उन्हें कफ़न दे दिया गया। सड़ी-गली हड्डियाँ उनकी पड़ोसी बन गयीं और अब ये सब ऐसे पड़ोसी हैं कि किसी पुकारने वाले की आवाज़ पर लब्बैक भी नहीं कहते हैं और न किसी ज़्यादती को रोक सकते हैं और न किसी रोने वाले की परवाह करते हैं। अगर इन पर मूसलाधार बारिश हो तो इन्हें ख़ुशी नहीं होती और अगर सूखा पड़ जाए तो मायूसी का शिकार नहीं होते हैं। ये सब एक जगह पर जमा हैं मगर अकेले हैं और पड़ोसी हैं मगर दूर-दूर हैं।

ऐसे एक दूसरे से क़रीब कि मुलाक़ात तक नहीं करते हैं और ऐसे नज़दीक कि मिलते भी नहीं हैं। अब ऐसे बर्बाद हो गये हैं कि सारा कीना ख़त्म हो गया है और ऐसे बेख़बर हैं कि सारा बुग्ज़ और इनाद मिट गया है। न इन से किसी नुक़सान का ख़तरा है और न किसी बचाव की उम्मीद। ज़मीन के ज़ाहिर के बजाए बातिन को और फैलाव के बजाए तंगी को और साथियों के बदले ग़ुरबत को और नूर के बदले अंधेरे को चुन लिया है। इसकी गोद में वैसे ही आ गए हैं जैसे पहले अलग हुए थे नंगे पैर और नंगे। अपने आमाल समेत दाएमी ज़िन्दगी और अबदी मकान की तरफ़ कूच कर गए हैं जैसा कि मालिके कायनात ने फ़रमाया है "जिस तरह हम ने पहले बनाया था वैसे ही वापस ले आयेंगे। ये हमारा वादा है और हम इसे बहरहाल अन्जाम देने वाले हैं"।

(1) कुछ नादानों का ख़याल है कि जब दुनिया बाक़ी रहने वाली नहीं है और इसके शबो रोज़ का एतेबार नहीं है तो बेहतरीन बात ये है कि जिस क़दर हासिल हो जाए इन्सान हासिल कर ले और इसकी नेमतों से लुत्फ अन्दोज़ हो जाए कि कहीं दूसरे दिन हाथ से न निकल जायें लेकिन ये ख़याल उन्हीं लोगों का है जो आख़िरत की तरफ से बिल्कुल ग़ाफिल हैं और उन्हें इस लुत्फ़ अन्दोज़ी के अन्जाम की ख़बर नहीं है वरना इस नुकते की तरफ़ मुतवज्जह हो जाते तो मरने वाले की तरह तड़पने को रेशम के बिस्तर पर आराम करने से ज़्यादा पसन्द करते और सादा तरीन ज़िन्दगी गुज़ारने ही को आफ़ियत और आराम फ़र्ज़ करते।

(नेहजुल बलाग़ा, ख़ुतबा-111)

इस्लाम में औरत का सोशल स्टेटस

■ जवाद ख़ुर्रमी

हिजरत के पाँचवें या छटे साल, 1 शाबान या पाँच जमादिल अव्वल को मदीना मुनव्वरा में अली[अ] व फ़ातिमा ज़हरा[स] के घर को ज़ैनब बिन्ते अली ने आकर ख़ुशियों का गहवारा बना दिया था। ज़ैनब करबला की शेरदिल ख़ातून हैं, शर्म और पाकदामनी के आसमान का चमकता सितारा हैं, इस्मत व पाकी के क़िले की ऐसी मुहाफ़िज़ हैं कि बरसों तक पड़ोसियों ने भी उनके क़द-काठी को नहीं देखा था, क्योंकि वह घर के अंदर भी हिजाब में रही थीं और उस ज़माने में तारीख़ ने उन्हें सिर्फ़ पर्दे के पीछे ही से देखा है। आप जब भी पैग़म्बरे अकरम[स] की क़ब्र की ज़ियारत के लिए जाती थीं तो आपके बाबा अली[अ] आगे-आगे और भाई हसन[अ] और हुसैन[अ] दाएं-बाएं चला करते थे। क़ब्र के किनारे जलती हुई मोमबत्तियाँ हज़रत अली[अ] बुझा दिया करते थे ताकि ज़ैनब का क़द किसी पर ज़ाहिर न हो सके।

इसके बावजूद, वह एक सरगर्म और एक्टिव ख़ातून थीं। आप अपने बाबा की ख़िलाफ़त के वक़्त कूफ़ा में क़ुरआन की तालीम व तफ़सीर की ज़िम्मेदार थीं और इमाम हुसैन के वक़्त में दुनिया के अज़ीम तरीन इंक़ेलाब में अपने भाई के साथ-साथ अपना ज़बरदस्त रोल अदा करती रहीं थीं। इमाम हुसैन[अ] और उनके जांनिसारों की शहादत के बाद क़ैदी औरतों और बच्चों की ज़िम्मेदारी आप ही के कंधों पर थी। जनाबे ज़ैनब ने दुश्मनों के चंगुल में होने के बावजूद सरबुलंदी के साथ क़ैदियों के क़ाफ़िले को करबला से शाम तक पहुँचाया और फिर वहाँ से मदीना तक ले गईं और जहाँ भी ज़रूरत पड़ी वहाँ नामहरमों की भीड़ में तक़रीर की, जैसा कि कूफ़े के बारे में महल के क़रीब ऐसी तक़रीर की कि कूफ़े वालों की आँखें खुल गईं, यहाँ तक कि कूफ़े वाले तैयार थे कि इब्ने ज़ियाद के ख़िलाफ़ बग़ावत कर बैठें। लेकिन इस तक़रीर के बीच में भी आप हया व पाकीज़गी का बेहतरीन नमूना थीं। चुनानचे ख़ज़ीम असदी कहता है कि मैंने ज़ैनब को देखा। ख़ुदा की क़सम! ऐसी औरत जो पूरी की पूरी शर्मो हया का पैकर हो और बेहतरीन तक़रीर करने वाली हो, मैंने कोई औरत उनसे बढ़कर नहीं देखी। यानी ज़ैनब[स] अली[अ] की ज़बान से बोल रही थीं।

दरबारे यज़ीद में भी बीबी ने मुँह खोला और यज़ीद को फटकार दिया, "क्या यही इंसाफ़ है कि तू अपनी औरतों और कनीज़ों को तो पर्दे में बिठाए और रसूल की बेटियों को क़ैदी बनाए, उनकी चादर छीन ले और उनके चेहरों को खोल दे"?

जनाबे ज़ैनब और इन जैसी अज़ीम औरतों की ज़िंदगी पर अगर एक हल्की सी नज़र डाली जाए तो इस से भी साबित हो जाएगा कि औरत ज़रूरत के वक़्त समाज में बेहतरीन अंदाज़ से अपने वजूद का इज़हार कर सकती है और पर्दे व हया की हदों का भी बेहतरीन तरीक़े से ख़याल रख सकती है।

समाज में औरतों की मौजूदगी और इससे पश्चिमी दुनिया का मक़सद

न्यु कामन ने जब भाप से चलने वाला इंजन तैयार किया और सन् 1712 में इंडस्ट्रियल इंक़ेलाब आया तो कारख़ानों में मज़दूरों की ज़रूरत अचानक बढ़ गयी। यूरोप के लालची सरमायेदार मुहाजिर मज़दूरों से काम लेने के साथ-साथ औरतों को भी मैदान में ले आए और औरतों को आज़ादी के नाम पर मशीनों के पीछे खड़ा कर दिया।

मज़दूर औरतों में कुछ ऐसी ख़ासियतें थीं जो मालिकों के बहुत फ़ायदे की थीं:

1-काम बदलने की तरफ़ औरतों का रुजहान बहुत कम होना

2-मज़दूरों की तरफ़ से हड़तालों और तहरीकों में शरीक न होना

3-उनकी उम्मीदों का बहुत कम होना और उनका सब्र व हौसला, साथ ही बारीक बीनी और नज़ाकत से काम करना।

इसके बावजूद, यूरोपी औरतें उस ज़माने में अपने घर में रहना पसंद करती थीं और अपने अंदाज़ से हिजाब क़ायम रखते हुए अपने शौहर और बच्चों के लिए घर गृहस्ती में लगी रहती थीं

और इस पर तैयार नहीं होती थी कि अजनबी मर्दों के साथ कारख़ानों के मशीनी और मुहब्बत की गर्मी से ख़ाली माहौल में काम करें लेकिन सरमायादारों ने औरतों को कारख़ानों में काम करने पर तैयार करने के लिए बड़े पैमाने पर औरतों की मज़लूमियत और उनको आज़ादी दिलाने का प्रोपगंडा किया और फ़ैमिली की हदों और उनके ख़ास पहनावे की क़ैद से आज़ादी का नारा लगाया। धीरे-धीरे औरतों ने भी इस पर यक़ीन कर लिया और सरमायादारों के कारख़ानों के पुरज़ों में तबदील हो गईं।

प्रोडक्शन में बढ़ावे और डिमांड में कमी हुई तो सरमायादारों ने दिवालिया होने से बचने के लिए पूरी सोसाइटी को ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ें इस्तेमाल करने और फ़िज़ूल ख़र्ची व ऐशो इशरत की तरफ़ शौक़ दिलाया और इस प्रोग्राम पर अमल करने के लिए भी उन्होंने औरतों ही को इस्तेमाल किया ताकि औरत अपना जिस्म, अपना हुस्न, अपनी दिल रुबाई और ख़ुशनुमाई को प्रोडक्ट्स को फैलाने के लिए काम में ले आए।

औरत के हुस्न से बदतरीन फ़ायदा उठाने के लिए उन्होंने औरत को रिवायती लिबास और अख़लाक़ी हदों से आज़ाद करने के लिए औरतों की आज़ादी का ख़ूबसूरत नाम चुना यहाँ तक कि वह हर चीज़ का सेक्चुअल एट्रेक्शन के ज़रिये प्रोपगंडा किया करते थे, तरह-तरह के कपड़ों से लेकर गाड़ियों, मोटर साइकिलों, साईकिलों यहाँ तक कि मेज़ कुर्सी और काम के औज़ारों वग़ैरा का प्रोपगंडा भी औरत ही के ज़रिए किया जाता था।

मार्डन औरत एक सरमायादार की चीज़ों के बेचने और उसके माल व दौलत में इज़ाफ़े का एक बेहतरीन ज़रिया बन कर रह गई। इस मौक़े पर कुछ लोग ये सोचने पर मजबूर हो गए कि ऐसे काम किए जाएं जिनसे औरतों के ज़रिये ज़्यादा से ज़्यादा दौलत कमाई जा सके और इसकी ख़ातिर उन्होंने अख़लाक़ी और इंसानी क़ानूनों की धज्जियाँ उड़ा दीं।

पश्चिमी समाज में औरतों की ये हद से बढ़ी हुई खुली मौजूदगी कई नुक़सान और बुरे असर लेकर आई। समाजी एतेबार से फ़ैमिली का कमज़ोर हो जाना, सेक्स रिलेटेड क्राइमस और बेशर्मी को बढ़ावा, क़त्ल, सेक्चुअल बीमारियां, स्ट्रेस, ज़ेहनी मर्ज़, एड्स वग़ैरा इसी कल्चर का नापाक तोहफ़ा हैं। कल्चरल एतेबार से लाउबालीपन, मोरल गिरावट, औरत की शख़सियत का ख़त्म हो जाना और अक़ीदों और नज़रियों की कमज़ोरी भी इसी की देन है। कारोबारी और सियासी एतेबार से ख़र्च करने की आदत, फैशन परस्ती, सरगर्मियों का ठंडा पड़ना, वग़ैरा भी इसकी देन हैं।

अब देखना ये है कि इस्लाम किस तरह से सोसाइटी के अंदर औरतों के वुजूद को क़ुबूल करता है कि सोसाइटी में औरत का रोल और हक़ भी अदा हो जाए और इसके नुक़सान पहुँचाने वाले असर से भी सोसाइटी बची रहे।

सोसाइटी में औरत का वुजूद

जिस ज़माने में अरब में इस्लाम का सूरज निकला, उस सोसाइटी में औरत की कोई समाजी हैसियत नहीं थी। वह सिर्फ़ दूसरों (बाप, बेटे या शौहर) की मिलकियत कि एक चीज़ हुआ करती थी और उस पर उन्हीं का कंट्रोल हुआ करता था लेकिन इस्लाम जब समाजी और इंडिविजुअल ज़िम्मेदारियों की बात करता है तो मर्दों से भी बात करता है और औरतों से भी बल्कि कुछ जगहों पर तो औरतों से मर्दों से पहले बात की है, क्योंकि औरतों को नौ साल की उम्र में इस क़ाबिल समझा जाता है कि वह ज़िम्मेदारी का बोझ उठाएं और मर्दों को पन्द्रह साल की उम्र में। बैअत व इस्लामी हुकूमत से वफ़ादारी के अहदो पैमान के मौक़े पर रसूले अकरम ﷺ ने मर्दों से भी बैअत ली और औरतों से भी (लेकिन इस्लामी क़ानून और पर्दे की रिआयत के साथ इस तरह कि आपका हाथ नामेहरम के हाथ से टच न हो)।

औरतों को दी जाने वाली इस्लाम की तरफ़ से बेमिसाल अहमियत इस बात की वजह बनी कि औरतें मस्जिद से लेकर मैदाने जंग के सारे मामलात में भरपूर हिस्सा लेने लगीं। रसूले अकरम ﷺ ने फ़रमाया कि ख़ुदा की कनीज़ों को ख़ुदा की मस्जिदों से दूर न करो। वह भी बग़ैर बनाव सिंगार के मस्जिद में आया करें।

रसूल ﷺ जब भी जंग पर जाया करते थे तो क़ुराअंदाज़ी करके अपनी एक बीवी को साथ ले जाया करते थे। कई औरतें इस्लामी लश्कर के साथ जंग के मैदान में भी शिरकत किया करती थीं जैसे तबूक की जंग, ओहद की जंग वग़ैरा में। इस हवाले से नीचे दिए वाक़िए पर ग़ौर कीजिए।

उम्मे आमिर जिनका नाम 'नुसैबा' है, वह कहती हैं कि मैंने इस्लामी लश्कर के सिपाहियों को पानी पिलाने के लिए ओहद की जंग में शिरकत की थी। शुरु में मुसलमानों की जीत हुई लेकिन कुछ ही देर में ये जीत हार में बदल गई और मुसलमान मैदान छोड़कर भागने लगे। मैंने देखा कि अब पैग़म्बरे अकरम ﷺ की जान ख़तरे में है। मैंने सोचा कि अपनी जान पर खेल कर भी मुझे हुज़ूर का बचाव करना चाहिए। इसलिए मैंने पानी की मश्क को छोड़ा और एक तलवार उठा ली। मैंने तलवार से भी दुश्मन का मुक़ाबला किया और कभी उन पर तीर भी चलाए।

फिर वह अपने कंधे के ज़ख़्म के बारे में बताने लगीं। मैंने देखा कि पैग़म्बरे अकरम ﷺ एक शख़्स से जो मैदान से भाग रहा था, कह रहे हैं कि अगर तुम भाग रहे हो तो कम से कम अपनी ढाल ज़मीन पर डालते जाओ। उसने अपनी ढाल ज़मीन पर फेंक दी जो मैंने उठा ली। अचानक मैंने देखा कि 'इब्ने क़ुमैया' नामी एक शख़्स चीख़ रहा है कि मुहम्मद कहाँ हैं?आख़िरकार उसने हुज़ूर ﷺ को पहचान लिया और आप पर हमला कर दिया।

मैंने और मुस्अब ने उसे रोकने की कोशिश की तो उसने मुझ पर भी हमला कर दिया। मैंने भी उस पर हमले किए लेकिन उसने दोहरी ज़िरह पहनी हुई थी इसलिए मेरे हमले बेकार हो गए। उसका लगाया हुआ ज़ख़्म मेरे कंधे पर पड़ा जिसका निशान एक साल तक बाक़ी रहा था। ये एक गहरी चोट थी। रसूले अकरम[ﷺ] ने मेरे कंधे से खून उबलते देखा तो मेरे एक बेटे को बुलाकर फ़रमाया कि अपनी माँ के ज़ख़्म को बाँध दो। उसने मेरा ज़ख़्म बाँधा और मैं दोबारा जंग में शामिल हो गई। अचानक मैंने देखा कि मेरा एक बेटा ज़ख़्मी हो गया है। मैं फ़ौरन उसके पास पहुँची और ज़ख़्मियों की मरहम पट्टी के लिए जो कपड़ा मैं लेकर आई थी वह उसके ज़ख़्म पर बाँध दिया और उससे कहा कि रसूले अकरम[ﷺ] की हिफ़ाज़त के लिए फ़ौरन तैयार हो जाओ।

इसलिए अक़्ली और सही आज़ादी जो इस्लाम ने औरतों को दी थी, उसके साए में ऐसी औरतें सामने आईं जो आम जगहों पर और यहाँ तक कि ख़लीफ़ा के सामने भी उठ खड़ी हुई थीं और उस पर तन्क़ीद के तीर बरसा दिया करती थीं। जैसे एक बार हज़रत उमर ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में मिंबर पर बैठकर मना कर दिया कि औरतों के लिए चार दिरहम से ज़्यादा मेहर क़रार न दिया जाए। उसी वक़्त एक औरत पूरी बहादरी से उठ खड़ी हुई और बोली कि ये हुक्म क़ुरआन के ख़िलाफ़ है और इसकी कोई अहमियत नहीं है। फिर क़ुरआन की इस आयत की तिलावत की, "अगर तुम एक शरीके हयात को दूसरी शरीके हयात से बदलना चाहो तो, अगर उन (बीवियों) में से किसी को बहुत ज़्यादा माल भी (मेहर के तौर पर) दिया हो तो उसमें कुछ भी वापस न लो।

हज़रत उमर ने देखा कि औरत की बात बिल्कुल सही और क़ुरआन के मुताबिक़ है तो बोले, "तमाम लोग उमर से बेहतर हैं यहाँ तक कि पर्दे में बैठने वाली औरतें भी"।

सियासी मैदान में शामिल होने की बेहतरीन मिसाल रसूल[ﷺ] की बेटी की मस्जिद में तक़रीर का वाक़िआ है कि आपने मस्जिद के अंदर आम लोगों की मौजूदगी में ख़िलाफ़त के ज़बरदस्ती छीन लेने और इस्लामी रास्ते से हट जाने पर एतेराज़ किया था।

इस्लाम में औरतों का काम करना

इस्लाम ने यूरोप से क़रीब बारह सौ साल पहले औरतों की कारोबारी मज़बूती का एलान किया और उनके मालिक होने को अहमियत दी। जबकि यूरोप में ऐसा सन् 1882 में हुआ, वह भी कारोबारी इंक़ेलाब और कारख़ानों में मज़दूर

दादी माँ के टोटके

प्यालियों के दाग़

चाय की प्याली पर अगर कभी दाग़-धब्बे लग जाएं तो उनको साफ़ करने के लिए कपड़े की गद्दी पर नमक और सोडा लगाकर प्याली पर मलें। फिर साफ़ पानी और वाशिंग पाउडर से धो लें। धब्बे दूर हो जायेंगे।

सोडा घरेलू इस्तेमाल के लिए एक फ़ायदेमन्द चीज़ है और बहुत सस्ता भी। दो चार रुपये का सोडा मंगवाकर रख लें ताकि किचन के सिंक की नाली बन्द हो जाए या प्याली का दाग़ साफ़ करना हो तो वक़्त पर इस्तेमाल हो सके। इसके अलावा बहुत से और टोटकों में भी इसका इस्तेमाल होता है।

खाने के सही होने की पहचान

हम लोग फ़्रीज़र और फ़्रिज में बहुत सी चीज़ें और खाने बनाकर रख देते हैं ताकि वक़्त पर इस्तेमाल कर सकें। अगर कभी काफ़ी दिनों के लिए घर से जाना पड़े और वापसी पर ये जानना हो कि कहीं हमारी ग़ैर मौजूदगी में बिजली काफ़ी देर के लिए चली न गयी हो और खाने ख़राब न हो गये हों तो ऐसा करें कि बर्फ़ जमाकर एक प्लास्टिक के लिफ़ाफ़े में डाल कर फ़्रीज़र में रख दें। अगर वापसी पर ये डलियाँ अपनी असली शक्ल में जमी हुई हैं तो इसका मतलब है कि या तो बिजली गयी ही नहीं और अगर गयी भी है तो इतनी देर के लिए नहीं कि खाने ख़राब हो जाएं।

और अगर डलियाँ पिघल कर दोबारा बर्फ़ जमी हुई हो तो इसका मतलब है कि बिजली काफ़ी देर के लिए गयी थी और खाना ख़राब हो गया है और अब खाने के लायक़ नहीं बचा है।

मछली को ज़्यादा दिनों के लिए महफ़ूज़ करना

सर्दियों में तो मछली आमतौर पर मिल जाती है मगर गर्मियों में ज़रा मुश्किल से मिलती है। कुछ ख़ास डिशेज़ बनाने के लिए गर्मियों में मछली को ज़्यादा से ज़्यादा वक़्त तक फ़्रीज़ में रखना हो तो मछली के टुकड़ों को या पूरी मछली को ही पानी के अन्दर डाल कर रखें और फिर फ़्रीज़र में रख दें। पानी बर्फ़ बन जायेगा और उसके अन्दर जो मछली जमी होगी वह ज़्यादा देर तक सही हालत में रहेगी। अगर कई घंटों के लिए भी बिजली चली जाये तो मछली के साथ जमी बर्फ़ उसे ख़राब होने से बचाये रखेगी। प्लास्टिक के बर्तन या दूध के ख़ाली डब्बे को इस काम के लिए इस्तेमाल कर सकती हैं।

जला हुआ सालन और पतीली

कभी-कभी ऐसा होता है कि सालन इतनी बुरी तरह जल जाता है कि सालन के नुक़सान के साथ-साथ जली हुई पतीली को धोना भी सख़्त नज़र आता है। इसको साफ़ करने का एक आसान तरीक़ा है जो बार-बार आज़माया भी जा चुका है। वह इस तरह कि जली हुई पतीली में पानी डाल कर चूल्हे पर रखें और उसमें दो तीन चाय के चम्मच नमक डाल दें। चन्द उबाल आने पर उतार लें और पानी गिरा दें। सारे जले हुए ज़र्रात नर्म होकर उतर चुके होंगे। अब गर्म पानी से माँझ लें। पतीली बिल्कुल साफ़ सुथरी हो जायेगी।

दूसरा तरीक़ा यह है कि जली हुई पतीली में पानी डाल कर चूल्हे पर रखें और साथ ही एक प्याज़ डाल दें, एक दो उबाल आने पर उतार कर धो लें।

औरतों की ज़रूरत की वजह से।

इस्लाम ने औरत को करोबारी मज़बूती देने के अलावा, ख़र्चों और नफ़्के की ज़िम्मेदारी मर्द पर लगाते हुए औरतों को ये सहूलत भी दी कि वह अपनी दौलत को अपने लिए महफ़ूज़ करके अपने मुस्तक़बिल के लिए बचाकर रखें। दूसरी तरफ़ इस्लाम ने औरतों को काम करने की भी इजाज़त दी और कुछ मौक़ों पर उनके लिए काम करने को वाजिब और कहीं पर मुस्तहब बताया है।

एक रिवायत में पैग़म्बरे अकरम[स०] से मनकूल है कि आपने फ़रमाया,

"हलाल रोज़ी कमाना हर मुस्लिम मर्द-औरत पर फ़र्ज़ है।"

कुरआन मजीद में भी अल्लाह के नबी हज़रत शुऐब की बेटियों के काम करने का ज़िक्र आया है कि वह जानवरों की रखवाली में अपने बाप का हाथ बटाया करती थीं।

एक समाज में जिन कामों की ज़रूरत होती है, वह इस्लाम में वाजिब किफ़ाई के तौर पर तमाम मुसलमानों के ज़िम्मे लगाए गए हैं, चाहे मर्द हों या औरतें। इस बुनियाद पर अगर सोसाइटी को लेडी डाक्टर, नर्स, लेडी टीचर वग़ैरा की ज़रूरत हो तो ये काम वाजिब किफ़ाई के हवाले से औरतों पर वाजिब हैं। इसीलिए अगर माहिर लेडी डाक्टर पहुँच में हों तो उलमा औरतों को इजाज़त नहीं देते कि मर्द डाक्टर के पास जाएं।

इन कामों के अलावा दूसरे मैदानों में भी औरत अपनी जिस्मानी बनावट को सामने रखते हुए और अपने हिजाब व एहतेराम का ख़याल रखते हुए सोसाइटी में काम कर सकती है और बिज़िनेस एक्टिविटीज़ में भी हिस्सा ले सकती है।

पैग़म्बरे अकरम ने फ़रमाया है, "तीन चीज़ें रूकावटों को तोड़कर खुदा तक पहुँचती हैं, उलमा और स्कालर्स के क़लम की आवाज़, मुजाहिदों के क़दमों की गूँज और औरतों के कपड़ा बुनने की आवाज़।"

औरतें कारोबारी कामों में शिरकत कर सकती हैं। इसीलिए रसूले अकरम ने फ़रमाया है "नेक औरत कारोबारियों में से एक कारोबारी है।

इस्लामी हिस्ट्री ने अच्छी तरह बताया है कि कई औरतें अपनी पाकीज़गी और हिजाब की हिफ़ाज़त करते हुए बिज़िनेस एक्टिविटीज़ में हिस्सा लेती रही हैं यहाँ तक कि मशहूर औरतों में से जनाबे ख़दीजा[अ०] की तिजारत तो बहुत मशहूर है। आज भी औरतें इस्लामी अहकाम का ख़याल रखते हुए सोसाइटी में अहम रोल अदा कर सकती हैं।

औरतें और एजुकेशन

सोसाइटी में औरतों की सरगर्मी का एक और तरीक़ा एजुकेशन और टीचिंग का मैदान है। इस्लाम ऐसा दीन है जिसने अपने बुनियादी उसूलों में ईमान व एतेक़ाद के बाद एजुकेशन को सबसे बुलंद मक़ाम दिया है। क़ुरआन मजीद में इरशाद होता है, "अल्लाह ने तुम में से ईमान लाने वालों और उन लोगों को कि जिनको इल्म दिया गया है, बहुत दर्जे अता किए हैं।"

दीने इस्लाम ने एजुकेशन के लिए उम्र, जगह और जिंस की हदों को मिटा दिया है और मर्द-औरत दोनों को एक ही तरह से एजुकेशन हासिल करने का हुक्म दिया है। यहाँ तक कि कुछ इल्म जैसे वाजिबात व मोहर्रमाते दीनी का इल्म, दीनी अक़ीदों का इल्म वग़ैरा को वाजिब बताते हुए सब पर उनका हासिल करना ज़रूरी क़रार दिया है। साथ ही जिस इल्म की भी सोसाइटी को ज़रूरत है उसे वाजिब किफ़ाई के तौर पर हर मुसलमान मर्द-औरत के लिए ज़रूरी बताया है।

नबी अकरम[स०] फ़रमाते हैं, इल्म हासिल करना हर मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर के एक सहाबी ने आप से कहा, "क्या मैं ये हदीस अपनी बीवी को बता दूँ।" इमाम ने फ़रमाया, "हाँ, क़ुरआन कहता है, "अपने आपको और अपने घर वालों को आग से बचाओ।"

इस रिवायत से भी पता चलता है कि औरतों को दीनी अहकाम की तालीम देना एक दीनी फ़रीज़ा है।

शुरु इस्लाम में कई औरतें इस्लामी हिजाब में हुज़ूर[स०] की ख़िदमत में आती थीं और हदीसों का इल्म हासिल करके अगली नस्ल को सिखाया करती थीं। इस तरह की रिवायात इतनी ज़्यादा हैं कि इब्ने हजर अस्क़लानी ने अपनी किताब 'अल-इसाबा' में इल्म हासिल करने वाली औरतों के लिए एक अलग चैप्टर बनाया है जिसमें 1522 सहाबी औरतों का ज़िक्र किया है जबकि 'असदुल ग़ाबा' में एक हज़ार से ज़्यादा औरतों का ज़िक्र है। साथ ही दूसरी किताबों में भी इन औरतों का ज़िक्र मिलता है।

शादी और फ़ैमिली

■ हुज्जतुल इस्लाम मुजतबा मूसवी लारी

जिस तरह हर एक सिस्टम का एक लीडर होना ज़रूरी है वैसे ही घर और घरदारी भी एक तरह का सिस्टम ही है जिसका एक लीडर होना भी ज़रूरी है क्योंकि बग़ैर लीडर के सारा सिस्टम तहस-नहस हो सकता है। इसीलिए घरेलू सिस्टम की बागडोर मर्द या औरत किसी एक के हाथ में ज़रूर होना चाहिए। आइए देखें यह काम किसके हाथ में होना चाहिए।

इस पूरे के पूरे सिस्टम की ज़िम्मेदारी यह होती है कि बच्चों की परवरिश की जाए, उनकी देखभाल हो, फ़ैमिली की ज़रूरतें पूरी हों और उसके ख़र्चे उठाए जाएं। इसके लिए औरत से ज़्यादा बेहतर मर्द है और मर्द ही है जो इस ज़िम्मेदारी को अपने कंधों पर उठा सकता है।

अपनी जगह पर यह बात तय है कि औरत बहुत जज़्बाती होती है और ख़ुदा ने भी उसे कुछ इस तरह ही बनाया है कि वह क़ुदरती तौर पर मर्द से ज़्यादा जज़्बाती है, जबकि मर्द क़ुदरती तौर पर लॉजिक पर ध्यान देता है और जज़्बाती कम होता है। जज़्बात के मुक़ाबले में अक़्ल की अहमियत होती है इसलिए इस्लाम ने फ़ैमिली की बागडोर मर्द के हाथों में रखी है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि औरत से किसी क़िस्म का मशवरा ही न लिया जाए और मर्द खुला हुआ डिक्टेटर बन जाए। इस्लाम ने मर्द को लीडर बनाने के साथ उसको औरतों पर हर तरह के ज़ुल्म करने से रोक दिया है। क़ुरआन ने मर्दों को हुक्म दिया है कि वह ज़ुल्म से बचते हुए अच्छे और समझदारी वाले रास्ते पर चलते हुए औरतों के साथ ज़िंदगी गुज़ारें।

घर की ज़िम्मेदारी मर्द के पास होने के बावजूद घरेलू कामों में औरत आज़ाद है और फ़ैमिली को अच्छी तरह से चलाने की ज़िम्मेदारी उसी पर है। रसूल[स०] ने फ़रमाया, "घर का ज़िम्मेदार मर्द है मगर औरत से भी घर, शौहर और बच्चों के बारे में सवाल किया जाएगा"।

हमारे यहाँ आज कल जो शादी-ब्याह की अहमियत घट गई है और छोटी-छोटी बातों पर मियाँ-बीवी अलग हो जाते हैं उसकी वजह यह है कि आज-कल शादियों में ज़िंदगी की सच्चाईयों का ख़याल नहीं रखा जाता। आम तौर पर इस तरह की शादियाँ रोमांटिक, बचकाना और ख़्वाबो-ख़याल की दुनिया में की जाती हैं। बहुत से लोग लड़के और लड़की के ख़यालों के न मिलने पर भी सिर्फ़ दौलत, शोहरत, ख़ूबसूरती और ज़ाहिरी नुमाइश पर शादी कर लेते हैं जिसके नतीजे में शादियाँ फ़्लाप हो जाती हैं और दोनों का फ़्युचर बर्बाद हो जाता है क्योंकि दिन बदिन औरत-मर्द की सोच का फ़र्क़ बढ़ता ही जाता है, आख़िरकार दोनों अलग हो जाते हैं। जब तक लोग उसूली और समझदार नहीं होंगे, ज़िंदगी के बुनियादी मसलों की सही स्टडी नहीं करेंगे इस तरह के हालात रोज़ाना बढ़ते ही जाएंगे। इसी वजह से इस्लाम ने ऐसी सोच को रद् किया है जिससे बदबख़्ती और बरबादी के अलावा कुछ हाथ नहीं आता है। इस्लाम की नज़र में फ़ैमिली की बुनियाद के लिए दौलत, शोहरत और दुनियावी चीज़ों की कोई क़ीमत नहीं है बल्कि शादी की बुनियाद ईमान और पाकीज़गी पर है। इस्लाम मर्द और औरत को तक़्वा और परहेज़गारी की तरफ़ ध्यान दिलाता है।

रसूल[स०] फ़रमाते हैं, "जो शख़्स किसी औरत से ख़ूबसूरती की वजह से शादी करेगा, वह अपनी पसंदीदा चीज़ उसमें नहीं पाएगा और जो किसी औरत से सिर्फ़ दौलत की ख़ातिर शादी करेगा ख़ुदा उसको उसी के हवाले कर देगा। इसलिए तुम लोग बाईमान और पाकदामन औरत से शादी करो।[1]

इस्लाम ने समाज की बुनियाद रखने पर बहुत ज़ोर दिया है। हद यह है कि शादी से ज़्यादा अच्छा किसी चीज़ को नहीं बताया है। जो लोग बेवजह शादी नहीं करते हैं उनको बूरा कहा है और हर उस बहाने को सख़्ती से ठुकरा दिया है जो इंसान को ग़लत रास्ते पर डाल दे। रसूले इस्लाम[स०] फ़रमाते हैं, "निकाह मेरी सुन्नत है जो मेरी सुन्नत से मुंह मोड़ेगा, वह मुझसे नहीं है।"[2]

इसी तरह इस्लाम ऐसे लोगों से शादी करने से भी रोकता है जिनके अंदर रूहानी अच्छाईयां न हों। अच्छा ख़ानदान, अच्छा अख़लाक़, अच्छी मज़हबी परवरिश जिसके पास न हो उससे भी शादी से रोका गया है। एक दिन रसूले इस्लाम ने कहा कि घूरे की हरियाली से बचो! लेगों ने पूछा कि इसका क्या मतलब है? कहा कि ऐसी ख़ूबसूरत औरत से बचो जिसका घरेलू माहौल ख़राब हो[3]

ज़ाहिर है कि जो बीवियाँ अख़लाक़ी और मज़हबी उसूलों-क़ानूनों की पाबंदी नहीं करती हैं वह फ़ैमिली को अच्छा और कामयाब नहीं बना सकतीं। ऐसी शादियों का रिज़ल्ट बुरा होता है और बुरी औलाद की शक्ल में सामने आता है। इसीलिए इस्लाम बुरी व बदकिरदार नस्लों की औरतों से शादी को मना करता है।

अगर नौजवान बीवी को पसंद करते वक़्त ज़ाहिरी ठाठ-बाट को न देखते हुए इस्लामी उसूलों पर चले और दिल के बजाए अक़्ल से काम ले तो बर्बादी से बचा जा सकता है।

हमारे आज-कल के कुछ नौजवान बीवी को पसंद करने के लिए सही रास्ता यह समझते हैं कि कुछ दिनों तक लड़की के साथ बाक़ायदा मिला-जुला जाए, साथ रहा जाए ताकि उसके अख़लाक़ और आदतों के बारे में जानकारी के बाद कोई क़दम उठाया जाए जिससे पूरी ज़िंदगी अच्छी गुज़र सके। हालांकि यह तरीक़ा अपने दूसरे नुक़सानों के

साथ-साथ बीवी के बारे में सही जानकारी देने के लिए ठीक भी नहीं है क्योंकि इसके लिए बहुत लम्बे ज़माने की ज़रूरत है। थोड़े दिनों के आने-जाने और उठने-बैठने से ज़रूरत भर जानकारी नहीं मिल सकती। असल में किसी के सब्र, शराफ़त, समझदारी, फ़िदाकारी वग़ैरा का सही अंदाज़ा उसी वक़्त हो सकता है जब ऐसा कोई वक़्त किसी के सामने आ पड़े। हंसी ख़ुशी के माहौल या तफ़रीह के वक़्त किसी की आदतों और मिज़ाज का सही तौर पर अंदाज़ा नहीं लगाया जा सकता।

पिकनिक स्पॉट या मॉल में दो लोगों की मुलाक़ात से सच्चाई का पता नहीं चल सकता जबकि शुरुआत में दोनों की यही कोशिश होती है कि अपने अंदर की कमियाँ ज़ाहिर न होने दें, बल्कि बनावट करके अपने को नेक और अच्छा ज़ाहिर करने की कोशिश करते हैं। ऐसी कंडीशन में सही हालात की जानकारी कैसे हो सकती है? भला सोचिए तो जो नौजवान उम्र के नाज़ुक और जज़्बाती दौर से गुज़र रहा हो वह भला सिर्फ़ कुछ दिनों साथ रहकर किस तरह से पता लगा सकता है कि रूहानी और अख़लाक़ी लिहाज़ से दोनों में कोई फ़र्क़ है कि नहीं जबकि सेक्चुअल डिज़ायर्स से भरी और ख़्वाबों की दुनिया वाली इस उम्र में नौजवान जिस्म और जिस्मानी ख़ूबसूरती के अलावा कुछ और सोचता ही नहीं है।

क्या इस बात की कोई गारंटी है कि वह जवान जो थोड़ा बहुत वक़्त एक साथ गुज़ारने के बाद अपनी बीवी को चुनेंगे और उनसे शादी करेंगे, वह आख़िरी उम्र तक लड़ाई-झगड़ों से बचे रहेंगे और उनके बीच किसी तरह की अनबन नहीं होगी? क्या यह दोनों गारंटी ले सकते हैं कि उनकी ज़िंदगी ऐसी होगी कि दूसरे उस पर रश्क करें? बिल्कुल नहीं।

तर्जुबा तो कुछ और ही बताता है क्योंकि इस तरह की शादी में शुरु-शुरु में तो मियाँ-बीवी बहुत खुश-खुश रहते हैं लेकिन धीरे-धीरे दानों एक-दूसरे की कमियों को पकड़ने लगते हैं और फिर बात तलाक़ तक पहुँच जाती है।

हर जवान को यह बात याद रखना चाहिए कि हर एतेबार से मिज़ाज में एक जैसा होना उसी तरह मुश्किल है बल्कि नामुमकिन है जिस तरह दो चेहरे एक जैसे नहीं हो सकते। इसके अलावा औरतों के सोचने का अंदाज़ और उनके जज़बात भी कुछ इस तरह के होते हैं जो उन्हें मर्दों से अलग कर देते हैं।

इस्लाम शादी-ब्याह को बहुत अहमियत देता है। इसीलिए उसने हर एक को इजाज़त दी है कि निकाह से पहले अपनी होने वाली बीवी को एक बार देख ले। जहां तक उसके कैरेक्टर, मिज़ाज और दूसरी आदतों के बारे में जानने की बात है तो उसे जानकार लोगों से बहुत आसानी से मालूम कर सकता है।

1-निसा/19, 2-वसाएल, 3/6, 3- वसाएल, किताबे निकाह

कुरआनी G.K.

- *कुरआन की सबसे पहली आयत कौन सी है ?*
  बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम।
- *कुरआन की सबसे पहली आयत कहाँ नाज़िल हुई ?*
  ग़ारे हिरा (मक्के) में।
- *वह आयत जिसे इमामे ज़माना[अ0] ज़हूर के वक़्त तिलावत फ़रमायेंगे ?*
  सूरए हूद, आयतः 86
- *कुरआन का पहला सूरह कौन सा है ?*
  सूरए हम्द
- *कुरआन के पहले सूरे में कितनी आयतें हैं ?*
  सात
- *कुरआन का पहला सूरा जो किसी नबी के नाम पर है ?*
  सूरए यूनुस
- *कुरआन का पहला सूरा जो किसी ''उलुल अज़्म नबी'' के नाम पर है ?*
  सूरए इब्राहीम
- *पहला ''शहर'' जिसका नाम कुरआन में आया है ?*
  शहरे ''बक्का'' (मक्का), सूरए आले इमरान/96
- *वह पहला गिरोह कौन सा है जिसका ज़िक्र कुरआन में हुआ है ?*
  बनी इसाईल
- *वह पहला ''फल'' कौन सा है जिसका नाम कुरआन में आया है ?*
  खीरा
- *वह पहला हैवान'' कौन सा है जिसका नाम कुरआन में आया है ?*
  मच्छर
- *वह पहला रंग कौन सा है जिसका नाम कुरआन में आया है ?*
  ज़र्द
- *अहकाम के सिलसिले में कुरआन का सबसे पहला हुक्म क्या है ?*
  नमाज़ क़ायम करो। सूरए बकरा/43
- *सबसे पहले कुरआन में किस बात से रोका गया है ?*
  ज़ुल्म से।
- *सबसे पहले कुरआन को किसने जमा किया ?*
  हज़रत अली[अ0] ने।
- *पहली मरतबा कुरआन ''कब और कहाँ'' छपा ?*
  1694 ई0, 1105 हि0 हैमबर्ग, जर्मनी में।
- *सबसे बड़ी आयत कौन सी है ?*
  आयत/282, सूरए बक़रा
- *कुरआन का सबसे ''बड़ा'' सूरा कौन सा है ?*
  सूरए बक़रा
- *कुरआन का सबसे ''छोटा'' सूरा कौन सा है ?*
  सूरए कौसर
- *कुरआन के नाज़िल होने में कितना वक़्त लगा ?*
  22 साल, 2 महीने 22 दिन
- *वह कौन से सूरे हैं जिनमें सजदा वाजिब है।*
  सूरए सजदा, नज्म, अलक़, फ़ुस्सेलत।
- *कुरआन में कुल कितनी आयतें हैं ?*
  6666

बाप-बेटा

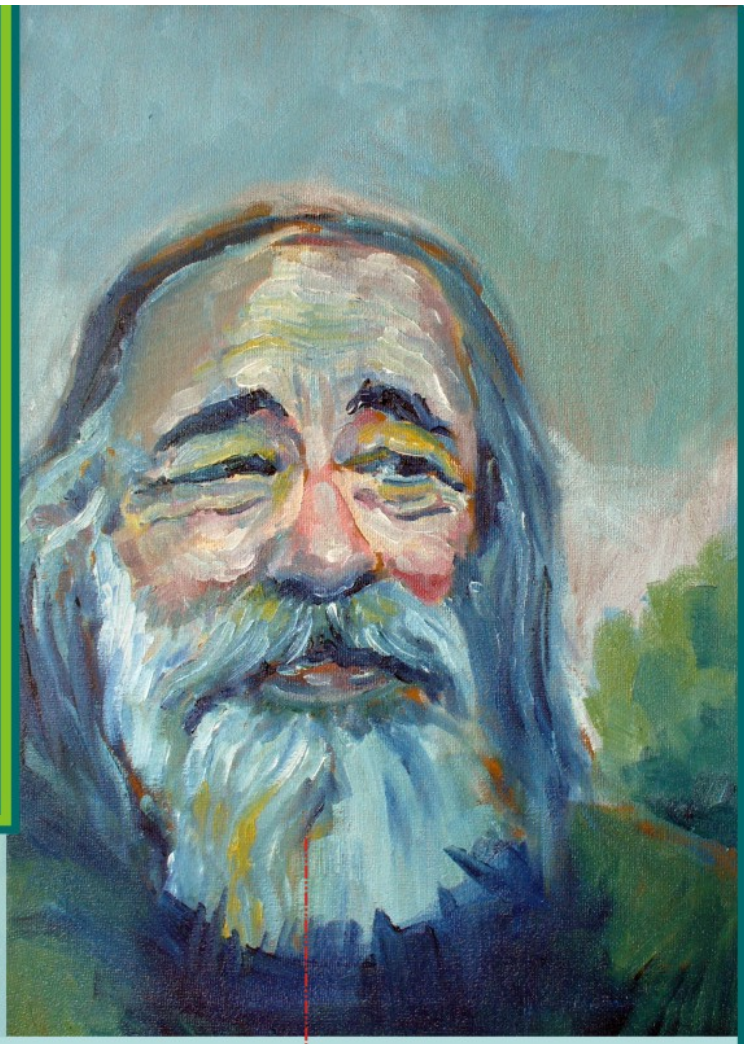

■ वाजिदा तबस्सुम

"अब्बा मियाँ! प्लीज़ तैयार हो भी चुकिए।" शमीम ने बेहद प्यार से पुकार कर कहा।

"बस बेटा! एक मिनट।"

यह एक मिनट सुबह से अब तक बीता ही न था और अब तीन बज रहे थे, सर्दियों का मौसम शुरू हो चुका था। गांव से शहर जाते हुए रास्ते में एक लम्बा सा जंगल भी पड़ता था। शमीम चाहता था कि अंधेरा पड़ने से पहले ही अपने ठिकाने पहुंच जाए लेकिन अब्बा मियाँ थे कि उनके काम ख़त्म होने में नही आ रहे थे। उन्होंने क्या कम बखेड़े अपने साथ लगा रखे थे। भैंस, बकरी, कुत्ता, बिल्ली और छोटा मोटा एक पॉल्ट्री फ़ार्म। जाते-जाते आखिर उन्हें इन सभी का कुछ न कुछ बन्दोबस्त तो करना ही था।

"अब्बा मियां रात हो गई तो रफ़ी तन्हाई में घबराएगी, प्लीज़ अब्बा मियां।" शमीम ने एक और हांक लगाई।

"बस बेटा! एक मिनट"...और अब्बा काम में मुसलसल जुटे ही रहे। मुरादाबादी लोटा, ग्लास, बधना, हुक्क़ा, बांस की टोकरी और जाने क्या-क्या अल्लम-ग़ल्लम अब्बा मियां के आगे ढेर था। शमीम मुस्कुराए जा रहा था। बेचारे स्वीट अब्बा मियाँ! अभी उनको पता ही नही था कि यह सब सामान किस क़द्र ग़ैर ज़रूरी और ग़ैर अहम रह जाएगा जब वह उस शानदार बंगले में सेटेल हो जाएंगे।

"उसी दम अब्बा मियां मुड़े और ज़रा झिझकते हुए लहजे के साथ शमीम से बोले, बेटा! यह चारपाई न रख लूं।"

शमीम की आंखे हैरत से फैल गईं। "यह चारपाई भी अब्बा मियां? बान यह की चारपाई?!!! अरे अब्बा मिया आप भी मज़ाक करते हैं। मैं ने तो आपके लिए फ़ोम के बेहद नर्म गद्दे और ऐसा खूबसूरत बेड तैयार करवा दिया है कि आप इस पर लेटते ही ख्वाबों के जज़ीरों में पहुंच जाएंगे।" वह शायरी पर उतर आया।

"अच्छा..." वह सोगवार सी मुस्कुराहट से बोले, "तू जैसा कहे वैसा ही करूंगा।"

"हां अब्बा मियाँ! बिल्कुल वैसा ही जैसा मैं कहूं, इसलिए कि अब्बा मियां ज़िन्दगी भर मैंने आपको तकलीफ़ें ही दी हैं और सदा आप पर बोझ बना रहा। मेरी ही वजह से आपने ज़िन्दगी में कभी सुख का सांस तक न लिया। अब अल्लाह ने मौक़ा दिया है तो मैं दिल भर कर अपने अरमान निकालूंगा। अब्बा मियाँ आप को इतना सुख दूंगा, इतना आराम दूंगा कि आप ज़िन्दगी भर की सारी तकलीफ़ें भूल जाएंगे। उसने बच्चों की तरह दोनों हाथ फैला दिए।

अब्बा मियाँ ने अपना बच्चे का सा भोला भाला मुंह उठाकर उसकी बातें सुनीं और एक दम उनका गला रुंध गया। "न बेटा यूं न कह। कोई औलाद मां-बाप पर बोझ नही होती, औलाद तो बेटा! नसीब वालों को ही मिलती है और फिर तुझ जैसी सआदतमंद औलाद।" वह आंसू पोछने के बहाने मुड़े। "ज़रा माई खैरां को देख आऊं..."

माई खैरां एक कोने में मुंह दिए रो रही थीं। बूढ़े चेहरे पर मलगजे आंसू झुर्रियों से आड़े तिरछे हो कर बह रहे थे। जब से शमीम अब्बा मियाँ को लेने आया था उसकी आंख से आंसू नहीं टूटा था। कोई पच्चीस सालों से जब से कि शमीम की अम्मा मरी थीं, माई खैरां ही ने शमीम की मां के फराएज़ अंजाम दिए थे। पेट में नौ महीने रखने की ज़िम्मेदारी ही उनसे छूट गई थी वरना वह सचमुच ही शमीम की मां हो गई थीं। शमीम की अम्मा के ज़माने से वह रोटी डालने और बर्तन धोने आती थीं लेकिन उनकी अचानक मौत ने जैसे सारे काम ही उनके सर ला डाले। नौकर और मालिक का रिश्ता उनमें और कलीम मिया में हमेशा बरक़रार रहा। मियां जी कह कर ही उन्होंने सदा अब्बा मियाँ को मुखातब किया और नज़र झुका कर बात भी की।

लेकिन यह बात सिर्फ अब्बा मियां मानते थे कि उनकी झुकी हुई निगाहों के आगे उन्हें भी सर झुका देना चाहिए। शायद वह न होतीं तो शमीम इस मक़ाम पर न होता। था ही क्या। ले दे के वह छोटे-छोटे खेत ही तो आमदनी का ज़रिया थे लेकिन उन्होंने सदा महलों के ख़्वाब देखे थे। हमेशा यही सोचा कि अपने बेटे को अच्छी से अच्छी एजुकेशन दिलाएंगे और अच्छे से अच्छे

ओहदे पर बिराजमान देखेंगे। गांव में सिर्फ चौथी क्लास तक तालीम हो सकती थी। पांचवी से उन्होंने शमीम को शहर भेज दिया था। फ़सल ख़राब होती या अच्छी वह किसी न किसी तरह उसके ख़र्चे पूरे करते रहे। कभी उन्होंने शमीम को इस बात का एहसास नहीं होने दिया कि वह एक ग़रीब बाप का बेटा है। अच्छे से अच्छे कपड़े पहनाए और ज़िन्दगी की छोटी से छोटी चीज़ का भी ख़्याल रखा। जब कभी शमीम छुट्टियों से घर आता अब्बा मियाँ के लिए जैसे बे मौसम ही बहार आ जाती। माई खैरां भी इतने दिनों के लिए जैसे अपने घर बार को भूल सी जाती थीं।

अबकी बार शमीम आया तो वह बात ही न थी। बीच में से इतने सारे साल कैसे गुज़र गए थे कि पता तक न चला था। उन्हें अब्बा मियां की ज़बानी सब हालात मालूम होते रहते थे। यह भी अब्बा मियां ने ही बताया था कि शमीम दरजा बदरजा बढ़ते-बढ़ते इस मक़ाम तक पहुंच गया था जिसके सिर्फ ख्वाब ही देखे जा सकते हैं। आई.ए.एस. के ओहदे पर शमीम क्या पहुंचा कि अच्छे अच्छों की आंखे उसकी राहों में बिछ-बिछ गईं।और एक बार अभी थोड़े दिनों पहले शमीम अब्बा मियां को शहर ले गया था। अपनी शादी के लिए शहर के सबसे मशहूर और अमीर तरीन डाक्टर की इक्लौती लड़की नाहीद रफअत से उसका ब्याह ठहरा था। जिन्होंने जहेज़ में लम्बी सी गाड़ी के साथ-साथ दुनिया भर की हर चीज़ दी थी।

अब्बा मियां इसलिए खुश नहीं थे कि उनके बेटे को बेहद रुपया और ज़िन्दगी की हर अच्छी से अच्छी चीज़ बैठे बिठाए ही मिल गई थी। वह तो यूं खुश थे कि शमीम खुश था। रफी यानी रफ़अत इतनी प्यारी कि कोई भी शौहर उसे पाकर अपनी खुश क़िस्मती पर नाज़ कर सकता था। यह अजीब बात थी कि बेपनाह रुपये पैसे ने भी उसे गुरूर का दाग़ न लगने दिया था। नौकरों की पलटन होने के बावजूद वह शमीम का हर काम अपने हाथों से करने में बड़ाई समझती थी।

शादी ब्याह के मरहलों से फ़ी होकर जब अब्बा मियां गांव लौट रहे थे तो नई दुल्हन होने के बावजूद शरमाते-शरमाते उसने ससुर से कहा कि अब्बा मियां अब तो आप हमारे साथ रहने लगिए ना। वहां अकेले रह कर आप क्या करेंगे? तो अब्बा मिया हंस कर टाल गए थे।

वह अपनी मासूम सी बहू से क्या बताते कि वहां वह अकेले नही हैं। वहां उनके वह खेत हैं जिन्होंने उनका और शमीम का जीवन बदल दिया है। वहां उनके पालतू जानवर हैं। उनका छोटा सा आबाई घर है जिसका टूटा फूटा सामान भी उन्हें इतना प्यारा है। फिर माई खैरां है, उसका शौहर जो उनका अज़ीज़ दोस्त है। माई खैरां के बच्चे। एक दुनिया वहां उनके इन्तिज़ार में रहती है।

वह जब गांव लौट कर आए तो एक-एक छोटी से छोटी बात उन्होंने खुशी-खुशी सब को बताई और इस ग़म को भी उन्होंने नहीं छुपाया कि शमीम ने शादी में माई खैरां को न बुलवाकर उन्हें कितना दुख दिया है। भले ही उनके शौहर को न भी बुलाता, लेकिन माई खैरां के तो उन दोनों पर कितने एहसान थे लेकिन माई खैरां पर इस बात का ज़रा बराबर भी मलाल या ग़म न था। वह बेहद खुश थी कि चलो शमीम मिया का घर बार बस गया। ज़िन्दगी में इसी एक अरमान के लिए तो लोग कितने दुख सह जाते हैं। बस ग़म उन्हें यह था कि शमीम मियाँ की नौकरी शहर में लगी हुई थी और बुढ़ापे में भी क्या मियां जी औलाद से दूर ही रहेंगे? इंसान इसी आस पर तो तकलीफ़ झेल जाता है कि बुढ़ापा सुख से गुज़रे। सामने बहू बेटे की प्यार भरी ज़िन्दगी हो। पोते पोतियों की किलकारियां और मासूम लड़ाई झगडे हों लेकिन शायद यह सब कुछ अब्बा मियां का मुक़द्दर न था।

लेकिन यह माई खैरां का अपना भोलपन था जो वह यह सब कुछ सोच बैठी थी। इधर शमीम एक लमहे को भी यह बात न भूला था कि अब्बा मियाँ तन्हा ज़िन्दगी कैसे गुज़ार पाएंगे। इस से पहले वह दो बार और भी गांव आया था। एक बार आया तो यह देख कर उसका जी दुख कर रह गया कि अब्बा मियां ने बिला ज़रूरत ही मुर्ग़ियां पाल रखी हैं। उसने बड़ी हैरत से पूछा, "अब्बा मियां, मेरे ख़्याल से आप को रुपये पैसे की तो अब कोई तकलीफ़ ही नहीं है। यह आपने अपनी जान को बखेड़े क्यों लगा रखे हैं?"

वह एक उदास सी मुस्कुराहट के साथ बोले, "अरे बेटा! खाली वक़्त पड़े-पड़े किस तरह काटूं सोचा कि चलो मुर्गियां ही पाल लें।"

शमीम ने बड़े ग़म से उन्हें देखा। वह हड़बड़ा से गए। "अरे बेटा! तू इस तरह उदास क्या हो गया। पहले मुझे बड़ी फ़िक्र लगी रहती थी कि शमीम बेटे के लिए यह करना है। शमीम बेटे के लिए वह करना है। सारा वक़्त ऐसे ही गुज़र जाता था, अब..." वह चुप से हो गए। "वक़्त काटे नही कटता।"

"तो अब्बा जान आप मेरे साथ शहर चलिए ना। माई खैरां ने ज़िन्दगी भर हम दोनों के लिए जो कुछ किया उसका बदला तो खैर किसी तरह अदा हो ही नहीं सकता लेकिन आप अपने छोटे मोटे खेत उन्हें दे कर किसी तरह खुशी तो हासिल कर सकते हैं ना? आप खुद सोचिए कि मुझे अच्छा लगता होगा कि ज़िन्दगी भर जिस बाप को अपनी वजह से तकलीफ़े दीं, उसे बढ़ापे में भी सुख नहीं दे सकता?"

"मैं शहर चला जाऊं।" अब्बा मियां बहुत हैरत से बोले।

"क्यों क्या आप मुझसे ज़्यादा किसी और को चाह सकते हैं!" शमीम ज़रा बुरा मान कर बोला।

"नही बेटा! तुझसे ज़्यादा प्यारा मुझे कौन होगा। लेकिन मुझे यह सोचते भी कुछ अजीब सा लगता है कि मैं अपने गांव को छोड़ कर शहर चला जाऊं।"

शमीम ऐसा भी कुछ जज़बात से आरी न था कि अब्बा मियां के एहसासात को समझ ही न पाता लेकिन वह चुप न रह सका। उससे अगले चक्कर में भी वह यही सब दोहरा गया। फिर एक बार रफी भी आई। अब्बा मियां फिर भी राज़ी न हुए। इधर दिल बहलाने को उन्होंने तोते से लेकर बिल्ली, बकरी, कुत्ता और जने क्या-क्या अला-बला पाल रखा था। इससे पहले चक्कर में शमीम आया तो कार दूर ही खड़ी करके वह चुपके से घर में चला आया। देखे तो सही अब्बा मियां खाली वक़्तों में करते क्या हैं। कुछ भी नहीं। घर के पिछवाड़े बड़े शौक़ से वह क्यारियां बना रहे थे। और पास खड़े कुत्ते से बातें किए जा रहे थे।

"अब इस में जो टमाटर लगेंगे ना मोतिया! यह बड़े-बड़े होंगे। एक टोकरे में जमा करके फिर हम शहर भिजवाएंगे, शमीम बेटा के लिए। है ना? और कद्दू तो शमीम खाता ही नहीं लेकिन फलियां उसे बहुत भाती हैं...।"

शमीम रूंहासा हो गया। पीछे से जाकर उसने अब्बा मियां के गले में बाहें डाल दीं। "अब्बा मियां आपको मेरी क़सम अगर आप मेरे साथ शहर न चले....."

और फिर क़सम के आगे अब्बा मिया का कोई बस न चला।

सब सामान कार की डिक्की में लद चुका था। अब्बा मियां बड़ी खाली-खाली नज़रों से खड़े घर-बार का जाएज़ा ले रहे थे। शमीम ने घर की चाबी माई खैरां के हाथ में पकड़ा दी। "माई! अब यह सब अपना ही समझो और खुदा के लिए रो नहीं।"

माई खैरा कुछ न बोलीं। रोईं भी नही। अब्बा मियां अपने घर-बार को बड़ी बेबस निगाहों से देखे जा रहे थे कि कार धूल के बादल उड़ाती कच्ची सड़क पर दौड़ने लगी।

लोग इसीलिए तो औलाद की आस करते हैं। अब्बा मियां अब के गांव से आये तो सभी कुछ बदला-बदला सा पाया। इससे पहले वह सिर्फ मेहमान की हैसियत से आये थे। अब के शमीम उन्हें यूं लाया था कि वापसी का कोई इम्कान ही न था। इसीलिए बाग़ की तरफ कोने का हवादार कमरा अब्बा मियां के लिए मख़सूस कर दिया गया। एक खिदमत गार सिर्फ अब्बा मिया की खिदमत के लिए मख्सूस था। गांव में सुबह सवेरे मुंह धो कर अब्बा मिया खुद अपने हाथों दही बलो कर लस्सी का बड़ा ग्लास पीते थे। यहां सुबह खिदमतगार चाय की ट्रे लिए हाज़िर रहता। हुक़्क़ा साथ आया तो था लेकिन शमीम ने एक से एक बढ़िया टीन सिग्रेटों से भरे हुए अब्बा मियां के लिए लाकर सजा दिए थे। इधर एक मिनट की कमी बेशी के बग़ैर नाशता तले हुए अंडे, सिंके हुए मक्खन लगे हुए टोस्ट के साथ मिल जाता। कू कू, ऊद लेटिन, काफी अलग, जैसा शमीम का ओहदा ऊँचा था वैसा रख-रखाव भी था। एक बजते ही डिंग-डांग बेल बजती और खिदमतगार अब्बा मिया को डायनिंग हाल में पहुंचा देता। शमीम भी लंच आवर में घर आया होता। वह बाप के आगे बिछ-बिछ जाता।

अब्बा मियां बेचारों ने ज़िन्दगी भर लहसुन की चटनी, प्याज़, हरी मिर्चें, मोटी रोटियों के साथ लस्सी के घूंटों से खायी थीं। शमीम उन्हें सूप पेश करता। एक से एक मुरग़्न खाने। फिर चार बजे की चाय, फिर ज़रा ठंडा वक़्त होता तो बावर्दी शोफर साहब के हुक्म पर बड़े साहब को शहर घुमाने सैर कराने ले जाता। शमीम ने नोटों से भरा एक पर्स अब्बा मियां की जेब में रख दिया था कि मुमकिन है शहर में कोई चीज़ पसन्द आ जाये और वह पैसा न होने के कारन तरस कर रह जायें। वह यह कभी नहीं चाहता था कि अब्बा मियां की सी बुर्ज़ुग शख्सियत को कभी उसके सामने हाथ फैलाने की शर्मिन्दगी उठानी पड़े। रात का खाना भी उसी एहतेमाम से होता। रात को सोते वक़्त दूध और डिरेन्गि चाकलेट से भरा लम्बा सा ग्लास मेज़ पर उनका मुन्तज़िर होता। आफिस जाते वक़्त और लौट कर आने के बाद हर बार शमीम का तरीक़ा था कि वह मोहब्बत से आकर पूछता, "अब्बा मियां आपको कोई तकलीफ तो नहीं?"

अब्बा मियां मासूम सी गोल-गोल आंखों से बेटे को देखते और हड़बड़ा से जाते। "तकलीफ़? अरे काहे की तकलीफ़ बेटा! तुमने तो मुझे बादशाह का सा राज अता कर दिया है।"

शमीम का सीना मोहब्बत और फ़र्ख से फूल जाता। ज़िन्दगी में उसकी बदौलत अब्बा मियां ने जो जो तकलीफे उठाई थीं, आखिर उनका इज़ाला उसने कर ही दिया था।!!

लेकिन इन सारी बातों के साथ-साथ शमीम को एक दुख भी था, पहले वह जब कभी गांव जाता था, देखता था कि अब्बा मियां बूढ़े होने के बावजूद चहकते, हंसते फिरते हैं, हंसी मज़ाक़, दिल लगी, दिल खोल कर ऊंचे-ऊंचे क़हक़हे। यहां आकर

जैसे वह हंसना ही भूल गए थे मुमकिन है उन्हें रफी से कोई शिकायत हो लेकिन इतना तो वह भी देखता था कि रफी उनका उतना ही ख्याल रखती थी जितना कोई बेटी अपने बाप का रख सकती है। एक दिन शमीम को अपनी ग़फ़लत का एहसास हुआ, अरे हो सकता है अब्बा मियां को कोई बीमारी हो और कितने अफ़सोस की बात है कि मैंने आज तक उनका मेडिकल चेकअप तक नहीं करवाया। फौरन टेलीफोन करके डाक्टर को बुलाया गया। ज़बान, आंखें, नाखुन, होंटों की रंगत का मुआएना हुआ, ब्लड प्रेशर चेक किया गया, बुखार लिया गया और बिस्तर के बाजू एक छोटी सी टेबल पर दवाओं का अम्बार लग गया, आते जाते वह नर्स को हिदायत करता।

"अब्बा मियां का ख्याल रखना ऐसा न हो वह दवा पीना भूल जायें।" नर्स कई-कई बार उनका मुंह खोल कर कड़वी दवाएं भरती। शमीम को बड़ा दुख था कि कभी रात को अब्बा मियां के कमरे के पास गुज़रता देखता कि अपने इन्तेहाई नर्म व आरामदेह फोम के बिस्तर पर भी वह कुछ बेचैन से हैं। "ऐ खुदा मैं अब्बा मियाँ को किस तरह आराम दूं।" वह बड़े दुख के साथ सोचता।

उस दिन क्लब में डिनर पार्टी थी शमीम और रफी नर्स को हिदायत कर गए थे कि अब्बा मियां का पूरा ख्याल रखे उन लोगों के जाते ही इत्तेफाक़न नर्स को कहीं से काल आई। फ़ोन रिसीव करके वह थोड़ा घबराई हुई सी अब्बा मियां के पास आई और बोली, "मेरे बच्चे की अचानक तबीयत बिगड़ गई है साहब अगर आप की तबीयत बेहतर महसूस हो रही हो तो मैं थोड़ी देर के लिए घर हो आऊं?"

अब्बा मियां ने बड़ी खुशी और मोहब्बत से उसे इजाज़त दे दी। थोड़ी देर बाद अब्बा मियां ने अपने खास खिदमतगार को बुलाकर उसे पैसे देकर हुक्म दिया कि शहर से फलां-फलां दवा खरीद कर लाए। खिदमतगार के जाते ही उन्होंने चोरों के से अंदाज़ में इधर-उधर झांका फाटक पर दरबान पहरा दे रहा था। किचन में खानसामा के गुनगुना-गुनगुना कर खाना पकाने की आवाज़ें आ रही थी। परली तरफ मालिन, धोबन और बर्तन धोने वालियों की कांन्फ्रेस हो रही थी, अब्बा मियां ने बड़ी खुशी से यह बात नोट की कि इत्तेफ़ाक़न कमरे की जो खिड़की बाग़ में खुलती है उसमें सलाखें नहीं हैं और यह कि बाग़ में कूद कर जंगला फलांग कर मज़े से फरार हुआ जा सकता है। आंखें बन्द करके अल्लाह का नाम लेकर उन्होंने बाग़ में छलांग लगा दी।

साहब और मेम साहब की वापसी पर बंगले में खलबली मच गई। यहां, वहां, इधर-उधर और अन्दर-बाहर कहीं बड़े साहब होते तो मिलते। हर हर नौकर से बाजपुर्स की गई। नर्स को डांटा-डपटा गया लेकिन बड़े साहब का कोई पता न चला। रफ़ी रूहांसी हो रही थी। "पुलिस में रिपोर्ट न कर दें शमीम!"

एक दम शमीम कुछ सोच कर बोला, "ड्राईवर गाड़ी निकालो।" और तेज़ी से पलट कर उसने रफी से कहा, "आओ रफी गांव चलें!"

गंव से शहर का फासला ही कितना था! घर से काफी दूरी पर गाड़ी रुकवा कर शमीम ने रफी का हाथ थामा और आहिस्तगी से घर की जानिब चला। दूर से शमीम ने देखा कि अब्बा मियां बान की खरी चारपाई पर बैठे ऊंचे-ऊंचे क़हक़हे लगा रहे हैं। हाथ में हुक्के की ने थाम रखी है। सामने ही तामचीनी की रकाबी में अध खाई मिर्चें और प्याज़ के छिलके पड़े हुए हैं जैसे अभी-अभी खाना खाया गया हो। कांसी का ग्लास औंधा पड़ा हुआ था। जिसमें से लस्सी के चंद क़तरे ज़मीन पर गिरे हुए थे। शमीम ने सुना अब्बा मियां कह रहे थे, "ओ माई खैरां! तुझे मालूम है दोपहर में शमीम मुझे क्या खिलाता था? बर्तनों का धोवन जैसा शोरबा जिसको सूप कहता था हा!हा!हा!..... और रात को सोते वक़्त चाकलेट.... जैसे मैं बच्चा था, सुबह ही सुबह मलकुल मौत की तरह बैरा चाय लेकर खड़ा रहता था हा!हा!हा!..... न कोई काम न धाम बस पड़े रहो तौबा....."

माई खैरां, उसके शौहर और उनके बच्चे बड़ी हैरत से सारी बातें सुन रहे थे। कुत्ता, बिल्ली अब्बा मियां के क़दमों में लोट रहे थे मुर्ग़ियां कड़कड़ा रही थी, तोता..... "मियां जी आदाब" की रट लगाये था और मियां जी हंस-हंस कर कह रहे थे। "जो मज़ा खरी बान की चारपाई में है वह झाग ऐसे नर्म गद्दों में कहां से आए भला। कमबख़्त जिस्म टूट जाता है। करवट तक बदलना न आए।" यह कहकर वह मज़े से हाथ पांव फैला कर खरी बान पर लेट गए।

शमीम ने नर्मी से रफी का हाथ थामा और कार में आकर बैठ गया। कच्ची सड़क पर धूल उड़ाती गाड़ी शहर की तरफ दौड़ने लगी। ●

औरत

■ मेहदी रज़ा

क़ुरआन में अल्लाह तआला का एलान है, "हम ने तुमको एक मर्द और औरत से पैदा किया है।" इस आयत से यह बात साफ़ हो जाती है कि इंसान की पैदाइश में मर्द और औरत बराबर हैं, दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है। हाँ, मर्द और औरत में जिस्म और रूह के एतेबार से कुछ फ़र्क़ हैं, जिनकी वजह से इस्लाम में कुछ राइट्स ऐसे है जिनमें ये दोनों शामिल हैं, कुछ राइट्स ऐसे हैं जो मर्द और औरत दोनों के लिए अलग-अलग हैं लेकिन ये फ़र्क़ भी दोनों की मिलीजुली जिंदगी को एक सही रास्ते पर चलाने के लिए ही ख़ुदा ने रखे हैं वरना मक़सद के एतेबार से इन दोनों में कोई फ़र्क़ नहीं है।

इस आयत में मर्द और औरत का एक साथ ज़िक्र किया गया है कि उनमें कोई फ़र्क़ नहीं है। कुछ मुफ़स्सिरों ने इस आयत के बारे में लिखा है कि जिस वक़्त असमा बिन्ते उमैस अपने शौहर के साथ हबशे से पलटीं तो रसुले अकरम[स०] की बीवियों की ज़ियारत के लिए उनकी ख़िदमत में पहुँचीं और उनसे सवाल किया कि क्या कोई आयत औरतों की शान में भी नाज़िल हुई है? उन्होंने जवाब दिया कि नहीं।

असमा, पैग़म्बर[स०] की ख़िदमत में आईं और कहा, "ऐ रसूले ख़ुदा! औरत घाटे में है।"

पैग़म्बर[स०] ने फरमाया, "क्यों?"

क्हा, "क्योंकि इस्लाम और क़ुरआन में मर्दों की तरह औरतों की फ़ज़ीलत के बारे में कुछ भी ज़िक्र नहीं है।"

उसी वक़्त ये आयत नाज़िल हुई और औरतों और मर्दों को इत्मिनान दिलाया गया कि ख़ुदा की बारगाह में क़ुरबत और मंज़िलत के एतेबार से मर्द और औरत दोनों बराबर हैं।[1]

ये आयत एक ऐसे वक़्त में नाज़िल हुई थी जब औरतें ह्यूमन राइट्स से महरूम थीं। उनके आमाल और इबादतों की कोई अहमियत नहीं थी। चौदह सौ साल पहले पैग़म्बरे इस्लाम[स०] ने औरतों के राइट्स को पेश किया और उस भेद-भाव को जो पूरे अरब को अपने मनहूस साए में लिए हुए था, इस्लाम के नूर से ख़त्म कर दिया, वो नूर जो आज भी सारी दुनिया को रौशनी दे रहा है। सिर्फ़ शर्त है कि कोई उससे फ़ायदा हासिल करे, वरना वो इस तरह है जैसे कोई ख़ुद को किसी घर में बंद कर ले और सूरज की रौशनी से मुँह फेर ले। जबकि ये हक़ीक़त है कि इससे सूरज की रौशनी में कोई कमी नहीं होगी।

पैग़म्बरे अकरम[स०] फ़रमाते हैं, "मेरी उम्मत के बेहतरीन मर्द वह हैं जो अपनी औरतों के साथ अच्छा बर्ताव करते हैं, उनसे सख़्ती के साथ पेश नहीं आते और उनके साथ एहसान को बाँटते हैं।[2]

एक और जगह फ़रमाते हैं, "मलऊन है, मलऊन है वह शख़्स जो अपनी बीवी को ज़ाया करता है यानी उसके राइट्स को पामाल और उसके एहतेराम और बुज़ुर्गी को नज़रअंदाज़ करता है।"[3]

इस्लाम ने औरत को शराफ़त और इंसानियत में मर्द के बराबर ही जाना है लेकिन इन दोनों के कुछ राइट्स और काम बाँट दिए हैं, जिनमें कुछ फ़र्क़ ज़रूर है लेकिन हैं एक दूसरे के बराबर ही। मर्द और औरत दोनों एक दूसरे के साथ मिलकर ही मुकम्मल हो सकते हैं। आयतुल्लाह जवादी आमुली फ़रमाते हैं, "क्योंकि काम बहुत से हैं और हर काम को करने के लिए अच्छी सलाहियत होना चाहिए, इसलिए फ़र्क़ होना ज़रूरी है।"[4]

1-तफ़सीरे नमूना, जि-17 पे-307
2-तबरी, मकारिमे अख़लाक़, पे-248
3-शैख़ सदूक़, ख़िसाल, जि-1 पे-55
4-औरतः जलालो जमाल के आईने में/52

औरत

- *दुनिया का बहतरीन फूल है। जब तक यह खिलता रहता है ख़ुश्बू और तरो-ताज़गी देता रहता है।*
- *इसकी मुहब्बत दिल की गहराईयों से होती है।*
- *पूरी दुनिया में अकेली हस्ती है जो बग़ैर फ़ौज के हुकूमत करती है।*
- *यह मामूली सी कुटिया को भी अपनी साफ़-शफ़्फ़ाफ़ हस्ती से शीश महल बना सकती है।*
- *सेहत की हालत में अच्छी दोस्त, बीमारी में बहतरीन नर्स और मरने के बाद मर्द की ख़ूबसूरत सौगवार है।*

एग फ्राइड राइस

- चावल............................आधा किलो
  (बग़ैर नमक वाले पानी में उबालें)
- अंडे.. 5
- हरी प्याज़...................... आधा किलो
- हरी मिर्च........................... थोड़ी सी
- गाजर............................. आधा कप
- नमक............... एक चाय का चममच
- मटर.............................. आधा कप
- चाइनीज़ नमक.......2चाय के चम्मच
- सफ़ेद मिर्च पाउडर......2चाय के चम्मच
- सोया सॉस........... दो खाने के चम्मच
- तेल................................ आधा कप

Recipe

तरकीबः

गाजर, मटर, हरी प्याज़ को चौकोर काट लीजिए। सब्ज़ियों को हलका सा उबाल लीजिए और ठंडे पानी में डाल दीजिए। थोड़ी देर के बाद सब्ज़ियों को पानी से निकाल कर अलग रख लीजिए।

तेल गर्म करके अंडे फ्रॉइ कीजिए। फिर तले हुए अंडों के आधे हिस्से को अलग करके आधी सब्ज़ियाँ उसमें डाल दीजिए। फिर उसमें बाक़ी सब्ज़ियाँ और चावल डाल कर अच्छी तरह मिक्स कर लीजिए।

आख़िर में चाइनीज़ नमक, नमक, सोया सॉस, सफ़ेद मिर्च पाउडर, हरी मिर्चें डाल कर मिक्स कीजिए और दम पर रख दीजिए। मज़ेदार एग राइस केचप के साथ ख़ुद भी खाइए और दूसरों को भी सर्व कीजिए।

उम्मीद दुआ मंज़िल

■ ताबिंदा किरन

'उम्मीद' एक छोटा सा लफ़्ज़ है लेकिन हक़ीक़त यह है कि इसकी ही वजह से इंसान ज़िंदा रह पाता है। सिर्फ़ और सिर्फ़ उम्मीद ही ऐसा लफ़्ज़ है जो इंसान को ख़ुदा का बंदा होने की पहचान कराता है। ये एक जज़्बे और एक एहसास का नाम है। एक रौशन शमा और उजाले का नाम है। सर सैय्यद अहमद ख़ान कहते हैं, "उम्मीद, सफ़ेद बालों वाले बूढ़े 'यक़ीन' की एक बहुत प्यारी और ख़ूबसूरत बेटी का नाम है।"

हाँ! ये उम्मीद ही तो है जो यक़ीन जैसे बहुत मज़बूत लेकिन नाज़ुक रिश्ते को ज़ाहिर करती है। जब यक़ीन से रिश्ता पक्का हो जाए तो दुनिया और आख़िरत की हक़ीक़त समझ में आती है। यक़ीन ही तो काएनात में बिखरे हुए रंगों की बुनियाद है, जो कोशिशों का नतीजा है, फूलों की ख़ुश्बू है, दिलों की बहार है, नूर है, ख़ुदा की मुहब्बत से चूर और रगों में दौड़ता ख़ून है।

उम्मीद! हाँ, ये उम्मीद ही तो है कि जब इसका एहसास दिल में जाग उठता है तो एक ऐसी मौज उठती है जिसमें समझ और अक़्ल सभी कुछ होता है और रगों के जमे ख़ून में ज़िंदगी भर देता है। अदब और एहतेराम की गरमाई, किसी से कुछ माँग लेने का एहसास, किसी के सामने झुक जाने, किसी के लिए अपना सब कुछ क़ुर्बान कर देने की लगन... सिर्फ़ और सिर्फ़ एक नज़रे करम के लिए।

और फिर उठ जाते हैं 'दुआ' के हाथ...बन जाता है एक कशकोल। होंट हिलते हैं, आजिज़ी और इंकेसारी अपना दामन फैला देती है और मिट्टी का पुतला उसकी आग़ोश में समा जाता है...दुनिया से बेख़बर। अगर एहसास होता है तो सिर्फ़ इस चीज़ का कि हाथ फैले हैं और आँखों से आँसू जारी हैं और ये आँसू दिल की आँखों के साफ़-शफ़्फ़ाफ़ आईने पर जमी धूल को धो रहे हैं।

रास्ते की धूल धुआँ बनकर ग़ायब हो जाती है। काँटे कहीं छुप जाते हैं और महकते-दमकते उम्मीद के फूल, ज़िंदगी की ख़ुश्बू फैलाने लगते हैं और जब नज़र उठती है तो 'मंज़िल' सामने होती है...कुछ क़दम की दूरी पर...क़रीब बल्कि बहुत ही क़रीब।

रात का अंधेरा ग़ायब हो जाता है, सुबह का उजाला हर तरफ़ फैल जाता है। थके हुए दिल जब जमे हुए ख़ून की सियाही से पाक होते हैं तो मंज़िल पर मौजूद ज़ात की मुहब्बत की गरमाई उनको दोबारा धड़कना सिखा देती है। दिलों में वह ख़ून चलने लगता है जो मुहब्बत से भरा हो...ख़ुदा की मुहब्बत से चूर हो...ख़ुदा की मख़लूक़ की मुहब्बत से भरपूर।

ऐसे में नज़र आती है पेड़ पर मौजूद रौशनी, बोलती हुई रौशनी कि जिसके पास जाते हुए अदब और एहतेराम का एहसास हज़रत मूसा से जूतियां उतरवा देता है।

तभी तो बेटे की जुदाई में निकले आँसू ज़मानें के साथ-साथ कम हो जाते हैं और हज़रत याक़ूब की आँखों की खोई हुई राशनी लौट आती है।

तभी तो मछली के पेट में की जाने वाली फ़रियाद अर्श को हिला देती है और कहा जाता है, "अगर यूनुस तस्बीह न करते तो क़यामत तक मछली के पेट में रहते।"

तभी तो मरयम की ज़मानत दी जाती है और गहवारे में मौजूद नया पैदा होने वाला बड़े-बड़े अक़्लमंदों से बात करता है।

तभी तो ईसा[अ] की मज़लूमियत पर तरस खाया जाता है और उन्हें आसमान पर उठा लिया जाता है।

तभी तो लूत[अ] और नूह[अ] की दुआ सुन ली जाती है और उन्हें मिल जाती है तूफ़ान से निजात।

तभी तो बीमार जिस्म की आह, उम्मीद का दामन पकड़े ज़मानों के सफ़र तय करती 'रहमान' के दरबार तक पहुँच जाती है और बरसों के बीमार, अय्यूब पैग़म्बर के सारे दुख-दर्द दूर कर दिए जाते हैं। तभी तो बुढ़ापे में बांझपन दूर कर दिया जाता है और तोहफ़े के तौर पर सब्र और इम्तिहान के लिए इकलौती औलाद दे दी जाती है।

तभी तो खुलता है ख़ुदा के घर का दरवाज़ा... बुलाया जाता है फ़ातिमा बिन्ते असद को और रसूल को वली जैसा तोहफ़ा मिलता है।

हाँ! ये उसी दुआ का जवाब तो है जिसने रसूले अकरम[अ] के मुबारक होंटों से अर्श तक का फ़ासला अदब, एहतेराम और मुहब्बत की सवारी पर तय किया और उम्मीद का दामन पकड़े रखा।

फिर जब यक़ीन, उम्मीद और दुआ के ये सहारे डूबते दिल, महकती सांसों, डगमगाते क़दमों को सुकून और ताक़त बख़्शते हैं तो धुंधलाई हुई आँखों को उजालों सी रौशनी मिल जाती है और यूँ महसूस होता है जैसे आवाज़ देने वाला कह रहा हो... 'चश्मों, दरियाओं और कुँओं ने कभी किसी जाम, प्याले या मश्क की चाहत नहीं की। सूरज ने कभी चिराग़ों से रौशनी नहीं माँगी। दिल अगर तारीक हैं तो उस हस्ती से रौशनी लो जिसने आमिना की गोद में एक मुक़द्दस नूर दिया है। ऐसा मुक़द्दस नूर जो कई सदियों से चमक रहा है जो कभी नहीं डूबेगा।'

लेकिन ये रौशनी उसी वक़्त मिलती है जब दीन की समझ हो क्योंकि दीन की शुरुआत उसकी पहचान से होती है, पहचान का कमाल तस्दीक़ है और तस्दीक़ का कमाल तौहीद और तौहीद किसी ज़ात के अकेले होने का एहसास, हर चीज़ पर क़ुदरत रखने का एहसास, उम्मीद की रौशनी में हमेशा-हमेशा के हज़ार रंग भर देता है। ●

माँ और उसकी ज़िम्मेदारियाँ

माँ की गोद बच्चे का पहला स्कूल है, बच्चा दुनिया के इस सबसे बड़े स्कूल से अच्छा अख़लाक़, इताअत, फ़रमांबरदारी, दुनिया में ज़िन्दगी गुज़ारने के सलीक़े, ढंग और तौर तरीक़े सीख कर समाज का हिस्सा बनता है। इसलिए माँ की ज़िम्मेदारी है कि वह अपनी औलाद की परवरिश इस तरह करे कि दीनी रूह उसकी रगों में ख़ून बनकर दौड़ने लगे। इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी को अदा करने के लिए ज़रूरी है कि माँ ख़ुद भी अच्छे अख़लाक़ और कैरेक्टर की मालिक हो क्योंकि बच्चा जैसा माँ को देखेगा वैसा ही बनने की कोशिश करेगा। माँ तो कहते ही उसे हैं जिसमें हमदर्दी, ख़ैरख़्वाही, ईसार, नसीहत, सब्र, बर्दाश्त और मुहब्बत कूट-कूट कर भरी हो, माँ की इन्हीं क़ुर्बानियों को देखते हुए ख़ुदावन्दे आलम ने उसको इतनी अज़मत दी है कि उसके क़दमों के नीचे जन्नत रख दी है। माँ अपने अन्दर बाप से कई गुना ज़्यादा दर्दमन्दी और ख़ैरख़्वाही के जज़बात रखती है। माँ अपनी मंज़िल फूलों की सेज से होकर नहीं बल्कि काँटों और पत्थरों से गुज़र कर हासिल करती है। यहाँ पर बच्चों की सही परवरिश के कुछ तरीक़े बयान किए जा रहे हैं ताकि माएं उन पर अमल करके ऐसे बच्चे परवान चढ़ा सकें जो क़ौम का फ़्युचर संवार सकें।

1-बच्चों में सलाम करने की आदत डालना

माँ को चाहिए कि अपने बच्चों को सलाम करना सिखाए ताकि जब बच्चा किसी से मुलाक़ात करे या किसी का फ़ोन आए तो बजाए हेलो के सबसे पहले सलामुन अलैकुम कहे क्योंकि रसूले इस्लाम ने फ़रमाया है, "तुम जन्नत में उस वक़्त तक दाख़िल नहीं हो सकते जब तक मोमिन न हो और तुम्हारा ईमान उस वक़्त तक पूरा नहीं हो सकता जब आपस में एक-दूसरे से मुहब्बत न करो। मैं तुमको ऐसी चीज़ बताता हूँ कि अगर तुम उस पर अमल कर लो तो तुम एक दूसरे से मुहब्बत करने लगोगे। वह ये है कि आपस में सलाम को आम करो यानी एक दूसरे को बहुत ज़्यादा सलाम किया करो।"

2- मामता

माँ ही की वजह से घर का सारा सिस्टम बाक़ी रहता है। अगर माँ-बाप ने अपने बच्चों की अच्छी परवरिश की हो तो चाहे सारी फ़ैमिली मिल कर रहे या अलग-अलग उस फ़ैमिली की साख, भरम और सिस्टम को बाक़ी रखा जा सकता है। ऐसी फ़ैमिली का हर मिम्बर बुरा वक़्त पड़ने पर या किसी और मुश्किल के वक़्त एक दूसरे के साथ मिलकर उस सूरतेहाल का सामना करता है और फ़ैमिली का, ख़ास कर "माँ" का हौसला किसी हाल में पस्त नहीं होने देता।

मामता की शफ़क़त मिसाली है। अगर किसी माँ को बच्चों पर बहुत गुस्सा आता हो और वह अपने अन्दर मेहरबानी का जज़बा पैदा न कर पाती हो तो ऐसी माँ को चाहिए कि दो रकअत नमाज़े हाजत पढ़कर दुआ माँगें कि ख़ुदा मुझे गुस्से से दूर रख और इसके साथ-साथ इस बात का यक़ीन रखे कि अगर वह मुहब्बत से इनकी परवरिश करेगी तो इस पर उसे ख़ुदा बहुत ज़्यादा अज्र देगा। उसकी मौत के बाद उसके बच्चे उसके लिए ईसाले सवाब और सदक़-ए-जारिया का सबब बनेंगे। सबसे बड़ी बात ये है कि अल्लाह तआला उस से राज़ी हो जाएगा।

3- बेजा लाड-प्यार के नुक़सान

यक़ीनन सब माएं अपने बच्चों से बहुत प्यार करती हैं। यही प्यार और मुहब्बत कुछ बच्चों को बुरा आदमी बना देता है जिसकी वजह मौक़ा महल की पहचान न होना है। बच्चे शरारतें करते हैं तो उनको प्यार और मुहब्बत से बात समझाई जाए जैसे अगर बच्चा खाना बर्बाद कर रहा है तो उसको समझाना चाहिए कि इस तरह अल्लाह की नाशुक्री होगी और अगर अल्लाह हम से नाराज़ हो गया तो फिर जितनी चीज़ें हमें दी हैं वह वापस ले लेगा। इसलिए बेटा! फिर कभी ऐसा काम न करना। अगर बच्चे की बेजा शरारतों और ग़लत हरकतों को सही वक़्त पर सही तरीक़े से सुधारा नहीं गया तो बच्चे का कैरेक्टर बिगड़ जाता है।

4- बच्चों की ज़िद

ज़िद और हठधर्मी की आदत बहुत बुरी है। माँ-बाप अगर बच्चों की भलाई चाहते हों तो उनकी ये ज़िम्मेदारी और फ़र्ज़ है कि बच्चे में ज़िद पैदा होते ही उसको दबा दें। अगर ऐसा नहीं करेंगे तो बच्चा भी हाथ से जाएगा और ख़ुद भी मुसीबत में फंस जाएंगे जैसे अगर बच्चा नुक़सानदेह चीज़ माँगने की ज़िद कर रहा है तो उसका नुक़सान उसको समझाइए और किसी दूसरे काम में मशग़ूल कर दीजिए। अगर दो चार बार उसकी ग़लत ज़िद पूरी न की गई तो वह समझ जाएगा कि रोने धोने और ज़िद करने से कुछ नहीं होगा और फिर वह अपनी आदत इन्शाअल्लाह छोड़ देगा।

5- बच्चों की नफ़्सियात की स्टडी

माँ बच्चे की हरकतों और उसकी एक्टिविटीज़ पर नज़र रखे। इस तरह माँ को मालूम होता रहेगा कि बच्चे का क़द और वज़न पिछले माह के मुक़ाबले में कितना बढ़ा है? स्कूल के सब्जेक्ट्स में उसकी प्रोग्रेस क्या है? उसका पसंदीदा सब्जेक्ट कौन सा है? वह कौन सा फल पसन्द करता है? दोस्तों के साथ उसके कैसे रिलेशन हैं? फ़ालतू वक़्त में क्या करता है? सच तो ये है कि माँ के साथ बच्चे का रिलेशन

दोस्ताना होना चाहिए। बेहतरीन परवरिश के सिलसिले में बच्चे की उम्र के लिहाज़ से पैरेंटस को आपस में मशवरा ज़रूर करना चाहिए।

6- बच्चों की सेल्फ़-डिपेन्डेंट होना

हर बच्चा चाहता है कि लोग उसे अहमियत दें, अपने घर में भी हर चीज़ उसकी हो और वह अपने इस जज़्बे की वजह से मुश्किल से मुश्किल काम भी अंजाम दे लेता है। बच्चा जैसे-जैसे समझदार होता जाता है उसमें सेल्फ़-रिस्पेक्ट और खुददारी का एहसास बढ़ता जाता है। हर बच्चा अपनी पर्सनॉलिटी को दूसरों के सामने पेश करना चाहता है। इसलिए बच्चे की नेचरल ज़रूरतों को पूरा करने के लिए सही और अच्छा बर्ताव अपनाइए। बच्चे को न इतनी आज़ादी दे दीजिए कि बच्चा शर्म, हया और अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास न करे और न ही इतना दबा दीजिए कि वह अपने को सारे लोगों में सब से कम आंकने लगें, उसके अंदर सेल्फ़-कांफिडेंस कम हो जाए या बग़ावत पर उतार आए।

7- बच्चों की देखभाल और परवरिश

स्मझदार और तजुर्बेकार औरतें अपनी औलाद की परवरिश पर ध्यान देती हैं और उन्हें एक अच्छा इन्सान बनाने की कोशिश करती हैं। अगर आमदनी थोड़ी हो तो सिस्टमेटिक तरीक़े से घर चलाती हैं। बच्चों की सही एजूकेशन के लिए अंथक मेहनत करती हैं और उनको हर तरह से एक कामयाब इन्सान बनाना चाहती हैं। जहाँ माँ सारी कोशिशें परवरिश के लिए करती है वहीं उसे इस सख़्त काम के लिए ख़ुदा की मदद की भी ज़रूरत होती है।

8- बच्चों को ख़ुश रखने की फ़ज़ीलत

हुज़ूर नबी अकरम[स०] ने फ़रमाया, ''जन्नत में एक घर है जिसे खुशियों का घर कहा जाता है, उसमें वही लोग दाख़िल होंगे जो अपने बच्चों को खुश रखते हैं।''

इस से पता चलता है कि बच्चों को खुश रखना अल्लाह की रज़ामन्दी का सबब भी है। बच्चों को खुश रखने के कई तरीक़े हैं जैसे बच्चों के साथ कभी-कभार उनके खेलों में शरीक होना, उनकी जायज़ और नन्हीं ख़्वाहिशों को पूरा करना, उनके साथ अच्छे अख़लाक़ के साथ पेश आना, कभी-कभार कोई ऐसा जोक सुनाना जिस से वह खुश होकर बेइख़्तियार हंस पड़ें लेकिन ये ख़याल रहे कि मज़ाक़ में भी झूठ नहीं बोलना चाहिए। इसका सबक़ भी हमें रसूले अकरम[स०] की सीरते पाक से मिलता है कि आप से एक मर्तबा एक बूढ़ी औरत ने कहा कि मेरे लिए दुआ फ़रमा दीजिए कि मैं जन्नत में दाख़िल हो जाऊँ। आप ने फ़रमाया जन्नत में तो बूढ़ों का दाख़िला नहीं होगा। इस पर वह रोने लगी और आप मुस्कुरा पड़े। फिर फ़रमाया कि जन्नत में सब मर्द-औरत जवान होकर दाख़िल होंगे। अगर इस तरह का मज़ाक़ हो जिसमें न किसी का दिल दुखे और न झूठ शामिल हो तो बच्चे तहज़ीब के दायरे में रहते हुए हंसते मुस्कुराते परवान चढ़ाए जा सकते हैं।

याद रखिए! बच्चों की एजूकेशन महज़ बड़े स्कूलों में एड्मीशन दिलवा देने या सिर्फ़ अच्छा सिलेबस पढ़ा देना नहीं है। एजूकेशन मुहब्बत, हमदर्दी, सच्चाई, दूसरों की मदद और अदब-तहज़ीब सिखाने का नाम है।

9- बच्चों की परवरिश का मसनून तरीक़ा

हदीस की किताबों में आक़ा[स०] का बच्चों को परवरिश देने का एक वाक़िआ लिखा है।

राफ़े इब्ने अम्र ग़फ़्फ़ारी कहते हैं कि जब मैं बच्चा था तो अन्सार के खजूर के दरख़्तों पर पत्थर फेंका करता था। एक दिन अन्सार मुझे पकड़ कर रसूले करीम[स०] की ख़िदमत में ले गए। आप[स०] ने मुझ से फ़रमाया कि लड़के तुम खजूरों के पेड़ों पर पत्थर क्यों फेंकते हो? मैंने कहा कि खजूरें खाता हूँ। आपने कहा कि बेटे! पत्थर न फेंका करो बल्कि वहाँ जो खजूरें पेड़ के नीचे गिरी पड़ी हों उनको खा लिया करो। रसूले अकरम[स०] ने हमें अपनी सुन्नत के ज़रिए बात समझा दी यानी सब से पहले उसकी वजह पूछी, फिर बहुत प्यार के साथ नसीहत फ़रमाई। देखिए! बच्चे की खजूरें खाने के ख़्वाहिश भी पूरी हो गई और जो लोगों को तकलीफ़ थी कि उनके पेड़ों पर पत्थर पड़ते थे जिससे और खजूरें भी ख़राब होती थीं वह भी दूर हो गई।

10- अच्छे दोस्तों का चुनाव

रसूले अकरम[स०] ने फ़रमाया है, ''इन्सान अपने दोस्त के तरीक़े पर होता है। इसलिए तुम में से हर शख़्स ये देख ले कि वह किस से दोस्ती कर रहा है।

इसलिए माँ को चाहिए कि जब उसके बच्चे समझदार हो जाएं तो उनके लिए ऐसे नेक और समझदार साथियों का चुनाव करे जो ख़ुद भी नेक हों, अच्छे कैरेक्टर वाले हों, बुरी बातें और गाली गलौज न करते हों, पढ़ाई में तेज़ हों और इस्लामी टीचिंगस पर अमल करते हों।

11- बालिग़ बच्चों को शरई मसाएल की तालीम

हमारे समाज में बच्चों को शरई मसाएल की तालीम के सिलसिले में एक ख़ास मसला ये है कि माँ और बाप अपने बच्चों से शर्म और हया की वजह से ज़रूरी शरई मसाएल तक नहीं बता पाते। जबकि होना ये चाहिए कि जैसे ही माँ-बाप महसूस करें कि औलाद बालिग़ होने के क़रीब है और उसमें दीनी और शरई मसाएल को समझने की सलाहियत मौजूद है तो वह उन्हें वह सारी ज़रूरी बातें बताऐं जिसकी उन्हें ज़रूरत है बल्कि माँ-बाप का बर्ताव ही औलाद के साथ ऐसा होना चाहिए कि एक दोस्त की तरह बच्चे उनसे हर तरह की बात कर सकें।

آج ہی ممبر بنیے
زر سالانہ
Rs.150
دوماہی مؤمّل لکھنؤ
द्विमासिक मुअम्मल लखनऊ
MUAMMAL
उमदा तबाअत — عمدہ طباعت
आसान ज़बान — آسان زبان
क़ुर्आनी मालूमात — قرآنی معلومات
अख़्लाक़ी बातें — اخلاقی باتیں
आर्ट गैलरी — آرٹ گیلری
इस्लामिक पज़ल — اسلامک پزل
कामिक्स — کامکس
AL-MU'AMMAL CULTURAL FOUNDATION
546/203 Near Era's Lucknow Medical College Sarfarazganj, Hardoi Road, Lucknow-3 U.P. (India)
Phone No.: 0522-2405646, 9839459672, email: muammal@al-muammal.org

GENES का असर

सै. आले हाशिम रिज़वी
यूनिटी मिशन स्कूल, लखनऊ

हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०] ने फ़रमाया है कि अल्लाह जब किसी बच्चे को पैदा करने का इरादा करता है तो वह उसके माँ-बाप से लेकर हज़रत आदम[अ०] तक की तमाम शक्लों को इकट्ठा करता है और फिर उनमें से किसी एक शक्ल पर बच्चा पैदा करता है। इसलिए किसी भी माँ-बाप का यह कहना बिल्कुल सही नहीं है कि मेरे बच्चे की शक्ल हमारे ख़ानदान या बाप-दादा में किसी से नहीं मिलती।

इमाम की इस बात से साफ़ ज़ाहिर है कि जींस का असर पीढ़ी दर पीढ़ी होता रहता है यानि बच्चे की शक्लो सूरत ख़ानदान के मौजूदा लोग या गुज़र चुके किसी फ़र्द से भी मिलती-जुलती हो सकती है। इसी बारे में हज़रत अली[अ०] ने कुछ यूँ फ़रमाया है कि कोख के अंदर नुतफ़े आपस में मिलते हैं। इनमें से एक नुतफ़ा माँ का और दूसरा बाप का होता है। अगर माँ का नुतफ़ा ज़्यादा होता है तो बच्चे की शक्ल ननिहाल के लोगों पर जाती है और अगर बाप का नुतफ़ा ज़्यादा होता है तो बच्चा ददिहाल वालों पर जाता है। इमाम अली का यह क़ौल Genes Dominance की तरफ़ ही इशारा कर रहा है यानि जिसके Genes ज़्यादा असरदार होंगे बच्चा उसकी ही सूरत चुन लेगा।

इमाम हसन[अ०] ने इस बारे में फ़रमाया कि जब शौहर अपनी बीवी के साथ सुकून भरे दिलो दिमाग़ से जिस्मानी रिश्ता बनाता है तो उसका नुतफ़ा सुकून की हालत में क़रार पाता है। जिसकी वजह से उसमें माँ और बाप दोनों के Genes बराबर से असरदार होते हैं लेकिन बेचैनी के आलम में बना हुआ ताल्लुक़ नुतफ़े को भी बेचैन कर देता है। ऐसे में नुतफ़ा माँ या बाप किसी एक की रग पर गिरता है और उसी के Genes के असर उसमें साफ़ हो जाते हैं।

अब आइए! ज़रा इमामों के इन अक़वाल की रौशनी में मेडिकल साइंस की रिसर्च और थ्योरी पर नज़र डालें। यहाँ पर मैं 'मरयम' के पढ़ने वालों से एक बात साफ़ कर दूँ कि साइंस की कसौटी पर इस्लाम को परखना मुनासिब नहीं है बल्कि साइंस को इस्लाम की कसौटी पर परखना चाहिए। इसलिए इमाम के अक़वाल के बाद अब मैं साइंस की रिसर्च पेश कर रहा हूँ।

साइंस की एक ब्रांच है जिसे हम जेनेटिक्स कहते हैं। इसमें हम स्टडी करते हैं कि इंसानी नस्ल में कौन-कौन से असर आगे जाकर ज़ाहिर होंगे और कौन से ख़त्म हो जाएंगे। जेनेटिक्स साइंस के मुताबिक़ इंसान में किसी गुण जैसे बाल या आँखों का रंग, लम्बाई या बौनापन, ब्लडग्रुप, चेहरे की बनावट वग़ैरा नस्ल-दर-नस्ल Genes के ज़रिए ट्रांसफ़र होते हैं। दरअस्ल Gene जिस्म में पायी जाने वाली बहुत ही छोटी चीज़ होती है जो डी. एन.ए. से बनती है। यही DNA अगली पीढ़ियों में ट्रांसफ़र होता है और नतीजे में नस्ल में सिफ़तें रिपीट होती रहती हैं।

किसी भी मर्द या औरत में उनके Genes की दो कॉपियाँ होती हैं। जब यह Genes माँ-बाप से बच्चे में ट्रांसफ़र होते हैं तो जोड़े की एक कॉपी माँ से और दूसरी बाप से आती है। यह Genes आपस में इस तरह से मिल जाते हैं जैसे ताश की दो गड्डियों को आपस में मिला दिया जाए। मिसाल के तौर पर अगर बाप की आँखें नीली हैं तो उसमें मौजूद नीली आँखों के लिए Genes के जोड़े का एक मेम्बर बच्चे में आ जाएगा। इसी तरह अगर माँ की आँखें भूरी हैं तो उसके Gene के जोड़े में से एक बच्चे में आकर उसकी आँखें भूरी रखने का मैसेज देगा। अब अगर भूरी आँखों का Gene ज़्यादा असरदार हुआ तो बच्चे की आँखें भूरी हो जाएंगी और अगर नीली आँखों का Gene असरदार हुआ तो बच्चा नीली आँखें लेकर पैदा होगा। इसी तरह Genes का असर जिस्म की बनावट, ब्लडग्रुप या किसी मख़सूस अलामत में ज़ाहिर होती है।

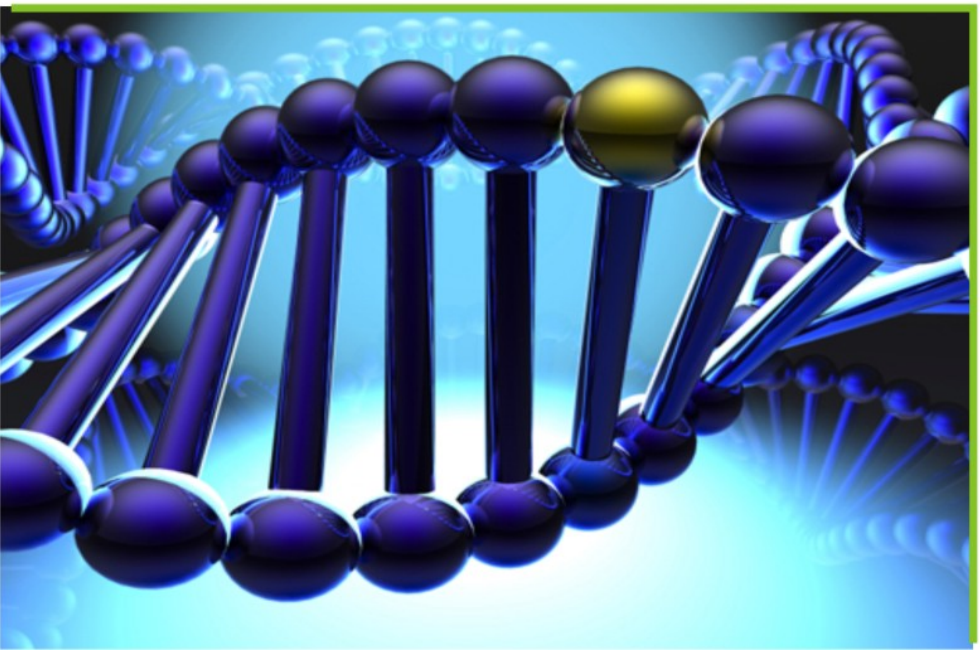

हमारे इमामों ने जिस ज़माने में Heredity और Genes Dominance यानी एक नस्ल की ख़ुसूसियतें या कमियाँ दूसरी नस्ल में ट्रासफ़र होने के सिस्टम पर अपने ख़यालों को पेश किया था, उस वक़्त Genes या DNA जैसे अलफ़ाज़ समझने वाला कोई नहीं था। दरअसल ऐसे अल्फ़ाज़ इस्तेमाल ही नहीं होते थे। इसलिए उन्होंने अपने अक़वाल में वही ज़बान और अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए जो आसानी से समझे जा सकें। अब साइंस वही बातें रिसर्च के बाद अपने अंदाज़ में हमें बता रही है बल्कि आप अगर ग़ौर करें तो मेरे इस मज़मून में इमामों की बतायी गयी कुछ बातें सांइस की रिसर्च से भी आगे की मालूम होती हैं।

मेरी माँ

■ सतवत ज़हरा सरोश

वह कैसी रहमत की घड़ियाँ थीं
जब मैंने आपका हाथ थाम कर पहला क़दम उठाया था!

मेरा बस नहीं चलता कि वक़्त के बहते पहिये को उलटा घुमाकर उस घड़ी की सूई को रोक दूँ जब मैंने पहली बार आपके मुझे छूने को महसूस किया। वह कैसा प्यारा लम्हा होगा जब आपने मेरे नन्हें वुजूद को अपने हाथों से उठाकर सीने से लगाया और अपने वुजूद की सारी मिठास मुझ में उतार दी होगी। वह कितने अनमोल लम्हे थे जब मैंने आप जैसी एहतेराम के लायक़ हस्ती के ज़रिए दुनिया की पहली और अनोखी ग़िज़ा अपने जिस्म में उतारी।

माँ! मुझे याद है जब मैंने ज़बान को हरकत देना शुरु किया था तो आपने मुझे "मामा" कहना सिखाया था। आपकी मेहरबानियों ने मुझे सब कुछ बोलना सिखा दिया था। उस रोज़ तो पहला हक़ सही मायनों में अदा हुआ जब आपने अपनी इस लाडली को 'अल्लाह एक' कहना सिखाया। वह कैसा मुबारक लम्हा था जब आप ने मुझे पहली बार मुहम्मद[ﷺ] व आले मुहम्मद[ﷺ] पर दुरूद पढ़ना सिखाया, वह कैसी रहमत की घड़ियाँ थीं जब मैंने आपका हाथ थाम कर बिस्मिल्लाह कह कर क़दम उठाया और ज़रा डगमगाई तो आपने "या अली[ﷺ]" कह कर संभलना सिखाया।

मैं कैसे भूलूँ जब आप मुझे एक मजलिस में लेकर गईं तो आयते ततहीर सुनकर मेरे सर पर आँचल उढ़वा दिया और फिर सारी ज़िंदगी उसे सर से ढुलकने न देने की हिदायत करती रहीं।

वह दिन मुझे अब भी याद हैं जब आप मुझे खुद स्कूल लेकर जाती थीं, वापस लातीं, खाना खिलातीं और लोरियाँ सुनाकर सुलाती थीं।

जब भी मेरी ज़बान पर कोई शिकवा-शिकायत आई, आपने फ़ौरन दूर कर दी। मेरी मासूम बातों की तकरार को सराहा, मेरी शरारतों पर कभी हंसीं और कभी डाँटा, हालांकि मैं देखती थी कि अकसर लड़कियाँ शरारत पर घर में रूई की तरह धुनक दी जाती थीं मगर माँ! आपके हाथ कितने मेहरबान थे, ये जब भी मेरे सर पर होते मुझे इतमिनान हासिल हो जाता था।

मेरी हल्की सी तकलीफ़ भी आपको बेक़रार व बेकल कर देती थी। आप मेरी बलाएं लेते नहीं थकती थीं, मेरे सदक़े उतारती रहती थीं, मेरे हाथों से ख़ैरात दिलवाती थीं और फिर मुहब्बत से मेरी पेशानी चूमा करती थीं।

मेरा क़द जब ज़रा बढ़ा तो आपने तहज़ीब, आदाब व सलीक़ा सिखाने की यूँ ठानी कि मुझे लगा कि मेरी उस्ताद, मेरी दोस्त, मेरी हमजोली, मेरी रहनुमा सब ही कुछ आप हैं।

हाँ! मुझे याद है वह दिन जब आप ने खुद खड़े होकर मुझे खीर बनाना सिखाई और मेज़ पर रख कर बड़े फ़ख़्र से सबको बताया था कि *आज तो मेरी बेटी ने अपने हाथों से खीर बनाई है।*

भाई ने बुरा सा मुँह बनाकर कहा था, "क्या चीनी ख़त्म हो गई है?" शकर वाक़ई कम थी मगर आपने बड़े प्यार से मेरे हाथ सहलाकर कहा था, "इन हाथों में ज़ायक़ा और मिठास दोनों ही ख़ूब हैं फ़ालतू तंग न करो"।

अक्सर मुझे ज़रा सुस्ती हो जाती और काहिली से स्कूल जाने से इंकार कर देती तो आप प्यार से समझातीं और मेरे बालों में उंगलियाँ फेरते हुए नाना जान की क़ाबिलियत के बारे में बतातीं, अपने स्कूल का क़िस्सा सुनाने लगतीं, फिर जाने क्या होता कि मेरी सारी सुस्ती रफ़ूचक्कर हो जाती और मैं "उठ, बाँध कमर! क्या डरती है" का नारा मार कर स्कूल की राह ले लेती थी।

सबक़ याद नहीं होता था तो आप अपनी नर्म उंगलियों से मेरे सर पर तेल की मालिश करती थीं। जब मैं रिपोर्ट कार्ड लेकर आती थी तो मिठाई का डिब्बा पहले से मौजूद होता था। लोग जब मिठाई और ख़बर सुनते तो आपको मुबारकबाद देने ज़रूर आते थे।

आप मुझे अपने सीने से लिपटा लेती थीं और कहती थीं, "ये तो सारी इसकी अपनी मेहनत है। देखा! मेहनत का सिला कैसा होता है"।

जब ज़िंदगी का रुख़ बदलने का वक़्त आया तो आपने खुद सब से पहले मेरी रहनुमाई की। पाकी व तहारत के आदाब सिखलाए। हाँ! वह बहुत कठिन और क़यामत भरा लम्हा था जब मुझे मालूम हुआ कि बस अब जुदाई का वक़्त है। मैं रुख़सत हुई उस गुलशन से जिसकी माली ने कभी मुझे धूप में भी निकलने न दिया था।

उस वक़्त आप ही ने अपनी ज़ात से जुदाई पर सब्र करना सिखाया था मगर अब कैसे सब्र करूँ कि आज आपका मुहब्बत भरा हाथ मेरे सार से उठ गया है। आज आपने वही कपड़े पहन लिए हैं जो हज पर जाते के वक़्त पहने थे।

उस वक़्त आपके क़दमों में हरकत थी, आपके हाथों की गर्मी मेरे हाथों में थी, आपके होंटों पर अल्लाह का ज़िक्र था मगर अब न आपके क़दमों में हरकत है न हाथों में गर्मी। अब ये हाथ जज़्बों से ख़ाली हैं, आपके होंट ख़ामोश हैं जैसे 'ला-इला-ह इल लल्लाह मुहम्मदुर रसूलुल्लाह' कहते-कहते बंद हो गए हों।

माँ! वाक़ई आप मेरे लिए नेमतों का ख़ज़ाना थीं मगर आज मैं तन्हा हूँ। ऐ माँ! तेरी पाकी के क़ुर्बान, तेरे ख़ुलूस के निसार, मुझे ज़िंदगी की राह पर चलना सिखाने वाली! लड़खड़ाते क़दमों को संभालने वाली! थपक-थपक कर सुलाने वाली! ख़ुशी में ख़ुशियाँ दोबाला करने वाली और ग़मों में ग़म बांटने वाली माँ! मेरा हर जज़्बा तेरा क़र्ज़दार है और हर लफ़्ज़ तेरी अता। यहाँ तक कि ये आँसू भी तेरी ही देन हैं।

ऐ ख़ुदा! तेरी ज़ात मेरी माँ से भी बढ़कर मेरी हमदर्द है। ऐ मौला! मेरी माँ पर इस से भी बढ़कर मेहरबानी करना जितना वह मुझ पर मेहरबान थीं और उन्हें अपनी रहमत के दरबार से मालामाल कर देना! माँ को ख़ुशहाल कर देना! माँ को सुकून दे देना! माँ को आराम दे देना...!

इतनी बड़ी नेमत

ख़ुदा जो नेमतें हमें बे मांगे देता रहता है उनकी अहमियत और फ़ायदों पर न हम ग़ौर करते हैं और न उनका शुक्रिया अदा करना ज़रूरी समझते हैं। ऐसी बेशुमार नेमतों में से एक नेमत है हमारा तीन वक़्त का खाना। रोज़ी देना अल्लाह का वादा है। इसीलिए लाखों दुनियावी रुकावटों के बाद भी ये रोज़ी बंदे तक पहुँचती ही रहती है।

दुनिया के कई इलाक़ों में लोग भूके भी सोते हैं। इसकी वजह ज़मीन पर इंसानों की वक़्ती हुकूमत है। ये भूके सोने वाले लोग भी ख़ुदा के 'रब' होने से किसी न किसी तरह फ़ायदा ज़रूर उठाते रहते हैं और साथ-साथ ये लोग पेट भर कर खाने वालों के लिए नसीहत भी बनते हैं। इन ढांचेनुमा इंसानों को देखकर हमें इस खाने की अहमियत का अंदाज़ा होना चाहिए जो हमें रोज़ाना वक़्त पर मेज़ पर सजा हुआ मिलता है।

हमारा खाना अल्लाह की बेशुमार नेमतें हैं। अगर हम अपने एक सादा से खाने पर भी ग़ौर करने बैठें तो इसके लिए बहुत वक़्त चाहिए। सिर्फ़ रोटी के बारे में एक सरसरी सी नज़र डालने से हमें अंदाज़ा होगा कि गेंहूँ के बीज से लेकर रोटी के हमारे सामने दस्तरख़्वान पर पहुँचने के बीच बेशुमार इंसान, मशीनें, जानवर, परिंदे वग़ैरा अपना-अपना फ़र्ज़ पूरा करते हैं जैसे बीज का मिलना, उसके बढ़ने की ताक़त, किसान और उसकी मेहनत, ज़मीन का होना और मिट्टी का उपजाउ होना, जानवर, खेती के औज़ार, खाद, पानी, धूप, हवा, ज़मीन के अंदर खरबों खरब बेक्टीरिया, केमिकल्स और गैसें, कीड़ों और परिंदों से बचाव के इंतेज़ाम, मौसमों का बराबर रहना, ज़मीनी रास्ते, मंडियाँ, आढ़ती, क़ीमतों का सिस्टम, आटे की मिलें, मज़दूर, थोक कारोबारी, परचून की दुकानें, हमारी ख़रीदो फ़रोख़्त...

इन सभी में बेशुमार इंसानों की मेहनत, सलाहियत और कोशिश शामिल होती है जैसे किसान और उसके घर वाले, खेती के औज़ार, खाद और दवाएं बनाने वाली फैक्ट्रियों में काम करने वाले, खेती की रिसर्च से जुड़े साइंटिस्ट, नहरों का सिस्टम, सरकारी मुलाज़िम, फ़सलों की कटाई करने वाले मर्द, औरतें और बच्चे, मंडियों के कारोबारी, आढ़ती, मिलों के मज़दूर, ट्रेक्टरों, ट्रकों, रेलों, बैलगाड़ियों को चलाने वाले, परचून की दुकान वाले, घरों के कमाने वाले, ईंधन (गैस) से जुड़े लोग, पेड़ लगाने वाले, कोल्हू बनाने वाले, रोटियाँ पकाने वालियाँ...

खलिहानों में हमारे हिस्से की इस रोज़ी को बचाने के लिए कितने ही दूसरे जानदार अपनी डयूटी अंजाम देते हैं और हमें उनके बारे में जानकारी ही नहीं होती। बहुत सी फ़सलों पर अकसर कीड़े-मकोड़े, टिड्डियाँ वग़ैरा हमले करते हैं। इन हमला करने वालों से फ़सलों को बचाने के लिए तरह-तरह की छोटी-छोटी चिड़ियाँ सुबह से शाम तक खेतों पर उड़ती रहती हैं और रेंगने वाले कीड़े-मकोड़ों को देखते ही हलाक कर देती हैं। ये कीड़े-मकोड़े इन चिड़ियों की ग़िज़ा होते हैं। बहुत से इलाक़ों में गोश्त खाने वाले परिंदे, जैसे दिन के वक़्त चील और बाज़ और रात के अंधेरे में उल्लू और चमगादड़ें वग़ैरा खेतों पर नीची उड़ानें करते रहते हैं और चूहों को देखते ही उनका ख़ात्मा कर देते हैं।

रोटी के हिस्से, कैलोरीज, ग्लूकोज़, प्रोटीन और इंसानी जिस्म में इन हिस्सों के अलग-अलग काम, नतीजे और होने वाले फ़ाएदे.....ये बहुत बड़े सब्जेक्ट्स हैं इन पर बातचीत करना किसी एक्सपर्ट ही के लिए अच्छा है। एक्सपर्ट ही बता सकता है कि एक

रोटी किन नेमतों से मिलकर बनती है। कौन सा हिस्सा ख़ून बनाता है, कौन सा हड्डियों का गूदा तैयार करता है, कौन सा हिस्सा हमारी खाल को बनाता है, कौन से हिस्से हैं जो हमारे लाल और सफ़ेद सेल्स बनाने वाले पेचीदा सिस्टम को बाक़ी रखने में मदद देते हैं, किन हिस्सों की वजह से हमारे हाथ-पांव हिलने-जुलने के क़ाबिल होते हैं और कौन से हिस्से हमारी आँखों को अंधेरे में देखने के क़ाबिल बनाते हैं! फिर कोई साईंटिस्ट ही ये बात बता सकता है कि रोटी के अंदर ये नायाब हिस्से कहाँ से आते हैं, ज़मीन जिसे हम हर वक़्त अपने क़दमों से रौंदते रहते हैं ख़ुद उसके दामन में ज़िंदगी के ये ख़ज़ाने कहाँ से आए हैं, किन केमिकल्स, गैसों, माइक्रोब्स ने ज़मीन का दामन इन ख़ज़ानों से भर दिया है।

ख़ुलासा ये कि इस रोटी को जुटाने के लिए ख़ुदा के इंतेज़ामों की एक मामूली सी झलक ही हम देख सकते हैं। इन तफ़सीलों में जाना तो दूर हम तो इतना भी ग़ौर नहीं करते कि हमसे सैकड़ों मील दूर एक अनदेखी, अनजानी जगह गेहूँ की एक नाज़ुक सी कोंपल अपने वज़न से कई गुना ज़्यादा वज़नी मिट्टी को हटाते हुए ज़मीन का सीना चीरकर बाहर कैसे आती है और फिर जल्द ही पौधे की जड़ें मज़बूत और उसकी बालियाँ दानों से भर जाती हैं। फिर उनमें से हमारी क़िस्मत का दाना-दाना तमाम रास्ते तैय करता हुआ आख़िरकार हमारे घर तक पहुँच जाता है। इस आटे को पकी हुई रोटी बनाने के लिए सूखी ज़मीनों में छुपा हुआ ईंधन ज़मीन की हज़ारों फिट गहराईयों से निकलता है और सैकड़ों मील का सफ़र तैय करके हमारे चूल्हों तक पहुँचता है और पकी हुई रोटी हमारे दस्तरख़्वान पर आसानी से हमें मिल जाती है।

बहुत से मामले तो आंख़ों से देखे जाने वाले हैं जो हमें नज़र आते हैं जबकि इस सिलसिले में बेशुमार अनदेखी ताक़तें हैं जो ख़ामोशी के साथ अपना-अपना रोल निभाती रहती हैं। ये ख़ुदा का इंतिज़ाम ही है जो आंधियों, तूफ़ानों, बारिशों, सैलाबों और टिड्डी दल से हमारी फ़सलों की हिफ़ाज़त करता है। यही ख़ुदा की ताक़तें ज़मीन की ज़रख़ेज़ी और गेहूँ की एक-एक बाली में पैदा होने वाले दाने-दाने का हिसाब-किताब रखती हैं।

आपने देखा, अगर हम अल्लाह की एक नेमत पर भी ग़ौर करना शुरु करें तो बातचीत को समेटना कितना मुश्किल होता है। हक़ीक़त ये है कि अल्लाह तआला की हर नेमत ऐसी ही है कि उसकी तारीफ़ करते वक़्त बड़ों-बड़ों की ज़बानें बंद और बड़े-बड़े इल्म वालों की ज़हनी ताक़तें जवाब दे जाती हैं, हम जैसे आम लोगों की तो हैसियत ही क्या है!

इन सब बातों से मक़सद सिर्फ़ इतना है कि जब रोटी हमारे सामने आए तो हम उसकी अहमियत को समझें और क़द्र करें कि जो रोटी इतनी आसानी से हमें हासिल हो गई वह किन स्टेजेस से गुज़रकर और अल्लाह तआला की मेहरबानी से हम तक पहुँची है। ये रोटी जिसे खाकर हम अक्सर ज़बानी भी शुक्र अदा नहीं करते, दुनिया के सूखा पड़ने वाले इलाकों में इस एक रोटी की क़ीमत इंसानी जान बल्कि कई इंसानी जानों के बराबर हो सकती है। फ़ाक़ा करने वाले लोग इस रोटी के लिए अपनी औलाद तक को बेच डालते हैं। ऐसी नायाब और बेशुमार रोटियाँ नाक़दरी की वजह से हमारे घरों में सड़ जाती हैं या ज़्यादा से ज़्यादा भूसी वालों को दे दी जाती हैं।

क्या अल्लाह तआला इस बात का हक़ नहीं रखता कि जब वह हमें पेट भर कर खाना खिलाए तो हम सच्चे दिल से *'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन'* कहें।

मज़हब से हटकर, हमारा तो ये अख़लाक़ी फ़र्ज़ भी है। हम ऑफ़िस में बराबर बैठे साथी से एक पेन मांगते हैं और जब वह हमें देता है तो हम पेन लेते वक़्त कहते हैं, 'थैंक यू'।

क्या वह काएनात का मालिक जो दुनिया की अनगिनत और नायाब नेमतें हमें बे मांगे देता रहता है, हमारी 'थैंक यू' का हक़दार नहीं है!

ख़ुदा तो इस बात का हक़दार है कि हमारी हर सांस, हमारे दिल की हर धड़कन, हर लम्हा, हर घड़ी कहती रहे, 'थैंक यू...थैंक यू...थैंक यू! ऐ ख़ुदा तेरा शुक्र है! तेरा बेपनाह शुक्र है!" इसलिए कि हमारी हर सांस उसकी दी हुई है और हमारे दिल की हर धड़कन उसकी एक नेमत है। जिस लम्हे हमारी धड़कन रुकेगी उसी लम्हे हमारा वुजूद गोश्त और हड्डियों के दफ़नाए जाने वाले ढेर में बदल जाएगा।

हमें बचपन से सिखाया जाता है कि खाना शुरु करने से पहले *'बिस्मिल्लाह'* कहो और खाना खा चुकने के बाद *'अल-हम्दुलिल्लाह'* कहो लेकिन हम बड़े होने के बाद ये बातें भूल जाते हैं और अपने बच्चों को इनकी नसीहत करना शुरु कर देते हैं। शायद इसकी वजह हमारी बिज़ी लाइफ़ हो कि हम अक्सर इतनी जल्दी में खाना खाते हैं कि हमें मालूम ही नहीं होता कि क्या खाया है या शायद इसकी वजह शैतान हो जो हमें शुक्र अदा करने के फ़र्ज़ से महरूम रखना चाहता है। वजह कोई भी हो हमें इसको दूर करना चाहिए...।

इसकी एक तरकीब ये है हम जहाँ बैठ कर खाना खाते हैं वहाँ साफ़-साफ़ लिखकर दीवार पर लगा दें: *'बिस्मिल्लाहिर रहमानिर्रहीम... अल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल आलमीन'* यानी शुरु करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा मेहरबान और निहायत रहम करने वाला है...सारी तारीफ़ें अल्लाह ही के लिए हैं जो सारे जहानों का पालने वाला है।

ताकि जब भी इन अलफ़ाज़ पर हमारी नज़र पड़े, ये अलफ़ाज़ हमारी ज़बान से अदा हो जाएं और अल्लाह तौफ़ीक़ दे तो फ़ुरसत के लम्हों में इन मुबारक लफ़्ज़ों को दिल की गहराईयों से भी कहने को जी चाहे... ●

17
Rabi-ul-Awwal
रसूले इस्लाम (स0)
और
इमाम जाफ़र सादिक़ (अ0)
की विलादत पर
हम आप सब को
दिली मुबारकबाद
पेश करते हैं!

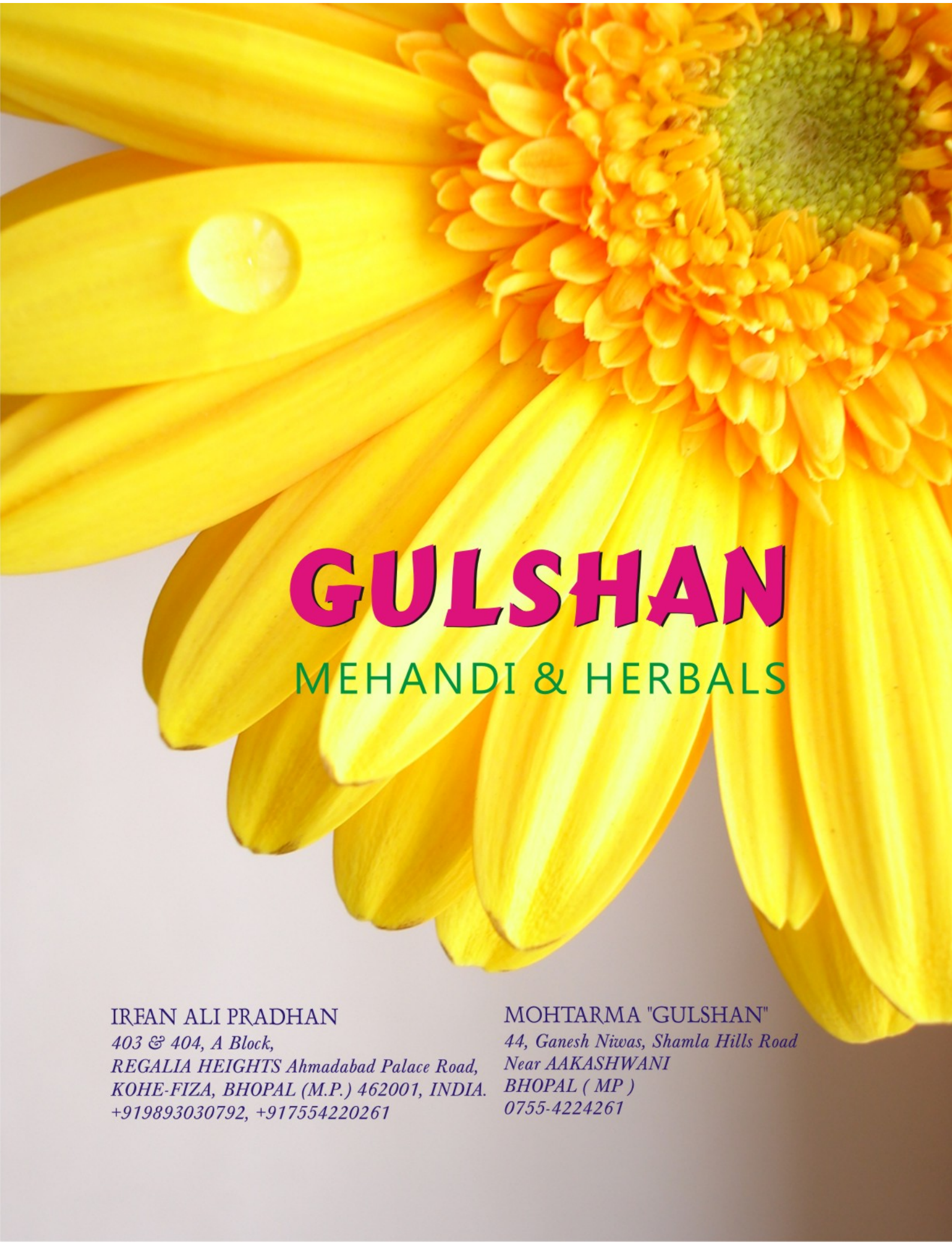

IRFAN ALI PRADHAN
403 & 404, A Block,
REGALIA HEIGHTS Ahmadabad Palace Road,
KOHE-FIZA, BHOPAL (M.P.) 462001, INDIA.
+919893030792, +917554220261

MOHTARMA "GULSHAN"
44, Ganesh Niwas, Shamla Hills Road
Near AAKASHWANI
BHOPAL (MP)
0755-4224261